इसके अन्तर्गत छः मचकियां हैं—

प्रथम मचकी— इसमें उपदेश, विनय और ज्ञानरसात्मक भजन दियेगये हैं।

द्वितीय मचकी— इसमें प्रेम, शृंगार और विरहरसात्मक भजन दियेगये हैं।

तृतीय मचकी— इसमें प्रेमपीयूष अर्थात् प्रेमके भेद और उनके लक्षण, एवं रसोंके व्याख्यान सहित दोहा और कवित्तोंमें कथन कियेगये हैं जिनके पढनेसे भगवच्चरणानुरागियोंके हृदयमें प्रेमकी वृद्धि अवश्य होवेगी।

चतुर्थ मचकी— इसमें भगवान्‌की नख-शिख शोभाका वर्णन सवैयामें कियागया है।

पंचम मचकी— इसमें फारसी और उर्दूके पद्य अंकित कियेगये हैं। जिसे मुसलमान भी अपने हाल कालके समय कव्वालीमें गान करसकते हैं।

षष्ठम मचकी— इसमें अंग्रेजी काव्य (Poetical Composition) हैं जो भजनके स्वरूपमें दियेगये हैं।

श्री १०८ स्वामी हंसस्वरूपजी महाराज।

॥ तत्सद्ब्रह्मणे नमः ॥

हंसहिंडोल ।

पहिली मचकी ।

(उपदेश, विनय और ज्ञान)

इन्द्रवंशा

तस्यैव भासा सुविभाति भास्कर-
स्तस्यैव भासा हुतभुग्विभासते ।
तस्यैव भासा निशि राजते शशी
तस्यैव भासा चपलाश्चकासति ॥ १ ॥

वसंततिलका

मन्दारमल्लिमकरन्दसुलुब्धभृङ्गाः
प्रोत्कण्ठिताः सुमुदिरध्वनिभिर्मयूराः ।
वीणारवेण विगताक्रियगन्धवाहा
माद्यन्ति वेणुरणितेन +वलेन भक्ताः ॥ २ ॥

+ वलदेवेन । कृष्णाग्रजेन । वलवीरेण । हलधरेण ।

केयूर चुम्बितमनोहरबाहुयुग्मं
यच्चार्पितं भवति कण्ठतटे स्वमातुः ।
दुःखं विनाशयति संयतशृङ्खलायाः
जाने कदा तदिह माल्यति हंसकण्ठे ॥ ३ ॥

रेखां ललाटपटले हरिचन्दनीया-
मालोक्य भानुकिरणा लघुतां प्रयाताः ।
तिष्ठन्ति नैव धरणौ निवसन्ति दूरे
गच्छन्ति रात्रिसमये वितले तले ते ॥ ४ ॥

शिखरणी

विराजन्ते केशा जगदधिपतेर्बाहुयुगले
यथा भृङ्गा अम्भोरुहसुभगनालेषु लसिताः ।
कपोलस्वेदांस्तानतिनिपुणमास्वाद्य च निजाम्
प्रतीहासस्यैकावलय इति शंसन्ति नियतिम् ॥ ५

वसन्ततिलका

हे ! हे ! सखे मदनमोहन चारुलीला
वृन्दावने रविसुतापुलिने सुरम्ये ।
गोपीसमूहकलिता ललिताविशाखा
वादित्रवृन्दलसिता मुदमातनोतु ॥ ६ ॥

मुक्तो येन गजेन्द्र आशु जलधौ ग्राहाननाद्धीषणाद्
येनाधारि कनिष्ठिकां गिरिवरो गोवर्द्धनो गोकुले ।
नद्धो येन करालदंष्ट्रभुजगः सूर्यात्मजाया जले
तेनैवातकरेण नाथ ! कृपया हंसस्य दोर्गृह्यताम् ॥ ७

हिंडोले नाम्के तुम झूलहु सन्त सुजान॥ ध्रुव०

धर्ममोक्षके खम्भ दाहिने बांयें अर्थ अरु काम।
रत्नजटित ये चारों खम्भे झूलत अतिहि ललाम॥
हिंडोले० ॥१॥

र. अ. म. त्रिविध समीर वह शीतल मन्द सुगन्ध।
झूलत ही *त्रय-ताप नशावत मेटत संसृतिबन्ध॥
हिंडोले० ॥२॥

×परा, प्रेमाकी पडति मचकियां पटली भक्ति लगी।
उमडत नेह मेह अति सुन्दर स्वाती प्रीति पगी॥
हिंडोले० ॥३॥

+त्रिविधमन्त्रजप भक्तनमुख जनु सारँग *सारँग बोल
श्री बलवीरचरणरज शिर धरि विरचत हंसहिंडोल॥
हिंडोले० ॥४॥

---

* आध्यात्मिक। आधिभौतिक। आधिदैविक।

× भक्तिके दो भेद हैं परा और प्रेमा। प्रमाण— सा परानुरक्तिरीश्वरे।

सम्यमसृणितस्वान्तो ममत्वातिशयांकितः।
भावः स एव सान्द्रात्मा बुधैः प्रेमा निगद्यते॥

+वाचिक, उपांशु और मानस। * मोरे, राग।

जगतहिंडोलने देखो झूलत सकल जहान । ध्रुव

तैंतिस कोटि तीन तहँ झूलत झूलत रवि अरु चन्द ।
योगी जपी तपी सन्न्यासी झूलत मन्दे मन्द ॥
जगत० ॥ १ ॥

ब्रह्मलोक ब्रह्मा दै मचकी शेष देत पाताल ।
पांच पुरुष मायाकी पटली पकडि झुलावत काल ॥
जगत० ॥ २ ॥

चार खानिके चार खम्भ हैं लख-चौरासी झूल ।
छिन नीचे छिन ऊपर जावें कर्म शुभाशुभ मूल ॥
जगत० ॥ ३ ॥

यह झूला स्थिर नहिं कबहूं उत्पति नाश झकोर ।
हंस प्रेमका झूला झूले संगी नन्दकिशोर ॥
जगत० ॥ ४ ॥

प्रभु मैं तीन तापते तायो । ध्रुव

आत्मिक दैविक भौतिक मिलि मोहि भूनि कबाब बनायो ।
प्रभु मैं० ॥ १ ॥

अहंकार अति तीव्र अनलमहँ ईंधन कर्म लगायो ।
चिन्ता-तई चढी चित-चूल्हे लोभ-लहर लहकायो ॥
प्रभु मैं० ॥ २ ॥

मोह-घृत ममताकी मिरची काम-कपूर मिलायो।
क्रोधको कोयलो छिन-छिन दै कै अधिक-अधिक डहकायो॥
प्रभु मैं० ॥ ३ ॥
काल कलेवा करण ताहिको मुख फैलाये धायो।
त्राहि-त्राहि प्रभु मोहि बचाओ हंस शरण चलि आयो॥
प्रभु० मैं० ॥ ४ ॥

माधव! मो समान मतिहीनो। ध्रुव
हुयेउ न कबहूँ होनिहु नाहिन अघसागरको मीनो।
माधव० ॥ १ ॥
पतितनमें सरदार जानिये दीननमें अति दीनो।
परमारथको पन्थ न जानेउँ स्वारथमें नित लीनो॥
माधव० ॥ २ ॥
पर अघ सुनेउँ सहस-दस कानन पर अपयश मुख कीनो।
परकी फुली निरेखि मन हरषेउ निज टेटर नहिं चीन्हों॥
माधव० ॥ ३ ॥
स्थिर ह्वै हरिनाम न लीनो संगत चित्त न दीनो।
निशि-वासर अरु छिन-छिन पल-पल रहेउँ विषयरस-भीनो॥ माधव० ॥ ४ ॥

कलिमल-ग्रसित +धर्मध्वज ❀धन्धक अन्तर महामलीनो।
हंसस्वरूप तरै तो जानिय तारनहार प्रवीनो॥
माधव०॥ ५॥

—❀—
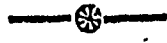
भवसिन्धुके खेवैया मेरी नैया लगा किनारे॥ ध्रुव
मस्तूल कटगयो है अरु पाल फटगयो है।
करवार करसे छुटेउ पतवार बीच टुटेउ॥ भव०॥ १॥
है रैन यह अँधारी उमडी घटा है कारी।
तूफान देखूँ भारी अब जानो तुम मुरारि॥ भव०॥ २॥
भयके भँवरमें पटकी मझ धार नाव अटकी।
केवट न दूजा कोई तुम विन हमारा होई॥ भव०॥ ३॥
अब तीर तुम लगादो भव-भीरको भगादो।
सब मेटदो झमेला यह हंस है अकेला॥ भव०॥ ४॥

—❀—

कृपासिन्धु सुखनिधान दीननदुख-हरण जान शरण आयउ तेरी। ध्रुव
बूडत भवनिधि गँभीर देखि दया लागि दियो मानुष-शरीर पार उतरनकी बेरी॥ कृपा०॥ १॥

+ धर्मध्वज=पाखण्डी।
❀ धन्धक= गाडी वा उसकी धुरी।

सूझत नहिं वार पार तुमहि एक कर्णधार नैया लगाओ पार करहु नाहिं देरी॥ कृपा० ॥ २ ॥
हंसस्वरूप रंक तोहि एक भूप जानै, लीजिये समय विचारि राखि लाज मेरी॥ कृपा० ॥ ३ ॥

—❀—
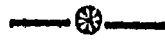
*माधवपद-कंज मधुप हो रहिये ॥ ध्रु० ॥
मधुर-मधुर रस पीजे छिन-छिन हियते दृढ करि गहिये ॥ माधव० १ ॥
जेहि परसे मुनि-नारि तरी अरु बही जहांते गंग।
जेहि अवतरे तरे भालु कपि जेहि परसि तरे सरभंग। माधव० ॥ २ ॥
जो पद पडेउ पीठ बलि राजा जेहि ध्यावैं सन्त सुजान।
जेहिपद परसे अवधनिवासिन स्वर्गहि किय पयान॥ माधव० ॥ ३ ॥
जेहि पद कहँ निज जटा छुआयो नन्दभवन शिव आय।

---

* इस भजनको मालकौशमें गाना चाहिये।

सरभंग=ऋषिका नाम है जिन्होंने वनवासमें श्री रघुकुल-मणिका दर्शन करके उनके मुखारविन्दका रस पान करते-करते अपना शरीर छोडदिया। (तुलसीकृत रामायण)

जेहि पद धोयन पिये निषादा कुल समेत तरिजाय ॥
माधव० ॥ ४ ॥
हंसस्वरूप ढूँढ सोई पद, कर सोई पद प्रीत ।
निशि-वासर सेवहु सोई पद, सोइ पद तेरो मीत ॥
माधव० ॥ ५ ॥

—⊛—

माधव हरत न क्यों भवभीरो ॥ ध्रुव ॥
भवनिधि अति गँभीर थाह नहिं, सूझत नहिं कहुं तीरो ॥
माधव हरत० ॥ १ ॥
औघट घटिया भूलि परेउ नहिं नाव न खेवनहार ।
नदिया उलटी धार बहतु है ⊛ भाठा ह्वैगयो सीरो ।
माधव हरत० ॥ २ ॥
झंझट झक्कर भूमि झकोरत केहिविधि उतरूं पार ।
आरत पार करैया तुमही वेदन देत लकीरो ॥
माधव हरत० ॥ ३ ॥
गणिका गिद्ध अजामिल शवरी गोपिन पार उतारेउ ।
हंसस्वरूप किनारे छाडेउ काह भई तकसीरो ।
माधव हरत० ॥ ४ ॥

⊛ भाठा=ठेठ हिन्दीमें सागर वा सरिताके उतारको कहते हैं और सीरा चढावको कहते हैं ।

हरि हरि क्यों न रटत रे मूढ ॥ ध्रुव ॥
हरिहिं रटे तेरो काज सरैगो सुनले बतियां गूढ ॥
हरि हरि० ॥ १ ॥
नारद रटेउ, रटेउ सनकादिक और रटेउ प्रह्लाद ।
वाल्मीक उलटी रट लाई सोइ रट अनहद नाद ॥
हरि हरि० ॥ २ ॥
स्वाती हित जस रटत पपीहा मोर रटत घन घोर ।
ऐसी रट जो रटै दिवस-निशि तेहिं रट नन्दकिशोर ॥
हरि हरि० ॥ ३ ॥
चारों वेद रटत जेहिं थाके नेति-नेति कर गान ।
पुनि-पुनि रटत पुराण अष्ट-दश बहुविधि करत बखान ॥
हरि हरि० ॥ ४ ॥
हंसस्वरूप रटहु चितलाई रटि दिन करहु बितीत ।
रोम २ को छूट विकारो रसना होत पुनीत ॥
हरि हरि० ॥ ५ ॥

—❀—
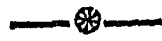
माधव अब थकिगे सब अंग ॥ ध्रुव ॥
चलत २ थाकीं दुहु पैयां करत २ दोउ हाथ ।
चिन्ता करत चित्त अरु देवी देव नवावत माथ ॥
माधव० ॥ १ ॥

बिना प्रेम मन्थन हतु सन्तो मिथ्या सकल मथान ॥

अलख० ॥ ३ ॥

लिये विचार मथनियां कोऊ मथि रह साँझ बिहान ।
तपी तपस्या काया मथिया, मथि २ कियो पयान ॥

अलख० ॥ ४ ॥

देवन मथेउ छीरसागर, कछोन्हेउ अमृत पान ।
हंसस्वरूप मथे क्यों इत उत नाम मथहु नादान ॥

अलख० ॥ ५ ॥
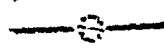
माया बैडी तेरी धार ॥ ध्रु० ॥

जेहिं देखूँ सो बह्यो जात है सकतन लहर संभार ।

माया० ॥ १ ॥

लख चौरासी डुब रहे जहँ देवन तैंतिस कोटि ।
और अनेकन ऊबे डुबे कहँ लगि करूँ शुमार ॥

माया० ॥ २ ॥

राजा डूबे रंगमहलमें रोटी डुबे रंक ।
चक चकाई चन्दा सँग डूबे पैसे डुब गँवार ॥

माया० ॥ ३ ॥

ज्ञानी कितनो यत्न करी अरु साधी योग समाधि ।

पै जबलौं हरि रीझै नाहिंन तबलौं नाहिं उबार ॥
माया० ॥ ४ ॥
हंसस्वरूप हरि-पद जो डूबै मोती नाम लहे ।
अर्थ धर्म कामादिक पावै छूटैं सकल विकार ॥
माया० ॥ ५ ॥

—❁—

हरि-हरि कहत बिताओ समैया ॥ ध्रुव ॥
भक्तनको हरि ऐसे पालत बछवा पालत है जस गैया ।
हरि हरि० ॥ १ ॥
हरिपद रस अस मीठो जानो बालक जानत जैसे मिठैया ।
हरि हरि० ॥ २ ॥
एक दिन काल पकडि लै जैहै जस चुहिया लैजात बिलैया ।
हरि हरि० ॥ ३ ॥
हंसस्वरूप चेत करु प्यारे मुखते कहु नित कुंअर कन्हैया ।
हरि हरि० ॥ ४ ॥

—❁—
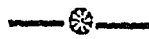
तेरा प्यारा तेरे संग तू हेरे क्या बन २ में रे ॥ ध्रुव ॥
ले उठा परदा दुईका देख इक चितवनमें रे ।
तेरा प्यारा० ॥ १ ॥

होवे हिन्दू या मुसलमां होवे ईसाई यहूद।
रमरहा घट २ में प्यारा छुपरहा सब तनमें रे।
तेरा प्यारा० ॥ २ ॥

हर पातमें हर डालमें हर फलमें वह हर फूलमें।
हर गुन्चेमें गुन्चादहन हर खेलमें हर फनमें रे।
तेरा प्यारा० ॥ ३ ॥

⊛ अब्रमें धमका कहीं और × बर्कमें चमका कहीं।
मारा कहीं हारा कहीं जीता कहीं है रणमें रे।
तेरा प्यारा० ॥ ४ ॥

ज़ाहिर ओ बातिनको करले एक रँग हंसस्वरूप।
ले बसा दिलबरको अपने दिलके तू + मसकनमें रे।
तेरा प्यारा० ॥ ५ ॥

—⊛—
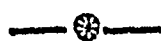
केशव तुम कितने ÷ शव तारे ॥ ध्रुव ॥

गीधाको शव व्याधाको शव शव शबरीहिं उधारे।
केशव० ॥ १ ॥

तारेउ शव कुब्जा भयंकर शव गजराज उबारे।
केशव० ॥ २ ॥

⊛ अब्र=बादल × बर्क=बिजली, + मसकन=रहनेकी जगह
÷ शव=लाश

कोटिन शव करि कृपा किये तुम भवनिधि केर किनारे।
केशव० ॥ ३ ॥
रहिगयो एक हंसस्वरूप शव केहिं अपराध विसारे ।
केशव० ॥ ४ ॥

—⊛—
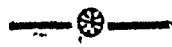
तू तो काम न आया काहूके ॥ ध्रुव ॥
काहूको चर्म मांस काहूको काहूको हाड कमावे ।
तेरो तन कछु काम न आवे चिता मांह जलजावे ॥
तू तो० ॥ १ ॥
मातु पिता ऋषि देवनके ऋण रहिगये तेरे सीस ।
और अनेकनका तू ऋणिया साथ नहीं दस बीस ॥
तू तो० ॥ २ ॥
उदर कमाई निश-दिन कीन्हीं स्वारथ पेट भरेउ ।
परमारथ पथ चढेउ न कबहूँ कौडी लागि मरेउ ॥
तू तो० ॥ ॥ ३ ॥
हंसस्वरूप करहु चेत अब सिरपर आयउ काल ।
तीन जनाके काममें अइहौ कूकर कागा श्याल ॥
तू तो काम न आया काहूके ॥ ४ ॥

—⊛—
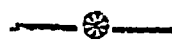
योगिया रे तोहिं योग करत दिन बीते ॥ ध्रुव ॥

राजयोग हठयोग किये तू मंत्रयोग लययोग ।
प्रेमयोग सीखेउ नहिं योगी अन्त चला उठि रीते ॥
योगिया रे० ॥ १ ॥

लख चौरासी आसन साधेउ मुद्रा नाद गँभीर ।
श्वासा लै चढिगयेउ गगनपर चित चंचल नहिं जीते ॥
योगिया रे० ॥ २ ॥

दशम द्वार खोलेयउ तुम योगी मुक्ति करी तुम लाभ ।
भक्ति सहेलिन मर्मन जानेउ हरि न गहेउ तुम हीते ॥
योगिया रे० ॥ ३ ॥

लघिमा महिमाके अभिलाषी दै चित साधे योग ।
हंसस्वरूपहिं × अष्टसिद्धि सुख बिनु हरि लागत तीते ॥
योगिया रे तोहिं योग करत० ॥ ४ ॥

—❀—
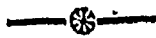
× अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा ।
प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्ट सिद्धयः ॥

१. अणिमा, २. महिमा, ३. गरिमा, ४. लघिमा, ५. प्राप्तिः ६. प्राकाम्य, ७. ईशित्व और ८. वशित्व ये आठ प्रकारकी सिद्धियां हैं ।

गठरी बांधो रे मुसाफिर बजता कूंचका नगारा ॥ ध्रुव ॥
पापपुण्यकी गठरी बांधी सब मिल भा मन एक ।
हौली गठरी करले पथुआ गहिले गांठ विवेक ॥
गठरी० ॥ १ ॥
लख चौरासी कोसके थाके सिरपर बोझा भारी ।
जगत सरामें जागे रहियो है या रैनि अँधारी ॥
गठरी० ॥ २ ॥
बटमारे बहु फिरते या में लूटें सारी रात ।
इनतें बिनती करो हजारों सुनें न तेरी बात ॥
गठरी० ॥ ३ ॥
तीन पहर निद्रा में बीते रहिगइ चौथी पहरी ।
बांधो कमर उठाओ विस्तर त्यागो सेज सुनहरी॥
गठरी० ॥ ४ ॥
अद्भुत नारी बसती यां पै धन सर्वस ठगि लेत ।
हंसस्वरूप बचे जो या तें तेहि हरि दर्शन देत ॥
गठरी० ॥ ५ ॥

रह गई कितनी दूर रे बटोही सैयांकी नगरिया ॥ ध्रुव ॥
लख चौरासी कोससे आई बीचे भूलि डगरिया ॥
रे बटोही० ॥ १ ॥

सँगकी सहेलिन छूटगई सब चौरस्ता भुतलान ।
पांव फफोले परिगये सारे कंटक फाटी चुनरिया ॥
॥ रे बटोही० ॥ २ ॥
घरसे औचक निकलपडी मैं सासु ननद नहिं मान ।
भूषण बसन त्याग मैं दीन्हेउ कर लयी पियाकी पगडिया ॥
॥ रे बटोही० ॥ ३ ॥
हाथ कमण्डल रेशम डोरी गंगाजल भरलायी ।
धोऊँगी पद पद्म मनोहर देखूंगी एक नजरिया ॥
॥ रे बटोही० ॥ ४ ॥
हंसस्वरूप न जैहो उनपै वे हैं परम कठोर ।
चढत अटरिया धरि झकझोरत बीचे करत रगरिया ॥
॥ रे बटोही० ॥ ५ ॥

काह भयउ मृगराजहिं मारे जो नहिं मारेउ मन रे मीता ।
॥ ध्रु० ॥
काहभयो चहुं वेद पढे तोहिं काह भयउ पढि भगद्गीता ।
॥ काह भयउ० ॥ १ ॥
रणमें पैठ वीर बहु मारेउ तोडेउ गढ करि तोप पलीता ।
काबुल कन्दहार कहँ जीतेउ सब मिथ्या जो मन नहिं जीता ।
॥ काह भयउ० ॥२॥

देवी देव किये वश तूने मन बश नहिं तो सब बिपरीता ।
चितचंचल कछु करनदेत नहिं ऐसे कहत सुनत दिनबीता ॥
॥ कहा भयउ० ॥ ३ ॥

बानर कीर समान फँसेउ अरु नित्य मरत तू यमभयभीता ।
हंस तनिक थिर आपुहिं करले भजळे लखन राम अरु सीता ॥
॥ काह भयउ० ॥ ४ ॥

—※—
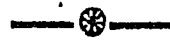
हे बुधजन बुद्धिको मोल नहीं ॥ ध्रुव ॥

सब तारनमें बोल बजतु हैं तानपुरेको बोल नहीं ॥
हे बुधजन० ॥ १ ॥

कंचन रूपा मणि माणिक अरु लाल पिरोजा हीर ।
सब रत्ननको कांटे तोलत बुद्धिरत्नको तोल नहीं ।
हे बुधजन० ॥ २ ॥

बुद्धिमान चुप बैठ रहत हैं बुद्धिहीन कर शोर ।
रीतो घट बोलत बहुतेरो पूरो करत कलोल नहीं ।
हे बुधजन० ॥ ३ ॥

हंस देखु आपुहिं फैलत है चहुं दिशि मलया गन्ध ।
तेहि समीप तेहि गन्ध प्रचारन कोउ बजावत ढोल नहीं ॥
हे बुधजन० ॥ ४ ॥

तू कौन कहांसे आया रे ।
॥ ध्रुव ॥

नंगा आया खाली आया संग न कछु तू लाया रे ।
॥ तू कौन० ॥ १ ॥

कितेक मास तू नरककुण्डमें उलटो कियो निवास ।
कौल कियो हरिसों बहुतेरो तब अपान तोहिं जाया रे ॥
॥ तू कौन० २ ॥

रहा मुसाफिर भटक पन्थमें अटक औरके संग ।
रहना है यां दिना चार क्यों रंगमहल बनवाया रे ॥
॥ तू कौन० ॥ ३ ॥

तू है बासी अलखदेशका जहँ ज्योति बिना रवि चन्द ।
ताहि त्याग तू जगत् सरामें क्यों अचेत चलिआया रे ॥
॥ तू कौन० ४ ॥

हंसस्वरूप चलहु घर अब दुख बरसत मूसलधार ।
हिय कर गहि अब करो सीस निज हरिचरणनकी छाया रे ॥
॥ तू कौन० ॥ ५ ॥

देखहु काल सीसपै नाचै ।
॥ ध्रुव ॥

सोइ चतुरे जो हरिसों रांचै ॥

॥ देखहु० ॥ १ ॥

योगी जपी तपी संन्यासी राजा रंक फकीर ।
औघट कठिन झपेटो याको याते कोउ नहिं बांचै ।

॥ देखहु० ॥ २ ॥

जल बुदबुद क्षणमांह नशै जस तैसे तू नशिजाय ।
चेत अचेत रहो जनि याते जानहु काया कांचै ।

॥ देखहु० ॥ ३ ॥

स्वपनेमें जस स्वपना दीसत तैसे आपुहिं जान ।
अखिल जगत जानहु तुम मिथ्या रामनाम इक सांचै ।

॥ देखहु० ॥

हंसस्वरूप गहै जो हरिको रहै चरण लपटाय ।
अमर होय पूरो पद पावै फिर कछु कतहु न जांचै ।

॥ देखहु० ॥ ५ ॥

—❀—
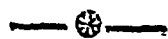
मोह-निशाका सोवन हारा जागु २ अब छाडु सेजरिया ॥ १ ॥
सतगुरु पाहरु ठाढ पुकारत अलसानेउ क्यों खोलु किवड़िया ॥ २ ॥

पांच चोर कायागढ पैठे लूटत हैं नित ज्ञानगठरिया ॥ ३
बार-बार तोहिं हंस चितावै लेहु बचा हरिनामपिटरिया
॥ ४ ॥

—❀—

सूझत नाहिं डगरिया री निपट गँवारी मतवारी ॥ ध्रुव ॥
मोहनिशाकी निंदिया सोवत बीती रैन सिगरियारी ॥
॥ निपट० ॥ १ ॥
सतगुरु मितवा मोहिं बतादे पिय बसे कौन नगरियारी ॥
॥ निपट० ॥ २ ॥
उर जाके बैजन्ती माला शिर सोहै टेढी पगडियारी ॥
॥ निपट० ३ ॥
भक्ति मुक्ति दोउ सखियन सँग लिये खेलत होयहैं जुआसरियारी ।
॥ निपट० ॥ ४ ॥
हंस कहत हठि प्रेमपंथ गहु मिलिहैं तोहिं सांवरियारी ।
॥ निपट० ॥ ५ ॥

—❀—
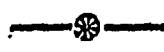
फूटी तोरी गगरियारी निपट अनारी पनिहारी ॥ ध्रुव ॥
ऊर्धमुख कुइँया जल कैसे भरोगी उलझी हाथ रसरिया री ॥
॥ निपट० १ ॥
ईडा पिंगला सुषुमन सखियां मति करु बाट रगरिया री ।
॥ निपट० ॥ २ ॥

भक्ति मुक्ति घर सास ननदिया हेरत होइहैं डगरिया री ।

॥ निपट० ॥ ३ ॥

हंस कहत सखि संग जोरले अपनी चुनरिया पियाकी पगडियारी ॥

॥ निपट० ॥ ४ ॥

—❀—
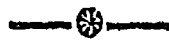
जागिये व्रजराज कुंवर लाडिले जागिये जी ॥ ध्रुव

तारागण मलिन भयो, चन्दा निज भवन गयो, कमलनैन खोल हियो भक्तन अनुरागिये जी ।

॥ जागिये० ॥ १

उरझी लटुरी सुधार, काछनी कटि दूं सँवार, निकसि द्वार, सहित प्यार, सखनि प्रेम पागिये जी ॥

॥ जागिये० ॥ २ ॥

यमुनाके सुभग तीर, शीतल बह जँह समीर, हाथ लेइ लकुट वीर, गउअन सँग लागिये जी ॥

॥ जागिये० ॥ ३ ॥

शमन शिशुपाल कंस, हिमकरवंशावतंस, विरही हंसस्वरूप छणिक नहिं त्यागिये जी ॥

जागिये० ॥ ४ ॥

—❀—

धीरे २ पग धरु सैंयाकी डगरिया सोई मग चलु जेहिं गुरुजन गयऊ॥
॥ ध्रुव ॥

करु स्नान नेहनीरके सागरमें सोई डूबदेहु जेहि सज्जन दयऊ ॥
॥ धीरे ० ॥ २ ॥

करिलेहु सोरहों शृंगार पहिरु सुत्र्पासारी चलु २ अवतो विलंब बहु भयऊ ॥
॥ धीरे ० ॥ ३ ॥

प्रेमको अञ्जन सारु दोउ नयननि लेहु शलाका जेहिं मुनिगन लयऊ ॥
॥ धीरे ० ॥ ४ ॥

हंसस्वरूप वीचि भेट नटनागर देखतही दुख सकल विलयऊ ।
॥ धीरे ० ॥ ५ ॥

सो घर जान मसान प्रेम नहिं जामें आयो रे ।
फीको सोई पकवान प्रेम नहिं जामें आयो रे।
तोहि नहिं कहहु सुजान प्रेम नहिं जामें आयो रे ।
पशु समान तेहि जान प्रेम नहिं जामें आयो रे ।
हंस त्याग सोई प्राण प्रेम नहिं जामें आयो रे ॥

पहेली बूझो सन्त सुजान ॥ ध्रुव ॥

तीन धार इक ठौर बहत हैं दो हैं सूखी साखी ।
तीजीमें पानी नहिं दीसत ताका करूँ बखान ॥
पहेली बूझो सन्त सुजान ॥ १ ॥ (ब्रह्म, माया, जीव)

वार पार कछु ताको नाहिन नहिं नौका नहिं बेरो ।
है अथाह थाह नहिं तामें तैरे तीन जवान ॥
॥ पहेली० ॥ २ ॥ (मन, बुद्धि, अहकार)

जाका नहीं निशान सो चतुरा ग्राम बसाये तीन ।
दो तो इनमें उजडे पुजडे इकका नहीं ठिकान ॥
॥ पहेली० ॥ ३ ॥ (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति)

जाका नहीं ठिकान सो तामें बसिगये तीन कुम्हार ।
दो तो इनमें लूल्हे लाल्हे तीजा बिनु कर जान ॥
पहेली० ॥ ४ ॥ (स्थूल, सूक्ष्म, कारण)

जो बिनु करका कुम्हरा भाई गढली हांडी तीन ।
दो तो इनमें फूटी फाटी इक बिनु पेंद पुरान ॥
॥ पहेली० ॥ ५ ॥ (स्वर्ग, मर्त्य, पाताल)

बिना पेंदकी हांडीमें तहं रांधेउ चावल तीन ।
दो रहिगे तहं उछल कूदके इक न पके पकवान ॥
पहेली० ॥ ६ ॥ (सुकृत, दुष्कृत, ज्ञान)

जो न पके पकवान सो तामें नेवतेउ पाहुन तीन।
दो इनमें तो रूठ रहे घर, एक मनाये न मान ॥
॥ पहेली० ॥ ७॥ (जीवन्मुक्ति, विदेहमुक्ति, निर्वाण)

हंसस्वरूप चलो सतगुरु पहँ समझ लेहु सब भेद।
यह त्रिकुटी जो बूझे समझे सोइ विद्वान् महान् ॥
पहेली० ॥ ८ ॥

—⊛—

तेरा संगी जगत्‌में कोई नहीं ॥ ध्रुव ॥

हरि-चरणनमें प्रीति न लायी, भक्ति सेजरिया सोयी नहीं।
तेरा० ॥ १ ॥
नेह-नीरको भरि-भरि सजनी, काया गुदरिया धोयी नहीं।
तेरा० ॥ २ ॥
कहत हंस सखि प्रेम न चीन्हेउ, श्याम-बिरहमें रोयी नहीं।
तेरा संगी जगतमें कोई नहीं ॥ ३ ॥

—⊛—
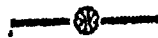
मैंने देखी जगत्‌की रीत ॥ ध्रुव० ॥

अपने बिगाने सबहि परेखेउ सब स्वारथके मीत।
मैंने० ॥ १ ॥

जब कछु पावत स्तुति ठानत कहत बाप अरु माय ।
जो इक दिन कछु इनहिं न दीजे होजावें बिपरीत ॥
मैंने० ॥ २ ॥
इनपै कछु विश्वास न कीजे रहिये इनसे दूर ।
हंसस्वरूप तजि संगति इनकी हरिसों करिये प्रीत ॥
मैंने० ॥ ३ ॥

—❀—
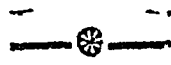
प्यारे अब मो विलम्ब बडो ।
संगकी सहेलिनि छूटिगईं सब मारग भूलि पडो ।
बहु बटमारे बसें याहि मग लूटत करि रगडो ॥
पूंजी पासकी छीनिगयी सब सङ्ग न एक दमडो ।
कस निबहै पाथेय पन्थ जहँ कर्मनिको झगडो ।
हंसस्वरूप रूप मधुरी पै घर आंगन छोडो ॥

—❀—
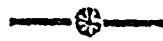
गगन फुलवरिया फूलत फूल हजारा । हो रामा ।
अनहद कोकिल कुहक सुनावत बरसत अमृत धारा । हो रामा ।
गगन० ॥ १ ॥
डार-डारमें पात-पातमें झलकत मोहन प्यारा । हो रामा ।
सोहं हंस अहर्निशि मानस मोर करत गुंजारा । हो रामा ।
गगन० ॥ २ ॥

हंसस्वरूप रमि रहो यहां ही सकल द्वन्द्वतें न्यारा। हो रामा।
गगन० ॥ ३ ॥

—※—

नाथ अनाथनकी सुधि लीजे।

तुम बिन दीन दुखित, हैं मुनिजन, बेग कृपा अब कीजे॥
नाथ० ॥ १ ॥
डूबत हैं मझधार विपतिके, कर गहि पारे करीजे॥ नाथ० ॥ २ ॥
कर लेने लंकेश पठायो, रुधिर काढि अब दीजे॥ नाथ० ॥ ३ ॥
हंसस्वरूप शरणागत आयो, चित चाहे सो कीजे।
नाथ० ॥ ४ ॥

—※—
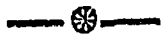
क्यों हमरे हित धावत नाहीं॥

अर्जुन हित धायो तू रनमें द्रुपदा हित धायो पलमाहीं।
क्यों० ॥ १ ॥
गज हित धायो हरि क्षणमें तुम मुक्त कियो गहि निज बलबांहीं।
क्यों० ॥ २ ॥
देवन हित धायो गढ लंका धावत तुमरे पग न पिराहीं।
क्यों० ॥ ३ ॥

भक्तन हित धावत तुम जहँ तहँ धावत ही दिन रैन सिराहीं
क्यों० ॥ ४ ॥
हंसहेतु यदि नहिं धावहुगे जानहु देह प्राण विलगाहीं ।
क्यों० ॥ ५ ॥

—◎—

तू रखवारा सांचा सांई तू रखवारा सांचा रे ॥
निशि जागे जो निज रखवारी करै सो मनका कांचा रे ॥ तू० ॥ १
भारतमें भरदूल अंड गजघंटके नीचे बांचा रे ।
गजराज ग्राह मुख दौडि बचायो मंजारहिं आवा आंचा रे ।
तू रखवारा० ॥ २ ॥
सुनि-सुनि विविधभांति रखवारी मोकहँ अचरज लागे ।
व्याधा-बाण कपोत बचेउ प्रह्लाद हुतासन नांचा रे ॥
तू रखववारा ॥ ३ ॥
तव रखवारी चोर न चोरै बटमारे फिरजावें ।
हंसस्वरूप सची रखवारी, देख मीत मन रांचा रे ॥
तू रखवारा० ॥ ४ ॥

—◎—

छाडि चरण कहां जाऊं रे बालम ।
और को सुनि है पीर परायी काको विपति सुनाऊं ।
रे बालम० ॥ १ ॥

सुर नर कोउ परसारेथ नाहिन, कहां २ भरेम गवाऊं।
रे बालम० ॥ २ ॥
त्तण २ तेरे हि नामकी मुक्ता, चुगि २ दिवस बिताऊं।
रे बालम० ॥ ३ ॥
हंस कहत तू मेरो कहावे, मैं तेरो कहलाऊं।
रे बालम० ॥ ४ ॥

—⊛—

साधो ! मन नहिं जीतो जाय ॥ ध्रुव ॥

कोटि यत्न करि पचि-पचि मरिये करिये लाख उपाय ॥
साधो० ॥ १ ॥
देव दनुज गन्धर्व जीत पुनि यमपुर जीतेउ धाय।
कालहु जीतिलेइ इक छिनमें इन्द्रहु लेइ बँधाय। ॥२॥
गिरि सुमेरु कहँ चूर करै कोउ सप्त सिंधु पीजाय।
विष समूह करिलेइ कलेवा सर्पनि लेइ डसाय ॥ ३ ॥
वर्ष सहस दस बनमें बसिकै सूखी पत्ती खाय।
क्षुधा पिपासा तृष्णा जीतै अङ्ग अङ्ग गलिजाय ॥ ४॥
सतगुरु कृपा बीर विरला कोउ जो याको वशलाय।
धन्य २ सोइ सन्त जगत्में हंस ताहि बलिजाय ॥ ५ ॥

—⊛—

रामहिं रमहु रमैया, तेरी बीती जाति समैया।
पुरुषारथ पथ पग धरु प्यारे, पूरी करहु कमैया ॥

जग नातो कछु काम न आवे, ससुरो सास जमैया ।
भवसागर अपार सरिता बह, जहँ चौडो नाहिं लवैया ॥
वार पार नहिं दीसत जाको, डूब घनेरी नैया ।
जो कोउ नाथ शरण चलि आवे ब्राह्मण काह कसैया ॥
मेटत कोटि जन्म अघ क्षणमें, पतितन पाप नशैया ।
हंसस्वरूपके हिया बसहु अब, ÷ राम कृष्ण दोउ भैया ॥

—⊛—
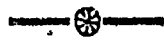
सुनिये नाथ विनय मोरि तनक चित्त लायी ।
सहूँहूँ जो विपत्ति घोर तोहि दूँ सुनायी ॥
मायाकी घोर धार सूझत नहिं वारपार,
जानत नहिं, हूं गँवार तरनकी उपायी ।
सुनिये नाथ० ॥ १ ॥
जलचर कहु काम क्रोध मत्सर अभिमान मोह,
ग्रसत मोहि जोह २ कीजिये सहायी ।
सुनिये नाथ० ॥ २ ॥
कहा कहुं दीननाह होत नाहिं अब निबाह,
ग्रसन चहत विषय ग्राह लीजिये छुडायी ।
सुनिये नाथ० ॥ ३ ॥
भक्तन सन्ताप हरन दीनन दुखदाप दरन,
हंस गहत युगल चरण भवनिधि तरिजायी ।
सुनिये नाथ० ॥ ४ ॥

÷ यहां रामसे वलराम समझना ।

जब तुम प्रेरक विधि निषेधके फिर क्यों मोहिं झकझोरत
अहहु खेवैया भवनिधिके फिर मांझधार क्यों बोरत ॥
जब तुम० ॥ १ ॥
प्रेमिनके तुम प्रेम निबाहत अस कहँ वेद पुराण ।
लगनलगी जोरत सबहीकी फिर मेरी क्यों तोरत ॥
जब तुम० ॥ २ ॥
मैं नहिं चाहूं ब्रह्मलोकसुख मुक्तिहुकी नहिं चाह ।
क्षण २ पल २ बितै मोर पदपंकज-रजहिं बटोरत ॥
॥ जब तुम० ३ ॥
धर्म जाहु परलोक नशै अरु निन्दित नीच कहाऊँ ।
हंसस्वरूप कहावे तुमरो यह करजोर निहोरत ॥
जब तुम० ॥ ४ ॥

भैया रे अब दिन नियरानो छाडन को यह देश ।
भैयारे० ॥ १ ॥
पग दीजे शुभ लग्न सोचिके लेहु मनाय गणेश ॥
भैया रे० ॥ २ ॥
यह है देश दोरंगी प्यारे दुःख सुख चैन कलेश ।
शत्रु मित्र अपनो बेगानो इत उत रंक सुरेश ॥
भैयारे० ॥ ३ ॥

खेलनके दिन बीत गये अब डूबतजात दिनेश ।
हंस बिलम्ब नहिं करहु नेक अब श्वासा रहेउ न शेष ॥
भैया रे० ॥ ४ ॥

—❁—

ताकहु एक नजरिया रे मेरे बनवारी गिरिधारी ॥ ध्रुव ॥
कर जोडे मैं कबकी खडी हूं क्यों नहिं लेत खबरिया रे ।
मेरे० ॥ १ ॥
तन मन धन सब तुम पर वारेउ जानत शहर बजरिया रे ।
मेरे० ॥ २ ॥
सबकी सुधि तुम लेत मुरारी हमरी काहे बिसरिया रे ।
मेरे० ॥ ३ ॥
दीनदयालु दयाके सागर हंसके स्वामी सांवरिया रे ।
मेरे० ॥ ४ ॥

—❁—

जिय डरपत ऊँची अटारी ।
कंपत देह विघ्न बहु दरशत होइहों पीकी प्यारी ।
जिय डरपत० ॥ १ ॥
थरथरात पग धरत बनत नहिं भीजत भीनी सारी ।
जिय डरपत० ॥ २ ॥
मणिका नाम हंस चुङ्गनको मानस नदिया न्यारी ।
जिय डरपत० ॥ ३ ॥

लीला तेरी को जाने गिरिधारी ॥ ध्रुव ॥

शेष सहस-मुख पार न पावैं थकिं बैठे त्रिपुरारी ।
भांति २ की रचना चहुँ दिशि गिनत २ थकि जावें ॥
वीर गणक मैं ताहि बखानों जो उडुगण गिन लावे ।
लीला तेरी० ॥ १ ॥
मशक गगनको थाह न पावे मत्कुण सिन्धु प्रवाहा ।
तैसे पचि २ बहु कवि कोविद पायो नहिं कछु थाहा ॥
लीला तेरी० ॥ २ ॥
अलख अगोचर रचना तेरी हठ विरंचि भरमावे ।
वेदन नेति २ कहि थाके दूजो को जो जीह हलावे ॥
लीला तेरी० ॥ ३ ॥
मन अरु बुद्धि बाणी ते न्यारी अद्भुत शक्ति तिहारी ।
देखत हंसस्वरूप जात है तव चरणन बलिहारी ॥
लीला तेरी० ॥ ४ ॥

—❀—
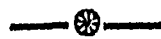
माधव मोहिं कहां बिसरायो ॥ ध्रुव ॥

भलो बुरो सबकी सुधि राखत वेद पुराणन गायो ।
बानरे भालु भील बद्धमारो कागा गिद्ध कसाई ।
जिनकी कछु कहिं गिनती नाहीं ते तुम्हरे मन भायो ॥
माधव० ॥ १ ॥

को कहि सके गिने कहो कितनों जितनों तुम अपनायो।
फिर क्यों एक हंसकी बेरियां इतनो विलंब लगायो
माधव० ॥ ३ ॥

रोम-रोम जिह्वा बनिजावें तौउ नहिं हरि—यश कहत सिरावे ॥ टेक ॥
जो गति देवनको दुर्लभ अति सो गति धीवरि गिद्ध पावे ॥ रोम रोम० ॥ १ ॥
जो योगिनके ध्यान न आवति तेहि व्रजग्वालिन नाच नचावें ॥ रोम रोम० ॥ २ ॥
कोटिन यज्ञ हविष्य न तोषत सो भिलनी को जूठो खावे ॥ रोम रोम० ॥ ३ ॥
बहु तपतें जो सम्पति दुर्लभ मूठी फरहीप सुदामा पावे ॥ रोम रोम० ॥ ४ ॥
जाहि कृपा इक हीन दीन जन स्वामी हंसस्वरूप कहावे ॥ रोम रोम० ॥ ५ ॥

ए हो हरि कहां लों गावों गुण तेरो ॥ टेक ॥
अन्त न पावत शेष सहस्र—मुख शारद औ त्रिपुरारी।
सो कैसे वरणौं यह जिह्वा छोटी अतिही गँवारी ॥
ए हो हरि० ॥ १ ॥

धन्य २ तुम धन्य तुम्हारी रीति।
बिन सेवा दीननपर रीझो बूझो मनकी प्रीति॥
ए हो हरि०॥ २॥

राईको परवत करडारो मशकहि करो विरंचि।
लक्षहि रंक बनाय देहु तुम कोटि यतन धरि शंचि॥
ए हो हरि०॥ ३॥

दीन अनेकन तारे मेरे प्रभु निज नैननके कोर।
सो सुनि हंस शरण चलि आयो तोहि अब लज्जा मोर॥
ए हो हरि०॥ ४॥

भैया खाली हांथ चलेउ॥ ध्रुव॥

बहुरे लियो तुम लाख करोरन कौडिहु नाहिं मिलेउ।
हित मित पुत्र कलत्र सहोदर मुख अगिया दे फिरि आवें॥
इकलो तहां भस्म होई तुम धूरहि धूरि मिलेउ॥ भैया०॥ १॥
कागा गीध नोच कछु खायो पक्षिन बीट भयेउ।
कीट ह्वै रह्यो तहां जो शेष कछु सरिता मांहि गलेउ॥भैया०॥ २॥
कर्म खंभ तू खूब डुलायहु तनिकउ नांहिं हिलेउ।
हंस प्रेमपथ चलत-चलत अब हरिसों जाय रलेउ॥ भैया०॥ ३॥

खोजत बीती सारी उमरिया पायी नहीं हरि तेरी खबरिया।
॥ ध्रुव ॥
क्यों तरसावे रे मनमोहन छबि दिखला टुक एक नजरिया ॥ खोजत० ॥ १ ॥
हाट बाट गिरि कानन सागर चौहट बीथिन शहर बजरिया।
चलत चलत मोरी पैयां पिरानी छिपि बैठे कहु कौन। अटरिया। खोजत० ॥ २ ॥
क्षीरसमुद्र तीर कोउ हेरत कोउ हेरत तोहि काशी नगरिया।
असन शयन सुख चैन विहाई हंस हेर तोहि प्रेम डगरिया
खोजत० ॥ ३ ॥

—❁—

मोहन लाज तिहारे हाथ ॥ ध्रु० ॥
करुणा-सागर सबगुन आगर दीननके तुम नाथ।
मोहन० ॥ १ ॥
द्रुपदा लाजे रखी चीर बन मुनि-तियको रघुनाथ।
आनकदुंदुभि बन्धन काट्यो भारत पारथ साथ ॥
मोहन० ॥ २ ॥
कहँ लगि कहउँ गिनूँ कहां लगि जिन २ कियो सनाथ।
हंसस्वरूप दास तुमरो इक चरण नवावे माथ ॥
मोहन० ॥ ३ ॥

रे मन तोकों लाज न आवे ॥ ध्रु० ॥

छिनमें रंक राव छिन २ में, छिनमें दुखी सुखी बन जावे ॥
रे मन० ॥ १ ॥

छिन योगी छिन माहिं वियोगी छिन कायर छिन बीर कहावे ।
छिन बनमें जा धूनी रमावे छिनमें ऊँचो महल चुनावे ॥
रे मन० ॥ २ ॥

छिन काहू से बैर करत तुम छिन काहू से प्रेम लगावे ।
छिनमें मूढ चतुर छिन २ में छिन नीचो छिन ऊँचो धावे ॥
रे मन० ॥ ३ ॥

छिन सुत वित परिवार बढावत जैसे मकरी जाल बनावे ।
पार पडोसिन देखि बडाई ईर्षा-वश घर बैठि खिजावे ॥
रे मन० ॥ ४ ॥

हाथ मलत पुनि २ पछतैहो जादिन शीस काल चढि आवे ।
थिर होय कबहु नेक हरिपद भजु पुनि २ हंसस्वरूप चितावे ॥
रे मन० ॥ ५ ॥
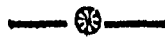
सखि हे कानन कुंजबिहारी ॥ ध्रुव ॥

जित देखूं तित हरि हरि दीखत हरि कदमनकी डारी ।
सखि हे० ॥ १ ॥

तन हरि मन हरि घर आगन हरि रोम रोम हरि राजे ।
काया-गढकी गगन-गुफामें हरिकी मुरली बाजे ॥
सखि हे० ॥ २ ॥

देव दनुज हरि नाग मनुज हरि हरि घट-घटमें सोहैं ।
कोयल कीर कपोत कमेरी हरि चातक धुनि मोहैं ॥
सखि हे० ॥ ३ ॥

बाल वृद्ध हरि पुरुष नारि हरि हरि ही प्रजा हरि भूपा ।
गिरि सुमेरुके शृंग विराजे हरिको रूप अनूपा ।
सखि हे० ॥ ४ ॥

घन-घमंड मारुत-प्रचण्ड हरि सूर्य्य चन्द्र हरि राजे ।
ना जानू अस व्यापक सो हरि, कब धों हंस निवाजै ।
सखि हे० ॥ ५ ॥

—❀—

देखेउँ मैं तेरो दरबार ॥ ध्रुव ॥
अद्भुत रचना लखि नहिं जाई अद्भुत तू सरकारे ।
देखेउँ० ॥ १ ॥

कोटिन देव जोडि कर ठाडे मुनि जन लाये ध्यान ।
रवि शशि थरथरात भय कांपत दौडत सांझ सकार ॥
देखेउँ० ॥ २ ॥

कोटिन आहुति हुतहिं विप्रगण स्वर्ग मिलन के हेतु ।
चारों वेद एक संग मिलिके स्तुति करत उचार ॥
देखेउँ० ॥ ३ ॥

वहत पवन प्रभुकी रुचि पाई धरा फूल बहु फूल ।
मौलसरी जूही वेली अरु कमल कुन्द कचनार ॥
देखेउँ० ॥ ४ ॥

ज़हँ सनक सनन्दन रोक पहरुआनि औरन गिनती काह ।
हंसस्वरूप एक पग ठाढे द्वारे करत पुकार ॥
देखेउँ० ॥ ५ ॥

—❁—

तेरा चर्खा भया पुराना बुढिया अब क्या काते रूनू २ । ध्रु० ।
ढीलो माल सिरानी पिउनी काल धुनेरा धुनू२ ॥ तेरा० ॥ १ ॥
जोल्लह जीव नरी माया लै कर्म चदरिया बुनू२ ॥ तेरा० ॥ २ ॥
हंस त्याग करगह हरिपद भजु जहं पायल बाजैं भुनू २ ।
तेरा० ॥ ३ ॥

—❁—

खोजूँ हरिजूको बाट घटिया बतादे उतरनकी रे बटोही ।
॥ ध्रुव० ॥
कैसी तरणी करुआर है कैसो मस्तूल कहांलों ऊँचो ।
कर्णधारको नाम कहो क्या झिंझरी कैसी जलविह-
रन की ॥ रे बटोही० ॥ १ ॥
कौडी करकी कितनी लागे कहो पार बिस्तार ।
कौन जनावत कैसे जानत मारग नउका विचरनकी ।
॥ रे बटो ही० ॥ २ ॥
करूँ निछावर तन मन तोही जो पहुँचादे तीर ।
हंसस्वरूपहिं रीति बतादे निशि वासर हरि सुमरनकी ।
॥ रे बटोही० ॥ ३ ॥

औरन प्रीति अनीति जानु तुम जो हरि सों नहिं प्रीति भई रे।
। ध्रु० ।

जगकी प्रीति असार सार नहिं जस बालूकी भीति दई रे ।
औरन० ॥ १ ॥

सीमल पुष्प सेव जस सूआ फल आशा मन लागि रही रे ।
मारत चोंच उडेउ तहां भूआ सकल कामना झूंठि भइ रे ॥
औरन० ॥ २ ॥

तृषित मृगा मृगतृष्णा धायो जल पीवनकी आस लई रे ।
मिलेउ न वारि हारि चित मुरझेउ पहुँचत निकट खुली कलई रे।
औरन० ॥ ३ ॥

शशको शृंग अकाश पुष्प जस वन्ध्या सुन्दर सुत जनई रे ।
जग धोकेकी टट्टी जानहु हंसस्वरूप सांची भनई रे ॥
औरन० ॥ ४ ॥

कलिके निराकार वादी अस जस फागुनके बाल । ध्रु० ।

रति-सुखकी सुधि तनिकऊ नहिं पै पढत विविधि बिधि गाल ।
कलिके० ॥ १ ॥

ये तो कहैं ब्रह्म सब ठैयां व्याप रहेउ ब्रह्माण्ड ।
पै ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिं न कबहूं ब्रह्मानन्द विशाल ॥
कलिके० ॥ २ ॥

बिनु हरिपद रति निराकार गति लखै कहिय तेहि कूर।
कोटि जन्म सिर पटक मरहु पै रीझ न मदन गोपाल ॥
कलिके० ॥ ३ ॥
ब्रह्म जीव माया कोउ भाषत हैं ये तीन अनादि।
पै अनादिको अर्थ न जानत रचत वाक-जंजाल ॥
कलिके० ॥ ४ ॥
अगुणसगुणबिच भेद तनक नहिं गावत वेद पुराण।
हंसस्वरूप साधि चुप बैठिये भजिये श्रीनँदलाल ॥
कलिके० ॥ ५ ॥

—※—

शुन्न महलमें देखहु प्यारे अद्‌भुत ज्योति बरे। ध्रु०।
रवि शशि मलिन होत जहं जाई दामिन द्युति न करे ॥
शुन्न० ॥ १ ॥
बिनु वारिद जहं उदय इन्द्रधनु बिन मुख बोलें मोर।
बिनु जीहा जहं रटत पपीहा बिनु जल बूंद झरे।
शुन्न० ॥ २ ॥
बिना तार जहं वीन बजत हैं बिन महि फूलैं फूल।
कोटिन दीप जरें बिनु बातिन फल बिनु विटप फरै।
शुन्न० ॥ ३ ॥
बिनु पर पक्षी उडें अकाशा लंघ सागर बिनु यान।
हंसस्वरूप चलहु वोहि नगरी जहँ मोतिया झहरै ॥
शुन्न ॥ ४ ॥

तीतो लागत है संसार बिनदेखे उन नन्दकुमार ॥ ध्रुव ॥
यद्यपि देखत सकल जगत सुख सुन्दर चिक्कण सुभग अरुण फल।
महकारी फल जानहु तिनको लटकैं डारे डार।
तीतो ला० ॥ १ ॥
सर्प कूप मुख सेज बिछाई उज्वल रेशम डोर दियो कस।
पै पौढत तहं नींद न आई भयो भुजंग अहार।
तीतो ला० ॥ २ ॥
हीरा रत्न लाल मणि माणिक गज रथ तुरंग लाग सब विष सम।
तब देखहु सुलतान बुखारा गुरुपहं झोकत भार।
तीतो ला० ॥ ३ ॥
झोंकत भार लहेऊ प्रीतमको पहुंचगयो तेहि ठामसो बरबस।
हंसस्वरूप जेहि अनुपम नगरी बिरला करत विहार।
तीतो ला० ॥ ४ ॥

अब क्षमा करहु तकसीर नाथ सिर विपत बूंद चूई।
रोम २ चुभि देत अधिक दुख तुम्र विरहा सूई।
नाथ सिर० ॥ १ ॥
अंग २ धुनि गये दुःखसों जैसे गांडर रूई।
नाथ सिर० ॥ २ ॥
अब रूठे मुख निरखि तुम्हारे बिना मौत मूई।
नाथ सिर० ॥ ३ ॥

जन्मजन्मकी मैं हूं दासी स्वामी एक तूंई।
नाथ सिर० ॥ ४ ॥
अब ऊधो मैं करूं योग क्यों हरि छाया छूई।
नाथ सिर० ॥ ५ ॥
हंस छाडि हरि भजत और जो कर खोदत दुख कूई।
नाथ सिर० ॥ ६ ॥

माधव जानत हो मनकी ॥ ध्रुव ॥
रोमरोमकी सप्तधातुकी पीर मेरें तनकी।
माधव० ॥ १ ॥
स्वर्ग न चाहूं सकल जगत सुख चाह नहीं त्रिभुवनकी।
चाहूं एक चरणरज-कण मैं सार वस्तु जो सन्तनकी ॥
माधव० ॥ २ ॥
अँगुरिन दिवस गिनूं आवनकी पतित ढूंढ कोउ पावनकी।
मोहन बिनु अँखियां बरसत नित बरस घटा जस साव-
नकी ॥ माधव० ॥ ३ ॥
प्रेम पलीता दगी भयउ तहँ विरह शब्द घन घोर।
बौरी भयी फिरी मैं इत उत रही न सुधि कछु घर बनकी ॥
माधव० ॥ ४ ॥
हंसस्वरूप प्रीति साँची करूं छाडिं सकल जंजाल।
निशि वासर धरू छिन-छिन पल-पल राखहु सुधि
मन मोहनकी ॥ माधव० ॥ ५ ॥

अब दिन जात निरर्थक चहुँदिशि देखूं बहु जंजाल ।
तिरिया कहति मोहि कंचन लादे धूम मचावत बाल ।
अब दिन० ॥ १ ॥
समय जात नित काच बटोरत हीराकी सुधि नाहिं ।
करको विद्रुम त्यागि बावरे गुंजा गहत निहाल ॥
अब दिन० ॥ २ ॥
इत उत डोलत आयु खुटानी हरिहि कियो नहिं मीत ।
रहेउ अकेला संग न कोऊ आय पुकारेउ काल ॥
अब दिन० ॥ ३ ॥
कांची काया गयउ बिलाई जस बालूकी भींति ।
कृमि विट भस्म होत अन्तमें नोचत कूकर श्याल ॥
अब दिन० ॥ ४ ॥
होउ सचेत चेतकरु बौरे भजु गोविन्द मुकुन्द ।
हंसस्वरूप पुकारि कहत क्यों गहत न तू गोपाल ।
अब दिन० ॥ ५ ॥

—※—

भैया भरपूर पापको गठरो ॥ ध्रुव ॥
लच्यो पीठ अब चल्यो जात नहिं जैसे बैला मठरो ।
भैया० ॥ १ ॥
जीवन विषयभोग बहु बीते भरलीनो निज जठरो ।
भैया० ॥ २ ॥

सच्ची संगति करि प्रेमिनकी सुधरि जाहु तू सठरो ।
भैया० ॥ ३ ॥
हंस तोहि इक नाम आसरो जैसो लंगडो लठरो ।
भैया० ॥ ४ ॥

—⊛—

प्रभु मैं पतितनको सरदार ॥ ध्रुव ॥
अंकनि थाके गिनत अघनि घन को कह कितेक हजार ।
प्रभु मैं० ॥ १ ॥
जीत सकत नहिं मोहि अजामिल जो जनमें लख बार
प्रभु मैं० ॥ २ ॥
व्याघा भागत देखि पाप मन सदनासों तकरार ।
प्रभु मैं० ॥ ३ ॥
गणिका कणिका कौन बतावे कहँ लगि करूँ शुमार ।
प्रभु मैं० ॥ ४ ॥
हंस जान तोहि पावन टेरत मानसरोवर पार ।
प्रभु मैं० ॥ ५ ॥

—⊛—

लल्लू लाल खिलोना लेलो गोरे गात नीलो पट देलो ॥ १
लाई हूं मैं सोनेकी मुनिया हीरा रतन जडी झुनझुनिया ॥ २ ॥
ग्वाल बाल सँग खेलहु जाई इक टुक माखन मिश्री खाई ॥ ३ ॥

कह यसुमति हरि अंकमें लाई बार २ तेरी लेहुं बुलाई ॥ ४ ॥
रिसियाने हरि गे हरषाई देखि हंस हँसि दीन ठठाई ॥ ५ ॥
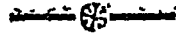
छाडि सकल जंजाल भजु श्री गोकुलको गोपाल।
कृपा भरी टेढी चितवन ते चितवत करत निहाल।
भजु० ॥ १ ॥
विप्र सुदामहिं इक टुक चितयो रंकते कियो नरेश।
जेहि चितवत तेहि वशकर राखत ऐसो मोहनलाल ॥
भजु० ॥ २ ॥
द्रुपदसुता चितयी चित लायी चीरहिं दीन बढाय।
पुनि चितयी तिन मीराबाई बिषते ग्रसेउ न काल।
भजु० ॥ ३ ॥
कुब्जा चितै अप्सरा कीनी शिला चितै मुनि नारि।
कपिपति चितै मित्र निज कीन्हों डारि गरे मणिमाल ॥
भजु० ॥ ४ ॥
चितवत धींवर कियो भरत सम गीध चितै गति दीन्ह।
हंसस्वरूप तोहि कब चितवैं करैं वचन प्रतिपाल ॥
भजु० ॥ ५ ॥
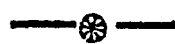
चलिये-चलिये चेला भाई गुरूजी तुमरे आये हैं।
लोहेकी कतरनी लाये साबुन थोडा लाये हैं ॥ १ ॥

मूडेंगे जो चोटी छोटी रोटी देंगे घीकी घोटी।
मैले कपडे धोवेंगे वह धोबी बनके आये हैं ॥ २ ॥
गुरूजी गुड हैं चेला चीनी कलियुगकी भैने करदीनी।
धोती पीली मिली बिदाई टका देख झुंझलाये हैं ॥ ३ ॥
अब नहिं आवें याके घरमें रुपया दीना एक। जोडा
देना चाहिये याको मन्त्र बहुत सिखलाये हैं ॥ ४ ॥
चेला बोले चलो गुरूजी भूल गये हम मन्त्र। बेटी बेटा
नाती पोता त्रिया तन्त्र सिखाये हैं ॥ ५ ॥
हंस हँसै यह लीला देखत बधिर शिष्य गुरु अन्ध।
भवसागरमें उबकी डुबकी डूबे और डुबाये हैं ॥ ७ ॥

—⊛—

माधव हे मैं मोह महामधुमाता ॥ टेक ॥
मनकी मनोकामना मांगत मुख मलीन मुरझाता ॥ १ ॥
सुमिरत सुघर स्वरूप सलोनो सांस २ अलसाता ॥ २ ॥
चित चंचल चूमन नहिं चाहत चरण चारु जलजाता ॥ ३ ॥
हुलसि २ हिय हंस निहारत तीन लोकके त्राता ॥ ४ ॥

—⊛—

प्रभु मैं पुत्र कुपुत्र तिहारो ॥ टेक ॥
जगत पिता तुम सब बिधि लायक पालनहार हमारो।
प्रभु० ॥ १ ॥

खेलि बिताय दीन बालापन युवा युवति सँग लागी।
वृद्ध भये कछु काज सरे नहिं मिथ्या जन्म बिगारो।
प्रभु० ॥ २ ॥

पदसरोज भावें नहिं नेत्रनि मनुआ भृंग न कीन।
प्रेम भक्ति कर मर्म न जानेऊ माता युवाकुठारो।
प्रभु० ॥ ३ ॥

पुत्र कुपुत्र होंय बहु जगमें मात कुमात न होई।
अस विचार शरणागत लीनी तनक न मोहिं बिसारो।
प्रभु० ॥ ४ ॥

लख चौरासी भटकि-भटकिके मानुष-तन चलि आयो।
हंसस्वरूप भवकूप पड्यो प्रभु अबकी बार उबारो।
प्रभु० ॥ ५ ॥

❀ तत्सद्ब्रह्मणे नमः ❀

हंसहिंडोल ।

दूसरी मचकी ।

(प्रेम, शृङ्गार और विरह)

सुनिये मदनगोपाला, श्री नन्दजूके लाला ।
अब तो सही न जाती, तेरे विरहकी ज्वाला ॥ १ ॥
ए हो कुँवर कन्हाई, तेरी कठिन जुदाई ।
कैसी दशा बनाई ख़ुद देखजा कृपाला ॥ २ ॥
+ दुरे ग़म पिरोरहा हूं, दिन रैन रोरहा हूँ ।
इस सांकरी गलीका, है ढङ्ग ही निराला ॥ ३ ॥
अब हंस क्या करोगे, जो कुछ हो सब सहोगे ।
विधिनाने लिखदिया है, किसमतमें आहोनाला ॥ ४ ॥

+ दुर=मोती

सखि हे उन बिनु कैसे जीऊँ, घोलि देहु मोहि विषके प्याले
घोटि एक दुइ पीऊँ ॥ १ ॥
नयन निकास कागको दीजो लेजावे उन पासा ।
दरस दिखाय खाय पुनि लैहै पूरै मनकी आशा ॥ २ ॥
चिता बनाय यमुनके तटपै मो कहँ भस्म करीजो ।
राधा तेरे बिरह खाक भयि यों पाती लिख दीजो ॥ ३ ॥
बालेपनकी प्रीति सुरतिकर हंस शीघ्र चलि आवै ।
चरण चिता भुवि ठोकर दे पुनि लौटि मधैपुर जावै ॥ ४ ॥

धीरज कैसे धरूँ सखी हे बिन प्यारे यदुनाथ ।
तू तो कहै मनको थिर करिये सो मन हरिके साथ ॥
धीरज० ॥ १ ॥
करण बधिर भे जिह्वा सूखी नयनन सूझत नाहिं ।
अंग २ बिन श्याम सिथिल भये केहि गल डारूँ बांह ।
धीरज० ॥ २ ॥
कस्तूरी कर्पूर कुमकुमा केहिके अंग सँवारूं ।
दाडिम दाख चिरोंजी चिकनी अब केहिके मुख डारूँ
धीरज० ॥ ३ ॥
कुण्डल हंस डारि केहि कानन पग नूपुर केहि लैहो ।
केहिके चरण पखार सीस धरि तनको ताप बुझैहो ॥
धीरज० ॥ ४ ॥

पियको रूप हिया बिच झलकै, अलिन वृन्द गुञ्जारकरैं
जनु मुखसरोज पै कारी अलकैं ॥
जबसे दीखपडी उन मूरति, रैन दिवस नहिं लागहि
पलकैं ॥ पिय० ॥ १ ॥
उमडत बार २ मानत नहिं नेह नीर गागर जनु
छलकैं ॥ पिय० ॥ २ ॥
अवसर पाय नजर भरि निरखूं विरह व्यथा भरि
हियदल दलकैं ॥ पिय० ॥ ३ ॥
हंस पडत पैयांप्यारे पियरवा, मेटिदेहु हियराकी
कलकैं ॥ पिय० ॥ ४ ॥

आज जनकपुरे अधिक सुहावै ।
सुन्दर मौर सीस चहुँ वन्धुन निरखत चहुँ फल पावै ॥
आज० ॥ १ ॥
अवध-लला मिथिलेश-ललीकी छवि मोरे मन भावै ।
आज० ॥ २ ॥
हंसस्वरूप कौशलकिशोरको नयनन अतिथि बनावै ।
आज० ॥ ३ ॥

युगल चरण कहँ उपमा दीन्ही कवि कमलनके संग ॥ ध्रुव ॥
कमलहि कोमलता इतनी कहँ नखमणि नहिं तेहि अंग ।
युगल० ॥ १ ॥
कमलाश्रित कहँ प्राण जात हैं प्रातहि भख गजराज ।
चरणाश्रित निर्भय सुख पावैं डसै न काल-भुजंग ॥
युगल० ॥ २ ॥
सन्ध्या देखि कमल मुरझावैं ये मुरझैं न कभी ।
तीन काल प्रफुलित जेहिं देखिये चरण सुअंग सुरंग ॥
युगल० ॥ ३ ॥
कमल-गंध सर तीरहि फैलेहु चरण-गंध तिहुँ लोक ।
कमले-पराग भखै इक भौंरा पदपराग श्रीगंग ॥
युगल० ॥ ४ ॥
हंसस्वरूप भेद भल दीसत चरण कमल दुहुँ माहिं ।
सरे पैठे सरकमल लहै यह लहै न बिन सतसंग ॥
युगल० ॥ ५ ॥

—※—

जोहत हूँ आली बटिया मोहनकी, अँखियां पिरानीं
सुधि बुधि मिलि धूरि री ॥ ध्रु० ॥
चैनन आवै चित विरह सतावै मोहि, कुसुमकली लागें
जैसे तीखी सूली री ॥ जोहत० ॥ १ ॥
अबलनि योग लिख्यो ऊधो कैसी बात

कैसे करूँ मैं तो कान्हा सँग भूली री ॥ जोह० २ ॥
आयो ऋतुराज साज सकल समाज ।
आज बेला चमेली फूले फूले फूल जूही री ॥
जोहत० ॥ ३ ॥
हंस सँदेसो उनते कहियो बुझाय ऊधो ।
काहूको रखैया कोऊ, मेरो तो है तूही री ॥
जोहत० ॥ ४ ॥

—⊛—

फागुन रंग अबीर गोकुल खेलत एक अहीर ॥ ध्रुव ॥
बांये लिये ग्वाल बाल सँग दायें श्री बलबीर ।
गोकुल० ॥ १ ॥
दुहुँ कर लिये कन्चन पिचकारी बोरत सकल शरीर ।
गोकुल० ॥ २ ॥
मारत खींच डोलची रँगकी कान्हा अति बेपीर ।
गोकुल० ॥ ३ ॥
हंसस्वरूप सँग फाग मचावत झोली भरे अबीर ।
गोकुल० ॥ ४ ॥

—⊛—

+ माधव आयो न आयो × माधव । ध्रु०
बेली लगति अकेली उनबिन जुही गई कुम्हलाय ।

+ ऋतुराज × ब्रजराज

कोयल कूक लगति है तीखी चातक धुनि न सुहाय ॥
माधव० ॥ १ ॥
देखि न जाय रसाल मंजरी किशलय अग्नि समान ।
मौलसरी सब मौलिगई हैं फीको लगत सुर तान ।
माधव० ॥ २ ॥
चैत चांदनी देखि चैन नहिं आवत हिय अकुलात ।
टपकत नैन रैन बीतति है दिवस जात बिलखात ।
माधव० ॥ ३ ॥
कैसे करूँ कहूँ कहा केहीं विधि निठुर श्यामकी रीति ।
ना जानूँ केहि गुरु पहँ सीखेउ मुख देखेकी प्रीति ।
माधव० ॥ ४ ॥
कर मींजत पछतात हंस अब ऋतु बसन्त चलिजाय ।
मधुपुर जाइ पकडि पद-पंकज लावहु श्याम मनाय ॥
माधव० ॥ ५ ॥

—❀—

आजु सखि मोहन देखिबे योग ॥ ध्रुव ॥

कछुक अनोखी छबि सुनियत हूँ कहत गांवके लोग ।
आजु० ॥ १ ॥
श्याम कपोल गुलाल लाल सँग मनहु सांझ अरुणाई।
अधर बिम्बफल नासा शुकने मानहु लोल चलाई ॥
आजु० ॥ २ ॥

लटकि लटुरिया कुण्डल उरझी उपमा नहिं कहिजाय ।
रविकर निकर सघन घन मानो कछुक २ दरसाय ॥
आजु० ॥ ३ ॥
ललचते नयन चहत टुक देखन मूरति परम अनूप ।
कौन घरी करिहैं विधिना जब निरखै हंसस्वरूप ॥
आजु० ॥ ४ ॥

फँसिगयो दीन मन मीन प्रीतिकी वंसी । ध्रुव०
गैया चरावत मैंने देखी लिये लकुटिया हाथ ।
पाछे पाछे बछडे डोलें सखा सुदामा साथ ॥
फँसि० ॥ १ ॥
एक सखी तहां दौडी आयी दधि मटकी लिये शीश ।
बोली राधेको सर्प डस्यो है तोहि बोलवत जगदीश ॥
फँसि० ॥ २ ॥
तीनलोकके वैद्य कहावत भव-रोगनके हर्ता ।
चलहु हरेहु अब पीर वीरकी सबके कर्ता धर्ता ॥
फँसि० ॥ ३ ॥
सुनि मुसकाय चले तेहि अवसर झोली लैली कांध ।
वैद्य बने त्रिभुवनके स्वामी टेढी पगिया बांध ॥
फँसि० ॥ ४ ॥
पढिके सावरमंत्र सांवरे राधा मुख दी फूंक ।

ऐसे हरत तुम व्यथा जगत्‌की हंस करी क्या चूक ॥
फँसि० ॥ ५ ॥

—※—
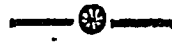
कौशलकिशोर बन चैळे कसे जिवेंगे हम ।
उनके बिरहमें जहरके प्याळे पिवेंगे हम ॥
अच्छा हो गर वो हमको भी ळेळेवें अपने साथ ;
खंजरसे बनी चाक जिगर कर मरेंगे हम ॥
रोवेंगे रात दिन व कराहेंगे सुबह शाम ।
सरयूके जलमें डूबकर आखिर मरेंगे हम ॥
हंसस्वरूप रूप मनोहरके ध्यानमें सब छोड छाड ॥
मुलके अदमको चलेंगे हम ।

—※—

देखहु एक नजरिया रे मेरे बनवारी गिरिधारी । ध्रुव०
करजोरे मैं कबकी खडी हूँ क्यों नहिं लेते खबरिया रे॥
मेरे० ॥ १ ॥
तन मन धन सब तुमपर वारेहुं जानत शहर बजरिया रे।
मेरे० ॥ २ ॥
गणिका गिद्ध अजामिल तारे तारी भिलनी शबरिया रे॥
मेरे० ॥ ३ ॥

सबकी सुधि तुम लेत मुरारी हमरी काहे बिसरिया रे ॥
मेरे० ॥ ४ ॥
दीनदयालु दयाके सागर हंसके स्वामी सांवरिया रे ।
मेरे० ॥ ५ ॥

—❀—

बलवीरके गोरे गातपै नील वसन सोहै ॥ ध्रुव ॥
मोरमुकुट टेढी, भउहैं टेढी, कटि टेढीकी शोभा मन मुनियनको मोहै ॥ बलबीर० ॥ १ ॥
मुखपै बंशी टेढी, सूधो करत कुश्चक भाल, ताको जो एक पलक जोहै ।
बलवीर० ॥ २ ॥
लटकैं कपोलनपै लट टेढी, लड़रियनकी मनहुं अलिमाल कंज प्रेमपुंज पोहै ॥ बलवीर० ॥ ३ ॥
हंसस्वरूप अस टेढो जब चितवै तोहि, फिर टेढो तोहि चितवै अस जगमें कहुं कोहै ॥ बलवीर० ॥ ४ ॥

—❀—

हमसे रूठिगये मनमोहन, ना जानूं क्या तकसीर भयीरे ।
बालेपनमें प्रीति लगायी, गलबहियां सँग डारे लयीरे ।
हमसे रूठि० ॥ १ ॥
खेल्यो खायो हँस्यो हँसायो, सो सब निपट विसार दयीरे ।
हमसे रूठि० ॥ २ ॥

गावत गीत गतै गति गुणि गुणि गलियन गोकुल गैयां।
पुनि० ॥ ३ ॥
हंस हुलसि हिय हरिपदपंकज हेरि हेरि हरषैयां।
पुनि० ॥ ४ ॥

—※—

ज्योतिषी शकुन विचारो एक ॥ ध्रुव ॥
हरि बिनु कछु जाचूं नहिं काहुहिं निबहैगी यह टेक।
ज्योतिषी० ॥ १ ॥
जन्मपत्रिका फटी हमारी दीमक लीनी चाटि।
लग्न योग तिथि वार न दीसत बीच कुंडली फाटि ॥
ज्योतिषी० ॥ २ ॥
नूतन पत्री लिखो हमारी सिद्धियोग धरु साधि।
ऐसो जप कोउ देहु बताई मिटै आधि अरु व्याधि ॥
ज्योतिषी० ॥ ३ ॥
सोइ पल सोइ क्षण गिनहु अँगुरियन जेहि हरि मो ढिंग आव।
कर-कंगन तोहिं देउँ बिदाई जो अस बनै बनाव ॥
ज्योतिषी० ॥ ४ ॥
हंसस्वरूप कछु सूझत नाहिंन क्या विधि लिखेउ ललाट।
कल्प समान दिवस बीतत है हरिकी जोहत बाट ॥
ज्योतिषी० ॥ ५ ॥
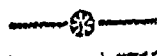
—※—

कोउ बिरला जानत प्रेमको भेद।
ढाई अक्षर सबैन जानत पढ़िलीनं सब वेद॥
कोउ० ॥ १ ॥

कछु २ भारो भौंरा जानत कछु २ जान पतङ्ग।
एक बँधावत अंग २ निज एक जरत पिय सङ्ग।
कोउ० ॥ २ ॥

मीनकी प्रीति सराहत कोउ २ छूटत जल मरिजाय।
विधु सँग प्रीति सराहिये ÷ चककी चितवत रैन सिरायं॥
कोउ० ॥ ३ ॥

स्वाती सङ्ग प्रीति चातककी बुध जन करत बखान।
फूटैं आंख चोंच भरिजावैं तउ न पिअत जल आन॥
कोउ० ॥ ४ ॥

हंसस्वरूप जब उदय प्रेमरवि नेम चन्द्र मुरझाय।
हरिपद प्रीति किये सुनु सन्तो उरकी लट सुरझाय॥
कोउ० ॥ ५ ॥

÷ सभी जानते हैं, कि चकोर अग्नि खाता है पर रसिकोंको जानना चाहिये, कि उसके अग्नि–भक्षण करनेका मूल उद्देश्य यह है, कि वह चन्द्रमासे अधिक प्रीति रखता है इसलिये वह चाहता है, कि जब मैं अग्नि खानेसे जलकर भस्म होजाऊँगा और वह भस्म जब शिवजीके मस्तकपर चढ़ायी जावेगी तो वहां मैं अपने प्रीतम चन्द्रमासे जा मिलूँगा।

इक्षुदण्ड सम पेरै तनको तब सोइ रसहिं चखै ॥ ध्रुव ॥
जिहि रसके हैं रसिक सन्तजन बिरला कोउ लखै।
इक्षुदण्ड० ॥ १ ॥
चातक चोंच टूट जिहिं कारण अग्नि चकोर भखै।
इक्षुदण्ड० ॥ २ ॥
दीपक जलत पतंग देखियतु भौंरा भस्म भखै।
इक्षुदण्ड० ॥ ३ ॥
नेह कसोटी कसे खरो जो परखैया परखै।
इक्षुदण्ड० ॥ ४ ॥
परम प्रेम-दुख दुखै हंस ज्यों दूजो दुख न दुखै।
इक्षुदण्ड० ॥ ५ ॥

—❀—
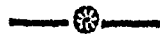
गुरुजन वाक्य झूठेहीं दीसत, क्यों कवि लै तिहि पुनिपुनि पीसत।
कोउ कह जिहिंपर जाको नेह, सो तेहिं भेटत नहिं सन्देह ॥
कोउ कहै जे दोउ प्रीतम प्यारे, एक क्षण विलम्बसकत नहिं न्यारे।
कोउ कह प्रेम आकर्षण बडो, खींच अवश चह जितनो अडो ॥
जो नहिं यह सब झूठ फतूर, तो क्यों मोहन अटकेउ दूर।
जा बिनु मैं निशि वासरे मरूँ, तेहि हिय कछु नहिं मैं क्या करूँ॥
चातक चह स्वाती नहिं चहै, चकक्की प्रीति चन्द्र नहिं गहै।
धिक् धिक् धिक् तेहि गावँकी रीति, जहँ ऐसी एकंगी प्रीति।
होहु रुष्ट जनि ब्रजकी बाला, कहत हंस मिलि हैं गोपाला।

यमुने! तू क्या सोही है ॥ध्रुव॥

जाके तट शुभ विशालपै, खेलत रहँ श्रीगोपाल।
सङ्ग लिये ग्वाल बाल, डरते देखि जाहि काल॥
यमुने० ॥ १ ॥

लहरत शीतल समीरे, गावत कोकिल कमीर।
टेरत रहँ मुरली वीर, चोरत गोपिनको चीर॥
यमुने० ॥ २ ॥

बाजत रह्यो सुर मृदङ्ग गाजत जलतरङ्ग।
राजत रहे विविधि रङ्ग बाहत उमङ्ग अङ्ग॥ यमुने० ॥ ३

नाचत ब्रजराज राज, रांचत सब सुखसमाज।
बांचत नहिं लोक लाज, हंसहिं निवाज आज॥
यमुने० ॥ ४ ॥

—※—

देखत सोइ कमलनैन सुनत ताको मधुर बैन जानि सकल सुख को अयेन चरण चित्त दयऊ ॥ १ ॥
साजि सकल प्रेम साज त्यागदयी लोकलाज काजको अकाज होत शंक नाहिं भयऊ ॥ २ ॥
प्रीतमकी प्रीति नयी निबहत अति कठिन भयी सुधि बुधि सब भूलि गयी धीरज चलिगयऊ ॥ ३ ॥
हंसस्वरूप रूप सुन्दर अतिही अनूप निरखत मधुवनके भूप सकल दुःख नशऊ ॥ ४ ॥

ऊधो तुमने कैसे ऐसी पाती लायी ॥ ध्रुव ॥
पाती पढत मोरी छाती फटल दयी ।
जिय आवत अब मरिये जहर खायी ॥ ऊधो० ॥ १ ॥

अबला अबल जाति भीरु अति,
ताको योग लिखत न शरम आयी ।
मैं जाना कान्हा सहजसनेही निकसा यह तो परमनिठुर मायी ॥
ऊधो० ॥ २ ॥

ऐसी पाती फेर न लइयो, उनसे इतनी मेरी कहियो जायी ।
हंस कहत सखि धीरज धरिये काहू दिन कान्हा तोसों मिलैं आई ॥
॥ ऊधो० ॥ ३ ॥

—※—
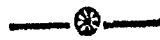
जबै सुधि आवत लाल तिहारी हिय उमडत नयनन
भरि वारी ।
श्वासलेत करते हियरो अरु चढत तप्त स्वासा दुइ चारी ॥
मौनहोय देखत एकटक उत जितहै गये मधुबन बनवारी ।
कर मींजत पछतात विविधि विधि कह राधे सुनु ललिता
प्यारी ॥

मोहन महाकठोर निठुरहिय त्यागिगये विरहिन व्रजनारी ।
चीर करेजो रुधिर काढि अब लेखनि करि कमलनकी
डारी ॥

कहत हंस पाती इक लिखिये अपने जियकी बिरहव्यथा री

सखि हे अब एक शकुन विचारो ।
लेहु बुलाय जोतिषीजीको कर कंकरण देडारो ।
आवें कान्ह तो प्राण राखिये अवधि तलक री प्यारी ॥
नहिं तो छुरी मारि करेजो होऊ देहतें न्यारो ।
सही न जात विरहकी ज्वाला उमड २ हिय आवै ॥
+ करपट नित भीजो हि रहत है नयन अश्रु भरि लावै।
कोयल कुहक पपीहा पी-पी अधिकहि अधिक सतावै ॥
ऋतु वसन्त मोहि भावत नाहीं वर्षा नाहिं सुहावै ।
हाय यत्न कछु औरेन सूझै काह कहिये का करिये ॥
कहत हंस हरिचरण ध्यान धरि जहर खाइ अब मरिये ॥

—❀—

सकल अंग कोमल से हरिके, हिय क्यों भा पत्थरको ।
कर कपोल कंज पल्लव जनु अधरन बिंवा फरेको ॥
हिय क्यों० ॥ १ ॥
संबुल जटा केस घुंघरारे सुन्दर राधावरको ।
नरगिस-पुष्प नयन रतनारे मन वस कर सुरनरको ॥
हिय क्यों० ॥ २ ॥
पीर परायी जानत नाहीं बोध न दर्द जिगरे को ।
कहत हंस अबहू तो पसिजो खा माखन घरघरको ॥
हिय क्यों० ॥ ३ ॥

+ करपट = रूमाल

नगर लोग पूछैं री सखिया क्यों झुरवत तव गात ।
॥ टेक ॥
छीण शरीर शुष्क अधराधर मुख नहिं आवत बात ।
री सखिया० ॥ १ ॥
काह कहूँ केहि काह सुनाऊँ कहन सुनन न सुहात ।
री सखिया० ॥ २ ॥
जो बीतत मेरोइ मन जानत औरहिं कछु न लखात ।
री सखिया० ॥ ३ ॥
कहत हंस जबसे बिछुडे वे श्याम-चरण-जलजात ।
री सखियां ॥ ४ ॥

—※—

सोइ दिन मंगलमय जानहु रे ज़ादिन हरि आवैं तुअ भवना ।
रत्नसिंहासन बैठि हँसैं वे करेलिये ब्यजन करूं मैं पवना ॥ १ ॥
मन्द-मन्द मुसक्यान कपोलन जनु रविकर निकर प्रभात ।
बाण धनु करलिये सोहैं ढिंग जाते बधेउ लंकपति रवना ॥ २ ॥
चाहे दान करहु तुम कोटिन चाहे तीरथ करहु हजार ।
बिना प्रेम हरि प्रकट न दीखैं चाहे करहु सहस लख हवना ॥ २ ॥
हंसस्वरूप प्रेमव्रत संयम योग अनेक प्रकार ।
बिनु हरिचरण नेह खेह सम जरहिं जाइ चूल्हे जस लवना ॥ ४ ॥

—※—
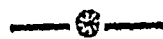
मोहन आओ-आओ मोरे ढिंग आओरे ॥ ध्रु० ॥
कान सुनत हूँ तुमरे गुन नित पतितनके ढिंग जाओरे ।
मोहन० ॥ १ ॥
मोसम पतित कि दूजो कोऊ फिर क्यों विलम लगाओरे ।
मोहन० ॥ २ ॥
गोकुल नाचि२ देवनकहं निज माया भरमाओरे॥ मोहन० ॥३॥
हंसस्वरूप नचेऊ बहु जगमें अब तुम संग नचाओरे ॥
मोहन० ॥ ४ ॥

—०—

काहूसों प्रेम न करिये । बिन मारे मौत न मरिये। ध्रुव
प्रीतमने शूल तेधारा । हिय मांझ खैंच कर मारा ।
फिर घोर मूर्छा आयी । नहीं छूटत बिना कन्हायी ॥
काहू० ॥ १ ॥
चह कारोसे डसवालो । गर्दनमें फांस फसालो ।
तन सागर मांझ डुबालो । पर प्रेमसे जान बचालो ॥
काहू० ॥ २ ॥
दीपक संग कियो पतङ्ग । जरिगये तासु सब अङ्ग ।
रागनि संग कियो कुरङ्ग । नहिं रह्यो कबहु सो चङ्ग ॥
काहू० ॥ ३ ॥
चन्दा संग कियो चकोरा । चितवत इकटक भइ मोरा ।
करि प्रेम हंस पछतावे । अब प्रीतम तजि कहँ जावे ॥
काहू० ॥ ४ ॥

चलो २ तुम्हारी देखी। मुँह देखी प्रीति मैं लेखी ॥
छल कपट तुम्हारी रीती। गोकुल ग्वालिनपर बीती ॥
कहिगये आऊँगो परसों। तिहिं बीतिगये तहँ बरसों।
स्तुति तुम्हरी उन गायी। हैं परम कठोर कन्हायी ॥
मैं हंसे तेरे बिन तरसों। कहियो उन राधाबरसों ॥

—❁—

नाथ अब कैसे निठुर भये॥ ध्रुव
कहत रहे साथी सब दिनके सोउ अब बिछुड़गये ॥
नाथ० ॥ १ ॥
मुख फेरत कछु बोलत नाहिन नैन न हेरत हाय।
जो जनितउँ प्रभु अस कठोर चित मरिजइतउँ विषखाय ॥
नाथ० ॥ २ ॥
अब तकसीर क्षमा करु मोहन होहु न अस बेपीर
व्याकुल चित्त धीर नहिं आवत नयन ढरत नित नीर ॥
नाथ० ॥ ३ ॥
गाढ परे धावत दुखियन पहँ अस तव बिरद गँभीर
कैसे सो तुम बिसरिगये हो हंसा मानस तीर ॥
नाथ० ॥ ४ ॥

—❁—

जागिये मेरे प्यारे कुण्डलवारे ॥ ध्रुव ॥
घट २ बासी अलख अविनाशी बहुबिधि सृष्टि सँवारे।
जागिये० ॥ १ ॥

अरुण उदयकी देखु ललाई रवि कर-जाल पसारे।

जागिये० ॥ २ ॥

बन-बन पत्ती शब्द करत हैं खोलु नयन रेतनारे।

जागिये० ॥ ३ ॥

भांति २ केमलन सर विकसे भ्रमर करत गुञ्जारे।

जागिये० ॥ ४ ॥

तेरे दरशको श्याम लाडिले शंभु खडे हैं द्वारे।

जागिये० ॥ ५ ॥

दोउ कर जोड़े ठाढ जगावत हंस नयनके तारे।

जागिये० ॥ ६ ॥

—❀—

देखो सखि श्याम-गात अद्भुत छबि बनियां ॥ ध्रु० ॥

मन्द २ मुसकरात, मानो रविकरे प्रभात,
ग्वाल बाल संग साथ, खेलत घरिनियां ॥

देखो सखि० ॥ १ ॥

सोहत कपोल गाल कुंडल अमोल लोल,
मनहुँ नीर नीरद महँ इन्द्रधनुष तनियां ॥

देखो सखि० ॥ २ ॥

युगल नैन अति विशाल, अधर दोऊ लाल लाल,
रदन-पांति झलकत जनु हीरेकी कणियां।

देखो सखि० ॥ ३ ॥

केशव कच कटि प्रमाण केहरि अहि करत मान,
मारको बितान देखि शंभु २ भनियां ।
देखो सखि० ॥ ४ ॥
श्याम अंग लसत धूर मदन मनहु चूर चूर।
नील व्योम मांह छिटक चन्द्रकी किरणियां ।
देखो सखि० ॥ ५ ॥
ठुमुक २ चलत चाल, देखत लज्जित मराल,
मधुर २ शब्द पांव बाजत पैजनियां ।
देखो सखि० ॥ ६ ॥
इत उत तकि भागिजात, सघन कुंजमँह छिपात,
विविध भांति खेलत हैं खेल अँखमिचनियां ।
देखो सखि० ॥ ७ ॥
नेत्रसुखद छवि अनूप, निरखत हंसस्वरूप,
श्रवणसुखद सुनत सदा श्याम मृदु वचनियां ।
देखो सखि० ॥ ८ ॥

—⊛—

मेरी तेरी प्रीति नयी लागी रे मनमोहना ॥ ध्रुव ॥
सोईथी मैं मायाकी सेजेरिया सुनि मुरलीधुनि जागी रे मनमोहना।
मेरी० ॥ १ ॥
अपनी कृपा मुदरियासे मेरी तृष्णा मुदरिया बदलले रे मनमोहना।
मेरी० ॥ २ ॥

सत्य सिंदुरिया मांग लगादे भक्ति चदुरिया ओढ़ादेरे मनमोहना।
मेरी० ॥ ३ ॥
हंसस्वरूप हिय ताप बुझादे उरझी लट सुरझादेरे मनमोहना।
मेरी० ॥ ४ ॥

—※—

हरि बिनु कैसे जीवो हे कुञ्जनके कीर ॥ ध्रुव ॥
बिन बंसी कैसे गावो जी तुम गान गँभीर ॥ हरि० ॥ १ ॥
को जल घट भरिदै हैं जी यमुनाके तीर ॥ हरि० ॥ २ ॥
अग्नि समान तपावे जी शीतल मन्द समीर ॥ हरि० ॥ ३ ॥
हंसहिं अब विसरायो जी आखिर जाति अहीरे। हरि० ॥ ४

—※—

मुरलीवालेसे प्रीति लगाय आयीरे ॥ ध्रुव ॥
प्रेम पैठ जब देखी विन कौडीके विकाय आयीरे।
मुरली० ॥ १ ॥
प्रेम गली अति सांकरि सजनी तामें सीस कटाय आयीरे।
मुरली० ॥ २ ॥
हंसस्वरूप प्रीति जनि कीजो मैं कारि धोखो खाय आयीरे।
मुरली० ॥ ३ ॥

—※—

सावनवाँ बरसत है चहुँ ओर ॥ ध्रुव० ॥
लरजत हिया सघन घन गरजत पुरवैया झकझोरे।
सावनवाँ० ॥ १ ॥

सघनव्योम बिच बलत बलाका बोलत दादुर मोर ।
सावनवाँ० ॥ २ ॥
बिन हरि बूंद बाण सम लागत विरह करत बरजोर ।
सावनवाँ० ॥ ३ ॥
कर मींजत पछतात हंस नहिं आये नन्दकिशोर ।
सावनवाँ० ॥ ४ ॥

—❀—
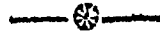
हमरी अरज नहिं मानत मधुबन कुँवर कन्हाइ ॥ ध्रु० ॥

लिखि २ पतिया पठावति बिरहा लिखियो न जाइ ।
हमरी० ॥ १ ॥
पतियां लिखति छतिया फाटति नैनन नीर बहाइ ।
कैसे लिखूँ हियाकी दरदिया री कागद गलि २ जाइ ॥
हमरी० ॥ २ ॥
मेघवा रगजे बिजुरी चमकै री दादुर शोर मचाइ
सारङ्ग गावे जनि मोरवा रे तोहि रामदुहाइ ॥
हमरी० ॥ ३ ॥
बीर बटोही मेरे भैया हो बिनती करूं पडूं पांइ ।
हंस सँदेशो लेते जइयो हरिको दीज्यो सुनाइ ॥
हमरी० ॥ ४ ॥

—❀—

जब हरि अंजन नैन सँवारे ॥ ध्रुव ॥
जनु युग खंजन विषके प्याले पिवत भये मतवारे ।
जब हरि ॥ १ ॥
सघन रैन अँधियारी पायी मानहु दुइ बटमारे ।
बिचरत देखत प्रेम पथिक जहँ तहँ घायल करडारे ॥
जब हरि० ॥ २ ॥
देखियतु नेह सरोवर फूले युगल कंज कजरारे ।
हंस मधुप मकरन्द पिवत छवि सुधिबुधि सकल बिसारे ।
जब हरि० ॥ ३ ॥
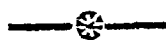
आजु अनर्थ सुनोरी आली मोहन मधुपुर जैहैं री ॥ ध्रुव ॥
गोकुल ग्राम विसारि चले अब लौट फेरि नहिं ऐहैं री ॥ आजु० ॥ १
यशुमतिके माखन को खैहैं गैया कौन चरैहैं री ।
नित उठि वंशीवट यमुनातट मुरली कौन बजैहैं री ॥ आजु० ॥ २
नन्द बबा बिनु श्याम लाडिले कैसें दिवस बितैहैं री ।
झांझ सकारे अंकमें भरि-भरि यशुमति काहि खिलैहैं री ॥ आजु० ॥ ३
काको कर सरोज गहि गोपिन यशुमति ढिग लै जैहैं री ।
केहिपर श्रीवृषभानुनन्दिनी पुनि २ मान धरैहैं री ॥ आजु० ॥ ४
ग्वाल बाल केहि सखा पुकारि हैं गलबहियां किहि लैहैं री ।
बिनु हरि हंसस्वरूप व्याकुल हिय कर मींजत पछितैहैं री ॥
आजु० ॥ ५ ॥

देखहु चन्दा उदय लियो नभ ॥ ध्रुव

हर्षपियूष पाये प्रसन्नह्वै बनकी कुमुदिनि विकसिगईं सभ ।
देखहु० ॥ १ ॥

विरहिन विरहपयोनिधि बाढेउ भाठा ज्वार चढेउ ।
भरिगे दोऊ नैनपनारे पाटी प्रीति बेलि दीन्ही गभ ॥
देखहु० ॥ २ ॥

चाह चमेली चहुं दिशि चटकी चन्द्रकला चित चाव ।
ऋतु वसन्त मनही मन हरखेउ चैत चांदनी मोहि भई लभ ।
देखहु० ॥ ३ ॥

ऐसे समय शुन्न वृन्दाबन उदासीनता छायी ।
मोहन मीत भये मधुबनमें गोपिन तीत कूबरी सौरभ ।
देखहु० ॥ ४ ॥

"हंसस्वरूप" एक टक लावहु मोहन मुख विधु पूर ।
ह्वै चकोर चख छबि अमृत रस व्याधा काल बाण डारहु
चभ ॥ देखहु० ॥ ५ ॥
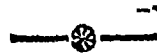
मोको नीके लागे चरण तिहारे रे बंसीवारे ॥ ध्रुव० ॥
पारस परसि लोह कंचनभयो, विकेउ स्वर्णके दाम ।
चरण परसि पवि मुनिपत्नी भई निज पतिलोक सिधारी ॥
रे बंसी० ॥ १ ॥

पारस स्वर्ण करत पै लोहहिं पारस करत न सोयी ।
तव परसे तव रूप होत नर अचरज कोउ निहारे ॥ रे बंसी० ॥२॥
लोहा सोना भा पै जडता भयी न वातें दूर ।
तोहि परसि हरि ! चेतन भे जड यमुना केर किनारे ॥
रे बंसी० ॥ ३ ॥
"हंसस्वरूप" परसि पद-पंकज करहु प्रीति पहुनायी ।
परसेत सकल पीर मेटैंगे प्रीतम प्राणपियारे ॥ रे बंसी० ॥ ४ ॥

—❀—

हरि तव कचकी ❀ मेचकताई ॥ ध्रुव ॥
श्रावण मास घटा पूरित जल जनु चहुँदिशि घिरि आई ।
हरि तव० ॥ १ ॥
ताहि मध्य मुखछवि दामिनि जनु दमकत करत प्रकाश ।
स्वेत-कमल-माला हिय मानो बककी पांति सुहाई ॥
हरि तव० ॥ २ ॥
पावस रूप भयो हरि निरखेउ मन × साँरग अनन्द ।
साँरग गान करत तहँ पुनि २ साँरगधर चित लाई ॥
हरि तव० ॥ ३ ॥
औचट विरह + ह्लादुनी टूटी, पडि बिरहिनके अंग ।
"हंसस्वरूप" नयन जल वर्षा बांचत देत बुताई ॥
हरि तव० ॥ ४ ॥

❀ मेचकताई=कालापन । × सारंग=मोर । + ह्लादुनी=ठनका

मधुसूदन मदन मुरारी मोहन मोसे रूठिगये ॥ ध्रुव ॥
बोलन हँसन मिलन बैठन सँग अब सब झूठ भये ।
मधुसूदन० ॥ १ ॥
कौल कियो आऊँगो परसों बरसों बीति गये ।
अब तरसों बोलन मोहनसों जो चित चोर + लये ।
मधुसूदन० ॥ २ ॥
हौं क्यों दोष देऊं प्रीतमको है मेरी तकसीर ।
चलत सङ्ग मैं गयउ न तहँ पुनि प्राण न जान दये ।
मधुसूदन० ॥ ३ ॥
अब पछताये सरे न कछु यह अवसर चूक कठोरे ।
ना जानू मेरी अरजी कब माधव हाथ लये ।
॥ मधुसूदन० ४ ॥
क्षमा करैओ कहि माधवसों बिनती "हंसस्वरूप" ।
अब आवैं हँसि बोलें मो ढिग छाडैं हठ जो ठये ॥
॥ मधुसूदन० ५ ॥
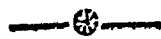
यशोदा टेरत बार २ कोउ लादेरे मेरे युगल कुमार ॥ ध्रुव ॥
एक लाख गैया मैं वाको दूंगी और भरूंगी सोनेके थार ।
कोउ लादे० ॥ १ ॥

+ लये शब्दका अर्थ यहां 'लेवेके' अर्थको जतारहा है ।

चलत लाल करि गयो कौल यह लौटेंगे मा हम कंस मार।
ना जानूँ क्यों विलम्ब लगाये उन बिन सूनो लगत द्वार ॥
कोउ लादे० ॥ २ ॥

की चित लायो ऊखल बन्धन, की चित लाई छड़ियनकी मार।
उनके भोळेपनने भुलादी, उनकी महिमा अपरम्पारे ॥
कोउ लादे० ॥ ३ ॥

हे गोकुलके वीर बटोही जो तुम जैयो यमुना पार।
कहियो उन निर्मोही मोहनते तेरी मैयाको ज़ीवन भयो है भारे।
कोउ लादे० ॥ ४ ॥

"हंसस्वरूप" मधुबन अब चलिये करिये बिनती पुनि एकबार।
जो नहिं मानैं वे दोउ लालन तो जल भुन हो जैये छार।
कोउ लादे० ॥ ५ ॥

—❀—
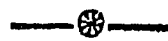
प्रेम मतवाला मेरा श्याम ॥ ध्रुव ॥
मोरमुकुट मकराकृतकुण्डल, सुन्दर वदन मनहु विधुमण्डले।
कटि किंकिणी पग नूपुरवारे बनमाला गल माहँ सँवारे ॥
सखि मोहि औरनते नहिं काम ॥ प्रेम मतवाला० ॥ १ ॥
हिरणाकशिपुके उदर बिदारे, जन प्रह्लादको दुःख निवारे,
गणिका गिद्ध अजामिल तारे, सुनिये यसुमति नन्ददुलारे,
"हंस" रटत तोहि आठो याम ॥ प्रेम मतवाला० ॥ २ ॥

एरी सखी मैं तो कासों कहूं कांध ऐसो निठुर मेरी सुधि ना लई री। स्थाई।
कहत "हंसस्वरूप" प्रीति ऐसी पडे कूप अब तो सहै कौन विरह ज्वाल कठिनई री। स्थाई।

—⊛—

कन्हैया काहू कारोके समतूल, वाके डसे गारुडी लगंत है या करै न मंत्र कबूल ॥ ध्रुव ॥
वाको विष मुख मांह बसत है या सर्वांग समूल।
वाको वास बिलनिमँह देखिअत या हियराके कूल ॥ कन्हैया० ॥ १
झाड फूंक कछु मानत नाहीं चढत बढ़त अति शूल।
जबसे डसेउ "हंस" कहँ सजेनी सुधिबुधि गयि सब भूल ॥ कन्हैया० ॥ २ ॥

—⊛—

+ सूनी लगत आली गली कुंजवनकी बंशी बजत नाहिं कहु कहां जाऊंरी ॥ ध्रुव ॥
गैया चरति नाहिं, बछडे पिवत नाहिं, बहत ना समीर धीर कैसे कहँ पाऊंरी ॥ सूनी० ॥ १ ॥
ईंधन मँगाओ आली वृन्दाबनके वृक्षनको यमुनाके विषम तीर चिता एक रचाऊँरी ॥ सूनी० ॥ २ ॥
"हंस" हिया उठत हूक विरहानल देहु फूँक श्यामचरण ध्यान धरि शीघ्र जरि जाऊँरी ॥ सूनी० ॥ ३ ॥

+ इसको जाजवन्तीके ध्रुपदमें गाना अच्छा होगा।

बैरि २ फाटति छतिया लिखत बिरहकी पतिया
अरे सुनु ऊधो हो प्राण निकसियो न जाय ॥ ध्रुव
हमरासे दगा करि गैले मधुबनवा रामा ।
अरे सुनु ऊधो हो लौटि ना चितवे यदुराय ॥ अरे० ॥ १
नेहे सरोवर एक अद्भुत कमलवा फूले ।
अरे सुनु ऊधो हो ताहि पर भौंरा लुभाय ॥ अरे० ॥ २
सरवरा सुखाईगैले कमल कुम्हलाई गैले ।
अरे सुनु ऊधो हो सिरधुनि भौंरा पछताय ॥ अरे० ॥ ३
देखि एक अचरज बतियां हरि हिया हारको मोतिया ।
अरे सुनु ऊधो हो "हंसा" चुगत चितलाय ॥ अरे० ॥ ४

—❀—
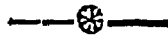
कन्हैयाके भैया वैरी भैले हो रामा । ध्रुव
जबसे गइले अकेलि करि गइले सुधिबुधि हरि ले गइळे हो रामा ।
कन्हैया० ॥ १ ॥
जो मैं जनितौ मोहि बिसरइहैं, यमुनाजल धसि मरितो हो रामा ।
कन्हैया० ॥ २ ॥
नन्दमहर फुलवरिया, कदमकी कांची डरिया कोइलिका दो बोले
हो रामा ॥ कन्हैया० ॥ ३ ॥
जबसे हरि कइळे गमनवा, यशुमतिके सूनो अंगनवां, "हंसा" ठाढ
रोवे हो रामा ॥ कन्हैया० ॥ ४ ॥

क्या कोऊ यतन नहिं लाल मिलनको ॥ ध्रु ॥

निगमागम बहुभांति भनत क्या केवल बुधजन लिखन पढनको।
तीरथ धर्म नेम व्रत संयम केवल पापिन पाप दहनको ॥
क्या० ॥ १ ॥

क्योंरे ज्योतिषी ज्योतिष तेरो केवल अंगुरिन अंक गिननको।
की कबहू सो लग्न बतैहो जामें दर्शन चन्द्रवदनको ॥
क्या० ॥ ३ ॥

रे कागा तोहि दूध पिलाऊँ लाऊ कंचन होठ मढनको।
रत्नजटित पायन दूं झुन्झुन जो तू उचरें हरि आवनको ॥
क्या० ॥ ४ ॥

विषकी डली खाय अब देखूं लूं समझा मैं अपने मनको।
की कहु जाय धसूं सरिता जल, की कूदूं हिम माहिं गलनको ॥
क्या० ॥ २ ॥

अरे "हंस" तू व्याकुल हो जनि सीखहु कछु दिन धीर धरनको।
कबहूँ तो श्याम तोहि ढिंग ऐहैं भरि हैं प्याला प्रेम पिवनको ॥
क्या० ॥ ५ ॥

—※—
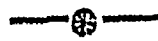
सखी सब आशा धूल मिली॥ ॥ध्रु०॥

मैं जानी नित मोहि मिलेगो कान्हा कुञ्जगली।
पै अब वंसी बाजत नाहीं ताननपुंज भली ॥ सखि० ॥ १

जो सुनि निज प्रवाह जल यमुना तिलभर नाहिं हिली ।
सो सब स्वप्न भयो गोकुलको हरिमुख कुन्दकली ॥
सखि० ॥ २ ॥
दोख चिरौंजी दधि माखन अरु मिसरी खांडडली ।
हरिमुख डारन की अभिलाषा मनते जात टली ॥
सखि० ॥ ३॥
हंस देखु अहिरिन ह्वै बौरी घरते निकलि चली ।
देखत नहिं हरि कहँ यमुनातट विरहिन जात जली ॥
सखि० ॥ ४ ॥

—❀—
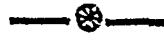
बाईं भुजा फरकत सखि आज ॥ टेक ॥
अब मोहन आयोहि चहत है नन्दलला ब्रजराज । बाईं० ॥ १ ॥
दधि बेचन गोदूहन छाडहु छाडु सकल गृह-काज ।
सब सखि चलि यमुनातट बैठहु आरति मंगल साज ॥ बाईं० ॥ २ ॥
हीरा मोती लाल पिरोजा पन्ना औ पुखराज ।
अंगनि अंग संवारि लेहु सब तजि गुरुजनकी लाज ॥ बाईं० ॥ ३ ॥
जो एहि दिशि आवत नहिं दीखे गोपिनको सिरताज ।
हंसस्वरूप धसि मरियो यमुनजल जीवनको नहिं काज़ ॥ बाईं० ॥ ४

—❀—
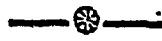
बहु दिन द्वार खडो अहि आशा श्याम मिलेंगे मोहि ।
द्वारपालने शब्द सुनायो प्रभु नहिं चाहत तोहि ॥ बहु दिन० ॥ १

निकसि जाहु तुम शीघ्र द्वारते नहिं तेरो कछु काम ।
शीश कटाय भूमि पटकै जो ताहि मिलेंगे श्याम ॥ बहु दिन० ॥ २
काटि लेहु तुम शीश पहरुआ पहुंचावहु हरि पास ।
नयनन दरश दिखाइ मनोहर करिदीजो तेहि नाश ॥ बहु दिन० ॥३॥
'हंसस्वरूप' नाम मिटि जावे झञ्झट सब टलिजाय ।
इतनहु पर कहुं खीझ न जावे उठि न कतहु चलिजाय ॥
बहु दिन० ॥ ४ ॥

लिपटी है लट जटाओंकी सुन्दर सुहावनी ।
चहुँ ओर जिनके बहरही है गंग पावनी ॥
फिर वह विशाल भाल चन्द्रजाल लाल लोल ।
आंखें खुली हैं चारु मारमद लजावनी ॥
विषधर लिपट रहे हैं जटाजूटमें जहां ।
वृश्चिककी बेंदी देखिये दुखकी नशावनी ॥
बिनती यही है चरणोंमें "हंसस्वरूप" की ।
मिलजावे वह छबीली छबि मनकी भावनी ॥

केशव कबहु तो कृपा करो ।
मन मलीन पापमय माथे पदरज कबहुँ धरो ॥ केशव० ॥
मुख-सरोज चन्द्र पूरण पै चंचल चित्त चकोर ।
इकटक लाये बीती उमरिया मोहि नाहिं बिसरो ॥ केशव० ॥ १

दीन दुखी चिन्ता चक्कीमहँ पिस २ ह्वैगयो चूर ।
हाड मांस सब भस्म भयो अब विरहा नलहिं जरो॥ केशव०॥ २
कहत लजात नीच निज करणी मुख नहिं आवत बात ।
पदपंकज पावनकी आशा अबहू तो बांह धरो ॥ केशव० ॥ ३
नीच ऊँच उत्तम मध्यम अब जाय पड़ू जेहि योनि ।
"हंसस्वरूप" रूप माधुरि तव हियते नाहिं टरो ॥ केशव० ॥ ४

—❁—
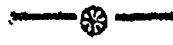
❁मोकहँ काहे विसारे हे मेरे मनके मीत ॥ ध्रुव ॥
कौन गुरू सिखलायीजी मुँह देखी मीत ॥ मोकहँ० ॥
मैं चाहो तुम नाहिं चहो धिक ऐसी रीति ॥ मोकहँ० ॥
जात पांत कछु नाहिंन तुम सब भांति अतीत ॥ मोकहँ० ॥
"हंस" दुखी कब करिहोजी तुम परमपुनीत ॥ मोकहँ० ॥

—❁—

मोहन मधुपुर छाये री करिये कौन उपाय ।
बदरा बरसु जनि गोकुल, बरसहु मधुबन जाय ॥ मोहन ॥
तीन लोकके ठाकुर जो सब देवन राय ।
तिन कैसे कौल कियो झूठो अचरज लखियो न जाय ॥मोहन॥
रैनि अँधारी भदउआकी देखि जिया घबडाय ।

❁ इसको तिलकामोदके लयमें गाना उत्तम होगा ।

मेघवा गरजे बिज्जु लरजेरी सो कछु मोहि ना सुहाय ॥मोहन॥
हमरी पीर सुनइयो हे ऊधो गोपिन कह बिलखाय।
"हंसस्वरूप" दरस देवें यह पतिया लिखें यदुराय ॥मोहन॥

—६—

जो ऊसर बीजहिं त्यागे, पछतावे फिर वह आगे।
आकाश फूल नहिं लागे, जो जागा सो नहिं जागे॥
'हंसा' तोहि रामदोहाई, हरिनाम भजहु मनलाई ॥ ५ ॥

जो खेले कपटी पाशा, ताते तुम रहहु निराशा।
मत पड़ो द्वन्द्वके फांसा, यां दिना चारिको वासा॥
'हंसा' तोहि रामदोहाई, हरिनाम भजहु मनलाई ॥ ४ ॥

सीमल सेवत है सूआ, तहँ अन्त उड़त है भूआ।
भज कुन्ती जाकी फूआ, तब जीते जगको जूआ॥
'हंसा' तोहि रामदोहाई, हरिनाम भजहु मनलाई ॥ ३ ॥

मूरखसे प्रीति न लाओ, नहिं अपनो भरम गँवाओ।
सूरतकी सेज बिछाओ, प्रीतमको गले लगाओ।
'हंसा' तोहि राम दोहाई, हरिनाम भजहु मनलाई ॥ २ ॥

अंकम भरि प्रीतम लाओ, सब लज्जा लोक नशाओ।
जहँ नेह मानसर पाओ, तहँ आप "हंस" बसिजाओ॥
'हंसा' तोहि रामदोहाई, हरिनाम भजहु मनलाई ॥ १ ॥

करघा बैठे चरखा कातत बीतगयो बहु काल।
ताना बानी छोडो भाई छोडो पुलिया माल॥
॥ ध्रुव ॥

नरी सूतकी छीजत नाहीं दिन २ दूनी होय।
एक नरी ऊँचो मुख कर दो छूट सकल जंजाल॥
करघा बैठे० ॥ १ ॥

कोउ खासा कोउ मलमल बीने मलमल कर पछताय।
योगी जपी तपी सन्यासी भये विनीत निहाल॥
करघा बैठे० ॥ २ ॥

केतिक सूत मध्यमें अरुझे थान बुनन नहिं पायो।
चरखा पड्यो रह्यो पुहमीपरे लै गयो कालकराल॥
करघा बैठे० ॥ ३ ॥

"हंसस्वरूप" इक चादर बीनी झीनीहूँते झीनी।
रंग चढे नहिं यापै कोई रँगरेजा पामाल॥
करघा बैठे० ॥ ४ ॥
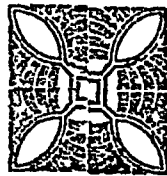
"हंसा तोहि गमदोहाई" और "करघा बैठे चरेखा ...."
ये दोनों भजन पहली मचकी के हैं धोकेसे छूटजानेके कारण इस दूसरी मचकीमें दियेगये हैं।
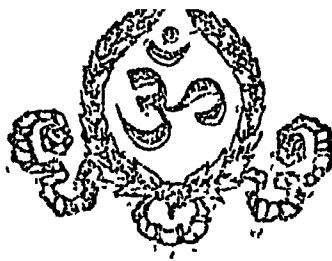
हंसहिंडोल ।

तीसरी मचकी ।

[प्रेम पियूष]

(प्रेमके भेद और उनके लक्षणोंका वर्णन)

दोहा

पिवत प्रेम पीयूषकण, परममत्त ह्वै जाहिं ।
चरणयुगल तिनके नमो जे हरिसखा कहाहिं ॥ १ ॥
हरि हरि हरि कहिके हरूँ, हियके सकल बिषाद ।
धरि धरि धरि आगे धरूँ प्रिय-प्रीतम-सम्वाद ॥ २ ॥
* प्रेम प्रेम सब कहत हैं, प्रेम न जान्यो जाय ।
प्रेमकहानी प्यारकी, विरलहिं पडत लखाय ॥ ३ ॥

---

* प्रेम— " अनिर्वचनीयं प्रेमस्वरूपम् " (नारदभक्ति-सूत्र) अर्थात् प्रेमका स्वरूप वचनसे नहीं कहा जासकता । इस प्रेमका अलौकिक एवं अनुपम सुख ईश्वरकी कृपासे हजारों लाखोंमेंसे किसी एक पुरुषको ज्ञानपडता है । सो प्रेम कैसा है, कि " मूकास्वा-

प्रेम कहो किहिको कहैं, तिहिंको कैसो रूप ।
किहि विधि ताको पाइये, सुन्दर सहजस्वरूप ॥ ४ ॥
× "रसो बै स" इक मंत्र है, वेदन दीन्ह बताय ।
कठिन अर्थ या मन्त्रको, रसिकन लेहु लगाय ॥ ५ ॥
सो प्रभु रसको रूप है, रस आनन्द स्वभाव ।
रसिक रसीले जानहीं, सोइ आनन्द प्रभाव ॥ ६ ॥
एक ठाम जहँ ठहरि कै, अटकि रहे यह चित्त ।
रस पावे एकाग्रता, प्रेम कहत हैं नित्त ॥ ७ ॥
मोहनि मूरति श्यामकी, जब ही सम्मुख होय ।
तहँ चितकी एकाग्रता, प्रेम कहावत सोय ॥ ८ ॥
चार भेद हैं *प्रेमके, रसिकन कहेउ बिचार ।
इक बिभाव अनुभाव पुनि, सात्विक अरु व्यभिचार ॥ ९ ॥

दनवत्" जैसे गूँगा षट्रसका स्वाद वर्णन नहीं करसकता, इसी प्रकारे प्रेम-रसका स्वाद कोई प्रेमी अपने मुखसे वर्णन नहीं करसक्ता ।

× "रसो वै सः" यह वेदका मंत है, जिसका अर्थ यह है, कि सो प्रभु रस अर्थात् प्रेमका स्वरूपही है । फिरे उसी महा प्रभुको वेदने भी शीर्षमंत्रमें "आपो ज्योतिरसोमृतम्" रस और अमृतरूपही कहा है ।

* प्रेम (रस) के चार भेद हैं— १. विभाव, २. अनुभाव, ३. सात्विक और ४. व्यभिचारे । विभाव उसे कहते हैं जो उस रसके प्रकट होनेका मूल कारण हो. इसके दो भेद हैं (क) आलं-

पुनि बिभावके भेद दुइ, बुधजन तहँ कहिदीन।
आलम्बन उद्दीपनो, जानत परम प्रबीण ॥ १० ॥
+ आलम्बनके चार पुनि, सज्जन जन सुनि लेहु।
अलंकार, गुण, चेष्टा अरु तटस्थ चित देहु ॥ ११ ॥

बनविभाव (ख) उद्दीपनविभाव। आलंवनविभाव उसे कहते हैं जो प्रेमके उत्पन्न होनेका अवलम्ब हो। इसके दोभेद हैं (ग) आश्रयालम्बन और (घ) विषयालम्बन। आश्रयालम्बन उसे कहते हैं जहां रसके रहने और उत्पत्तिका स्थान हो। यथा प्रेमियोंका हृदय। विषयालम्बन उसे कहते हैं जो प्रेमके प्रकट होनेका विषय हो। जैसे अपने प्रीतमके सुन्दर मुखारविन्द तथा अन्य अंगोंकी शोभा।

जैसे अरणीके घिसनेसे आग धधक उठती है इसी प्रकार इस भावकी रगड प्रेमियोंके हृदयपरे पडनेसे प्रेमकी आग भडक उठती है इसलिये इसको "उद्दीपनविभाव" कहते हैं।

× आलम्बनभावके फिर चार भेद हैं— अलंकार, गुण, चेष्टा और तटस्थ।

(क) प्रीतमके वस्त्रों और आभूषणोंकी सजावट इत्यादिको "अलंकार" कहते हैं।

(ख) जिसमें प्रीतमकी सुन्दरता अर्थात् उसके रूपकी मनोहरता एवं वचनकी मधुरता प्रकट हो उसे "गुण" कहते हैं।

(ग) प्रीतमकी कान्तिकी झलक, सुकुमारता और हाव भाव इत्यादिको "चेष्टा" कहते हैं।

प्रिय प्रीतमके मिलन ते, जो सुख उपज स्वभाव।
भेद नहीं ताको कछुक, ताहि कहत अनुभाव ॥ १२ ॥
एक बार लगिजाय जो, फिर नहिं कबहू छूट।
अचल सु रस रहु सर्वदा, सात्विक कहिय अटूट ॥ १३ ॥
छिन जोडे छिन तोडई, राखे नहीं विचार।
छिन रोवे छिनमें हँसे, कहत ताहि + व्यभिचार ॥ १४ ॥

(घ) प्रीतमके अंगोंमें पान, फूल, अंजन, चन्दन, केसर, इतर इत्यादि सुगन्धित पदार्थोंका सुशोभित होना "तटस्थ" कहाजाता है।

प्रिय प्रीतमके एकत्र होनेसे जो रस प्रकटहो, जिसे वे ही दोनों जान सक्ते हों अन्य किसीको जिसका अनुभव होना दुस्तर हो उसे "अनुभाव" कहते हैं।

जो प्रेम एकबार उपजकर जन्मजन्मान्तर पर्य्यन्त स्थिर रहे उसे "सात्विक" वा "स्थाई" प्रेम कहते हैं।

+ जो पुनः २ उपजकर विनशजाया करे ऐसे प्रेमको "व्यभिचारी प्रेम" कहते हैं यथा कामियोंका प्रेम नगरनारियोंसे। इसके ३३ लक्षण हैं—

१. निर्वेद— प्रीतमकी दूसरेके साथ प्रीति होनेसे उसके वियोगका दुःख।

२. ग्लानि— बल और उमंगका घटजाना।

३. शंका— प्यारेके मिलनेमें सन्देह होना।

४. असूय— प्रीतमकी प्रीतिमें दूसरेकी प्रीति न सहना।

५. मद— हर्ष और गर्वके उत्पन्न होनेसे कार्य्याकार्य्यका विकल्पहोना।

६. भ्रम—ऐसा सन्देह होना, कि प्यारा मुझे चाहता है वा नहीं।

७. आलस्य— प्यारेसे मिलनेका यत्न न करना।

८. दीनता—वियोगकी व्याकुलतासे मनमें लघुताका उत्पन्न होना

९. चिन्ता— प्रीतमके मिलने न मिलनेका चित्तमें संकल्प-विकल्प उपज आना।

१०. मोह— मन चंचल होनेसे दुःख और भयसे असावधानताका उत्पन्न होना।

११. धृति— प्रीतमके वियोग सहनेका साहस।

१२. स्मृति— औचक अपने प्यारेकी मूर्तिका स्मरण होआना।

१३. व्रीडा— लज्जा।

१४. चपलता— चित्तका चंचल होजाना।

१५. हर्ष— प्रीतमके मिलनेसे जो चित्तकी दशा होती है।

१६. आवेश— प्रीतमके स्वरूपमें लय होजाना अथवा दूसरोंके साथ देखकर कुढना।

१७. जडता— प्यारेके अचानक वियोगादिके दुःखसे जडके समान होजाना।

१८. गर्व—यह, कि मुझको मेरा प्यारा चाहता है।

१९. विषाद— मुझे प्यारा नहीं चाहता ऐसा अनुमान करके दुखी होना।

२०. औत्सुक्य— प्रीतमके मिलनेमें विलम्बका न सहना।

२१. निद्रा— प्रीतमके प्रेममें डूबजानेसे अचेत होजाना।

२२. अपस्मार— प्रीतमकी आशा टूटजानेसे चेत न रहना।

कहि लक्षण व्यभिचार रस सात्विक करूँ प्रवेश।
दशा *आठ तिहिकी कहूँ, सुनतहिं मिटत कलेश ॥ १५ ॥

२३. स्वप्न— मिलनेकी श्रद्धा बढजानेसे प्रीतमकी अनुपस्थितिको भी उपस्थिति समझना।

२४. अविबोध— बेसुध होनेके पश्चात् सुधका आगमन।

२५. अमर्ष— प्यारेकी कीहुई अवज्ञाओंका दुःख होना।

२६. अवहित्थ— हर्ष और शोकके कारण जाने हुएको छुपाना।

२७. उग्रता— प्यारेकी ओरसे अवज्ञा होनेपर क्रोध आजाना।

२८. मति— प्यारेसे मिलनेका सिद्धान्त विचारना।

२९. व्याधि— वियोगसे शरीरका रोगी होजाना।

३०. उन्माद— प्रेमसे पागल होजाना।

३१. मरण— प्यारेके लिये प्राण खोदेना।

३२. त्रास— अचानक भयका होना।

३३. वितर्क— दूसरेके संग प्यारेकी प्रीति होनेसे नाना प्रकारका ध्यान होना।

व्यभिचारी रसके लक्षणोंका वर्णन यहांतक समाप्त हुआ अब आगे सात्विकरसके लक्षणोंका वर्णन कियाजाता है।

---

* सात्विक प्रेमकी आठ दशाएँ हैं—

प्रमाण— स्वेदः स्तम्भोऽथ रोमांचः स्वरभंगोऽथ वेपथुः।
वैवर्ण्यमश्रुप्रलयः इत्यष्टौ सात्विका मताः॥

अर्थ— १. स्वेद, २. स्तम्भ, ३. रोमांच, ४. स्वरभंग, ५. कम्प ६. विवरण, ७. अश्रु और ८. प्रलय ये सात्विक प्रेमके आठ लक्षण हैं।

प्रथम कम्प रोमांच दुइ तीसरि अश्रु बखान।
चौथ स्वेद स्तम्भ कहँ पञ्चम कहहिं सुजान ॥ १६ ॥
छठी प्रलय अरु सातवीं मुखविवर्ण ह्वैजाय।
आठेइ स्वरको भङ्ग है प्रेमिन पडत लखाय ॥ १७॥

१. कम्प

कम्प भेद कैसे कहौं, कांपउ सकल शरीर।
मुसकत देखेउँ हे सखी, कान्हा यमुना तीर ॥ १८ ॥
चितवेउ कोर कटाक्षतें कछुक मन्द मुसकाय।
सुख इक पायउँ हे सखी, प्रीतम दीन्ह कँपाय ॥ १९ ॥
कांपत सिरकी गागरी, छूटि पडी वे हाथ।
जो कांपै इहि कम्पते, ताहि नवाऊँ माथ ॥ २० ॥
कांपत जो सुख पाइयां, सो सुख देवन नाहिं।
मनकी मनही जानई, वचन न कहत सिराहिं ॥ २१
बुद्धि परे बानी परे, ❀ सातों सागर पार।
सुनत शेष शारद तहां, मनमहँ करेत विचार ॥ २२ ॥
शेष कम्प जाने सखी, ताते कांपत नाहिं।
जो कांपै क्षणभर कभू, सगर जगत थर्राहिं ॥ २३ ॥

❀ सातों सागरपार कहनेसे कविका यह तात्पर्य है, कि यह रस बडी कठिनतासे प्राप्त होता है।

पीपर पतियां कांपहीं, जैसे लगत समीर।
तस मोहन टुक देखतें, कांपत सकल शरीर॥ २४॥

—⊛—

२. रोमांच

सुमिरत पियको हे सखी! मनमहँ उठत उमङ्ग।
चढति अङ्ग रोमावली, बाढति प्रेम तरङ्ग॥ २५॥
आवत हरष बढे सखी, जात सताव बियोग।
इतै उतै रोमावली, हर्ष शोकके योग॥ २६॥
बिरला कोऊ जानई, अस रोमावलि भेद।
लखि न पडे सो अन्यको, पढि लेवे चहुं वेद॥२७॥
पिय जानै मैं जानऊं, याको गुप्त विचार।
रसिकनके हित कहेउ कछु, रोमावलि व्यवहार २८

—⊛—

३. अश्रुपात

भादो बादर बरषहीं, धार मूसला घोर।
ताहूते अधिको सखी, बरषैं नयना मोर॥ २९॥
मिलके बिछुडे हे सखी, सो सुधि उपज अकेलि।
नयन दोऊ भरि आवहीं, सींचन विरहिन बेलि॥ ३०॥
सुनेउ कि साजन आवहीं, पोंछन अपने हाथ।
दायें आँसू पोंछहीं, बायें राखैं माथ॥ ३१॥

थांभि हाथ तहं सजनको, झटकि देउँ बरजोरि ।
सींचन लागूं चरणको, टपकैं अखियां मोरि ॥ ३२ ॥
अश्रुपातरस श्रवण करि, सज्जनजन विलखाय ।
सांझ सकारे सींचि हैं प्रेम नीर बरषाय ॥ ३३ ॥
वे बरषैं बरषातमें, ये बरषैं सब काल ।
करपट भींजोही रहत, जाहि कहत रूमाल ॥ ३४ ॥
अश्रु संग मिलिके सखी, टपकैं कजरा बुन्द ।
यहि मसितें मैं अब लिखूं, पतिया निकट मुकुन्द ॥३५ ॥
लिखि कजरा इक मातरा, ×चन्द्रहास मिलजाय।
सारी पाती लिखि सखी लीजै हरिहिं रिझाय ॥३६ ॥
व्यथा लिखत पुनि हे सखी, अश्रुबुन्दे झरिजाय ।
काह करूं कैसे लिखूं, पतियाहू गलिजाय ॥ ३७ ॥
प्रेम कियारी सींचती, मैं इन अँसुअन धार ।
पत्र पुष्प कहिजात नहिं, क्या उपजे प्रति डार ॥ ३८ ॥
बाढत बेली प्रीतिकी, पसरिजाति सबठाम ।
ऐसे पसरत हे सखी, पहुंचति गोकुल ग्राम ॥ ३९ ॥
तेहि पुष्पन कहँ बटुरिके, गूथूं सुन्दर हार ।
विहरन आवे सांवला गर डारूं उपहार ॥ ४० ॥

—※—
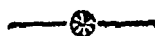
× चन्द्रहास और विषयाका इतिहास जगत्प्रसिद्ध है, कि विषयाने अपने नेत्रके कज्जलसे एक मात्रा बनाकर चन्द्रहास (अपने प्रीतम) को पाया ।

४. स्वेद

पाती पठई योगकी, ऊधो हाथ मुरारि ।
पढत स्वेद कण अङ्ग में, सखि अब दीन्ह बिसारि ४१
अस चिंता चितपै चढी, सूझत नाहि उपाय ।
तिहिंसे धारा स्वेदकी, अङ्ग-अङ्ग झलकाये ॥४२ ॥
मुख कपोल अरु नासिका, स्वेद भेदको जान ।
ऊधो कैसे जानि हैं कथत रहत जो ज्ञान ॥४३॥
पिय चिंता मोहि हे सखी, पिय मम चिन्ता नाहिं ।
अङ्ग अङ्ग प्रति स्वेदकण, टपकत दिवस सिराहिं४४
को जाने कासों कहौं, प्रेम पयोधि अथाह ।
पार लगन मैं तो चहौं, धारा प्रेम प्रवाह ॥ ४५ ॥

—※—
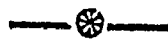
५. स्तम्भ

झटकि दीन्ह मोहि बिलगही, पटकि मडुकि अनमोल ।
सटकि खडी देखत रही, लटकि लड़ुरिया लोल ॥ ४६ ॥
कान्हा तोडि चलेगये, खेलनको चौगान ।
खडी रही तह साँझ लों कागद-चित्र समान ॥ ४७ ॥
कोउ पूछे तू को सखी इकटक लाये ध्यान ।
की कछु भूळेउ की लगेउ, श्याम नयनको बान ॥ ४८॥

हैं कछु नहिं तहँ कहि सकी, चितवत ठाढी मूक।
ताहि समय कोकिल तहां, आय सुनायउ कूक ॥ ४९ ॥
कूक सुनत हियरा फटेउ चली चौंक निज गेह।
या रसको सो जानिहैं, जाको लागा नेह ॥ ५० ॥

—❀—
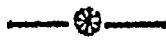
६. प्रलय

प्रेम पयोधि अथाह सखि, पियमुख चन्दा पूर।
देखि मिलन तिहिं सों चहत, यदपि वसत अतिदूर ५१
प्यार ज्वार भाठा चढेउ, बोरेउ सकल शरीर।
सुधि बुधि घर आंगन तहां, डूब नेहके नीर ॥५२॥
डूबत-डूबत डूबिगे, नाभि नासिका सीस।
गोते खायउँ हे सखी, पांच सात दस बीस ॥ ५३ ॥
याको प्रलय बखानिये, छठवीं दशा विभेद।
विछुडन मिलन समय सहज, प्रलय बखानत वेद ॥५४॥
नेहनीर धसिके सखी, जो यह गोता खाय।
वरुण धनद इन्द्रादि तेहि, झुकिके सीसनवाय ॥५५॥

७. विवर्ण

गोकुल धूम मची सखी, श्याम मधुपुर जाय।
सुनत अंग सूखैं सबै अबल हिया घबराय ॥ ५६ ॥

जस जस दूरहिं पडतगये, तस तस विरह तरंग ।
उमडन लागीं हे सखी, कहा भयो रस भंग ॥५७॥
मुख चन्दा बिनु दशहुं दिशि, गयी अँधेरी छाय ।
अंखियां पीरी पडिगयीं, मुख विवर्ण ह्वैजाय ॥ ५८ ॥
भरे प्रेमके रंगमें, तनकि टूट जेहँ होय ।
ताहि अवस्थाको कहत, दशा विवर्ण निचोय ॥ ५९ ॥
सोइ मुख मोकहँ भावई, जेहि मुख सोह विवर्ण ।
सकल अंग सूखे पडैं, नयन नासिका कर्ण ॥ ६० ॥

—⊛—
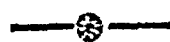
८. स्वरभंग

कहत कहानी प्रेमकी, सुनत विरानो नेह ।
हरिबिनु हहरत हिय सखी, सुधि न रहत कछु देह ॥६१॥
प्रेम मनोरथ वारिवर, भरे हियाके मेह ।
वरषैहों पियपायके, बैठि सुनैहों नेह ॥ ६२ ॥
सिसकत बिलखत हे सखी, बचन न मुख कहिजात ।
कछुक कंठ कछु होठ महँ, तहँ स्वरभङ्ग लखात ॥६३॥
ये आठों जा पुरुषमें, क्षण-क्षण उपजें जोर ।
प्रीतम ताके निकट है, करे न ताको भोर ॥ ६४ ॥
उपजे जिहिंके अङ्गमें, यह स्वरभङ्ग अनूप ।
बार-बार तिहिंको नमत, विरही हंसस्वरूप ॥ ६५ ॥

—⊛—

उक्त आठों दशाओंके अतिरिक्त जब प्रेमकी परिपक्वता होने लगती है तो १४ भाव※ वा दशाएँ और भी उत्पन्न होती हैं जिनका वर्णन नीचे कियाजाता है—

१. उप्त

सुनि छबि मोहनलालकी, राधा मन अस होय।
सो हरि मिलिये प्रेमसों लोकलाज सब खोय॥ ९६॥
"×प्रेमसरोवर" हे सखी, गैयन कृष्ण पियाव।
ताहि समय राधा तहाँ, मज्जन हित चलिआव॥ ९७॥
चारिउ अँखियां लेडिगयीं, उरझि गयीं बेढंग।
दूजो फिर नहिं जचै दृग, तजन चहत नहिं संग॥ ९८॥
'उप्त' कहहिं एहि चातुरी, रसिकनके मन भाव।
'हंस' चहत हरिसों मिलन, जो अस बनै बनाव॥ ९९॥

—※—
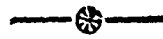
※ १. उप्त, २. यत, ३. ललित, ४. दलित, ५. मिलित, ६. छलित, ७. कलित, ८. चलित, ९. गलित, १०. क्रांत, ११. विक्रान्त, १२. सन्तृप्त, १३. संहृत, १४. विहृत।

× प्रेमसरोवर— यह एक सरोवर है जो नन्दग्राम और बरसानेके बीचमें है उस सरोवरमें लोग अब भी स्नान करते हैं।

१. उप्त— प्रियकी सुन्दरता और गुणोंको श्रवणकर मिलनेकी चाह और ऐसी इच्छा होनी, कि प्रीतम आंखोंसे क्षणभर भी दूर न होवे।

२. यत

ऊधोंका आगमन सुनि, जुडिगो सखी समूह ।
बछडे नहिं पीवैं सखी, ग्वाल न गैया दूह ॥ ७० ॥
कोउ पूछत ऊधो कहां, समाचार का दीन्ह ।
लौटि बहुरि आवें कि ना, कौल कहो का कीन्ह ॥ ७१ ॥
उनकी कहत कि औरकी, और सुने मोहि काह ।
मैंतो गोते खाइयां सागर प्रेम प्रवाह ॥ ७२ ॥
प्रीतम मेरे नामकी, कहु कछु पतिया दीन्ह ।
ऊधो मेरे मिलनको, यत्न कहहु का कीन्ह ॥ ७३ ॥
इहि विधि बतियां प्रेमकी, दूतसंग जब होय ।
तहां दशा जो बीतई 'यत' बोलत सबकोय ॥ ७४ ॥

कवित्त

आयो है रामललामा जनकपुरी देखनको,
जानकीने एसी सुधि सखिअनते पायी है ।
बाढी परिपूर्ण चाह मिलिवेकी चित्त मांह,
तिहिते त्रास व्याकुलता मनमें समायी है ॥

---

२. यत— प्यारेका सँदेशा पाकर दूतसे कुशलवार्त्ता पूछनेके समय जो दशा होती है अथवा प्यारा है पर उससे कुछ वार्त्तालाप न होनेके कारण मनमें यही उमंग उठना और यही चर्चा करना, कि यह कौन है ? कहांसे आया है ? ।

कोऊ कहत कौन अहे आयो कहांते यहै,
चर्चा छवि माधुरिकी नगर मांह छायी है।
हंसस्वरूप जब ऐसी गति होय हिये,
दशा ताहि 'यत' कहि रसिकनने गायी है॥ ७५॥

—❀—

३. ललित

लोक लाज कछु ना रहै, चहै शीस कटि जाव।
राधा निकसी ग्राम ते, नन्दग्रामकी चाव ॥७६॥
मिलि लौटत कछु लजिगयी, अँखियां लई छुपाय।
गुरुजन कोउ दीखै नहीं, दशा सो 'ललित' कहाय
॥ ७७ ॥

पुनि मिलिवेकी लालसा, बढत जात हिय माहिं।
श्याम सलोनो रूप सो, हिय ते विसरत नाहिं॥७८॥

—❀—
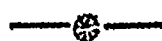
३. ललित— प्यारेके देखनेकी उमंगमें गुरुजनकी लज्जा न होनी और जब देखलिया तब थोडीसी लज्जा अनुभव करनी।

४. दलित

चिन्तासागरमें उठत, जब तब भाठा ज्वार।
सूखत मुँह लाटी लगति, तिहिं कहँ 'दलित' विचार॥७९॥
भूख प्यास लागैं नहीं, पुनि अहार घटिजाय।
पिघलज़ात नवनीत सम, घर आंगन न सुहाय ॥ ८० ॥
रैनि अँध्यारी हे सखी, पुनि तहँ सूनी सेज।
व्याकुलता दूनी बढत, डारत छेद करेज ॥ ८१ ॥
चन्द्रवदनके ध्यानमें, चन्द्रसमान स्वरूप।
जब अपनो ह्वैजाय तब, कहिये 'दलित' अनूप ॥ ८२ ॥

—⊛—

५. मिलित

साजनको बिछुडे सखी, बीतेउ दिवस अनेक।
सुधि अवलौंपायी नहीं, थिर नहिं रहत विवेक ॥ ८३॥

---

४. दलित— प्यारेके वियोगमें रंगका बदलजाना तथा निद्रा, आहार इत्यादिका घटजाना, वियोगमें व्याकुलता होनी और ध्यानकरके तद्रूप होजाना।

५. मिलित— बहुत दिनोंके वियोगके पश्चात् फिर प्यारेसे मिलनेपर जो दशा होती है उसे 'मिलित' कहते हैं।

यमुनापार उतरि सखी, दधि बेचन चलि जाउँ ।
औचक भेंटेउ हे सखी, यशुमतिसुत तिहिं ठाउँ ॥
॥ ८४ ॥
बिछुडो बहु दिनको मिलेउ, दौरि गलै लगि जाये ।
तिहि क्षण चितकी जो दशा, अनुपम 'मिलित' कहाये ॥ ८५ ॥

—⊛—
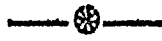
६. छलित

हरि वियोग ब्रजगोपिका, भ्रमर संग बतराय ।
झूठ कौल मोते कियो, ताहि कृष्ण तू गाय ॥ ८६ ॥
गाढ़प्रेम-पूरण हिया, तनक क्रोध मिलिजाय ।
ताहि समय चितकी दशा, सब विधि 'छलित' कहाय ॥८७॥

—⊛—
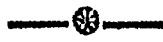
७. कलित

मिलत प्रेमसरिता बढ़ति, सुधि बुधि सब गलिजाय ।
प्रिय प्रीतमकी लालसा, एक संग रलिजाय ॥ ८८ ॥

---

६. छलित— प्रीतमपर अत्यन्त स्नेहपूर्वक क्रोधित होना ।
७. कलित— प्रीतम मिलनके आनन्दसे द्रवीभूत होना और प्रेमसागरमें निमग्न होजाना ।

गोपिन संग दधि छीन ते, खैंचातानी होय।
पुनि मुसकन खिल २ हँसन, दशा 'कलित' सो जोय ॥ ८९ ॥

—※—
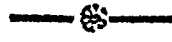
८. चलित

मरण समय संकल्प अस, पुनि प्रीतम मिलिजाय।
जन्म-जन्म प्रतिजन्ममें, दूजो नाहिं सुहाय ॥ ९० ॥
दक्षमखहिं जलती समय, सती प्रतिज्ञा कीन।
शंभु वरों प्रतिजन्ममें, अस मन दृढ करिलीन ॥ ९१ ॥
मरण समय ऐसी दशा, जब हिय उपजै आय।
'चलित' दशा तिहिंको कहैं, विरहिन हिया सुहाय ॥ ९२ ॥

—※—
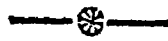
९. गलित

लता लजौनी हे सखी, छूवत ही कुम्हलाय।
ऐसे परसत प्रेम हिय, उरझत नहिं सुरझाय ॥ ९३ ॥

---

८. चलित— देह त्यागनेके समय अपने प्रीतमकी चिन्तामें यही अनुराग करना, कि अगले जन्ममें भी यही सम्बन्ध रहे। जैसे सतीने दूसरे जन्ममें भी शंभुके ही चरणोंमें स्नेह किया।

९. गलित—प्यारेके सौन्दर्यकीछटापर मनका द्रवीभूत होना।

प्रीतमकी छवि देखिके व्याकुलता बढिजाय।
पिघलजाय नवनीत सम, 'गलित' सु दशा कहाय ॥१४॥

—※—
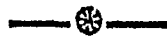
१०. क्रान्त

अपनी रुचि अनुसार करि, प्रीतमको शृङ्गार।
क्रीडा भाषण हँसन युत, करिये विविध प्रकार ॥ ९५ ॥
चित्त चाह पूरी करे, सुने नहीं कछु और।
सुने तो माधवकी सुने, दूजो नहिं कछु ठौर ॥ ९६ ॥
तोहि 'क्रान्त' कहिये दशा, राखिये चित्तविगोय।
'हंस' प्रीति हठि कीजिये, हानी होय सो होय ॥९७॥

—※—
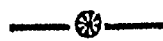
११. विक्रान्त

भाग्य सराहूँ हे सखी, मिले आजु यदुराय।
बांह गहे धरि बिरहकी, दीन्हीं व्यथा मिटाय ॥ ९८ ॥

---

१०. क्रान्त— मनकी चाहके अनुकूल प्यारेका शृंगार आदि करना तथा हँसन, भाषण, क्रीडन इत्यादिसे लगजाना।

११. विक्रान्त— प्यारेके मिलनेसे अपने भाग्यको सराहना अथवा प्यारेके गुणोंकी बडाई करना और उस प्रीतमके अन्य प्रेमियोंको भी सराहना।

लोग कहत करुणायतन, गोपिन कहँ तेहि कन्त ।
एक रूप जानिये सदा, भक्तनि औ भगवन्त ॥ १३ ॥

—※—
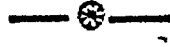
१२. सन्तृप्त

दशा कहहिं 'संतृप्त' तेहि, लहत जो जीवन्मुक्त ।
श्याम रंग नित नैंनमें, नेहनीरसों युक्त ॥ १ ॥
कुंजनके प्रतिडारमें, हरिको रूप अनूप ।
मंजरे पतियां पुष्पमें, निरखत 'हंसस्वरूप' ॥ १०६ ॥
ग्राम गली बाज़ारमें, आंगन देहरि द्वार ।
रोम रोम प्रतिरोममें, दीसत कृष्णमुरार ॥ १०३ ॥
दृगन कामला रोगते, पीत देखि सब ठौर ।
तस रसिकनके नैनमें, श्याम-श्याम नहिं और ॥ १०४ ॥

—※—

१३. विहृत

नेत्र मूँदि मुख मोडिके, गे हरि कर छिटकाय ।
विविधि भांति पैयां पडं तऊ दूर चलिजाय ॥ ॥ १०५ ॥

---

१२. संतृप्त— सर्वत्र सबठौर श्याममय ही समझना अर्थात् अपने प्रियतमको ही सब स्थानोंमें देखना ।

१३. विहृत— प्यारेके मनानेमें जो नानाप्रकारकी चेष्टाएँ करनी पडती हैं उस समय जो चित्तकी दशा होती है उसे विहृत कहते हैं ।

हाथ मलत पछितात पुनि, हे बिधि हौं का कीन्ह ।
पिया मनाउँन मानेउ, मम मति महा मलीन ॥ १०६ ॥
ताहि समय चितकी दशा, विहृत सु कहत अनूप ।
बिना प्रेम सुनु मुक्ति सुख, निदरत हंसस्वरूप ॥ १०७ ॥

१४. संहृत

जानहु संहृत विहृत सम, रसिकन कियो विचार ।
गूँथि नेह माला नयी, प्रीतमके गर डार ॥ १०८ ॥
प्रीतम प्रीति लगाइये, दीजे सब बिसराय ।
चन्दा संग चकोरकी, प्रीति सराही जाय ॥ १०९ ॥
बिछुरे पल जीवे नहीं, मीनहिं जैसी प्रीति ।
तैसी इक दाणके किये, पावै अपनो मीत ॥ ११० ॥
चातक अपनी चोंच कहँ, स्वाती हेतु चलाय ।
सहत बज्रपीडा सदा, तनिक प्रेम चितलाय ॥ १११ ॥
पूरण प्यालो प्रेमको, अधर लगावै जोय ।
प्रीतम चरणसरोजरस, मकरन्दित सो होय ॥ ११२ ॥
सुन्दर मुख कहँ देखिके, वारों तुमपर प्रान ।
चरण तिहारो नयन मम, एक संग सनमान ॥ ११३ ॥

१४. संहृत— विहृतका अंग ही है दोनोंमें कुछ अन्तर नहीं है ।

नयन मलों तुम चरणसे, रज अंजन पहिचान ।
दृष्टि विमल देखों तुम्हें, तन मन धन करि दान ॥ ११४ ॥

जो सुख पावौं हे पिया, तुम्हरे सहज मिलाप ।
सो सारद नहिं कहिसकै करै करोड प्रलाप ॥ ११५ ॥

सो सुख दुर्लभ सुरनको, यद्यपि ऊंचे ठाम ।
सोई मजूरी पावई, जाको पूरो काम ॥ ११६ ॥

तिहिं सुखको खोजो सखी, समय न मिथ्या खोय ।
सांचे ब्रह्मानन्दते, सो सुख अधिको होय ॥ ११७ ॥

शुक नारद तेहिं पाइयां, जहँ तहँ दीनी छींट ।
छिटेऊ गोकुल कृष्णाहू, पहरि पगड़िया सींट ॥ ११८ ॥

पायउ ब्रजकी गोपिका, ऊधो दयउ बताय ।
भूलेउ तिनकहँ ज्ञान तहँ, प्रेमपियूषहिं पाय ॥ ११९ ॥

बून्द प्रेमपियूष करे, धरिये पल्ले एक ।
दूजे पल्ले राखिये, योग विराग विवेक ॥ १२० ॥

सब मिलि तासौं तुलें नहिं, झुकै पालरो प्रीति ।
भागि चलें आकाशको, जप तप संयम नीति ॥ १२१ ॥

प्रीतम प्रीति न तोड़िये, दृढ़कर गहिये धाय ।
जो तोडेपर जोडिहो, बीच गांठ पडिजाय ॥ १२२ ॥

आन न कछु आनन्द कहुं, प्रेम समान अनूप ।
बार-बार असे गावई, विरही हंसस्वरूप ॥ १२३ ॥
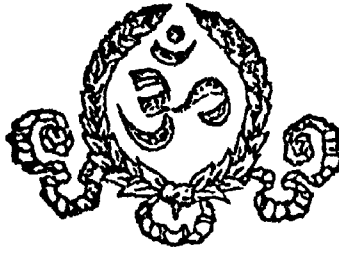
❁ तत्सद्ब्रह्मणे नमः ❁

हंसहिंडोल ।

चौथी मचकी ।

[हंसकवितावली]

(भगवान्के नखसे शिखतकके शृङ्गारका वर्णन सवैयामें)

सवैया

नमिकै नित नूतन नेह किये नगनन्दिनिनन्दन पावनको ।
फिर भालविभूषणचन्द्रकला मकरध्वजदर्प नशावनको ॥
गुरुदेव दयानिधि पादसरोरुह मानसभृंग सुहावनको ।
भजु हंसस्वरूप निरन्तर ही भवबन्धनगांठ छुडावनको ॥ १ ॥
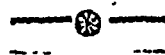
बलवीर भजो मनरे सबलायक नायक जो चतुराननको ।
जिहिंकी छबि देखि मनोज लजै अवतार लियो सहसाननको ॥
हलतैं यमुनाजल खैंचिलियो हनिडारेउ पुत्र दशाननको ।
हरिके गरबाँहिदिये सुखसों, सुरलोक कियो ब्रजकाननको ॥ २ ॥

—❀—
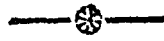
कच घूँघर सोहतहैं मुखपै जनु भृंग सरोरुह केलि करैं ।
तहँ कुण्डल लोल कपोल भलो, रविकी छबि देखत दूरि धैर ॥
हँसिके बतियां जु करैं रसकी दँतियां झलकैं जस बिज्जु जुडैं ।
अह हंस खडो बटिया निरखै उन नैननते कब नैन लडैं ॥ ३ ॥

—❀—

+
अह भालविशालगुलालकरा जनु चन्द्रचकोरचखाश्रुकला
मृगनाभि सुरेख कलङ्क भला टकिलाइ चितै चितवै कमला
अस भालहिं राखु सदा चितमें तब भाललहै परमाकुशला
अब हंसस्वरूप भजो हरिको तव जीवन जात वृथाहीचला
॥ ४ ॥

+ गुलालकरा चन्द्रमाके समान देदीप्यमान श्यामसुन्दरके विशाल भालपर जो गुलालके छींटे पडेहुए हैं वे छींटे नहीं हैं वरु 'चखाश्रुकला' चकोरकी आंखोंसे जो अश्रुकी धाराएँ झर रही हैं उनके छोटे-छोटे टुकडे हैं ।

दुहुं भ्रू जनु पंचशरा सु रथांग चढायउ शंकर मोहनको।
विशिखैं बरुणी जनु शायकतीक्ष्ण सुसाजिलियो मन बेधनको॥
चखु चंचल चारु चुराइचलैं चित चातुर प्रेमिन जोहनको।
रखु हंस हिया जुगखंजनसो निज मानसपिंजर सोहनको॥ ५॥

—※—
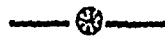
तिरछी अँखियाँ ज़हरीली बनी चुभिजात हिये जस लौहकणी।
फिर बोध नहीं घरबार कहां परिवार कहां कमनी रमणी॥
जरिजाय सुबुद्धि बसे मति सो हठि जो अस मोहन सो न सनी।
अब हंस तियागहु लाज सबै ग्रथि लो हरिसों दृढ़प्रेमतनी॥ ६॥

—※—
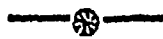
शुकलोललहे मणिमोललियेजनु विम्बनि देन निछावरको
अरुणाईभलीलखिकाकहिये जिय लज्जितजानमहावरको
अह चिम्बुककीछविसोइकहे जिन निरखेउसेवपिशावरको
मुसकानप्रभा जनु हंसछटा छिटकी सुप्रभात दिवाकरको ७

—※—
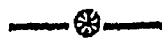
अधराधर लाल भये छविसों मुख डारत पाननकी बिड़ियां।
बलवीर सखासँग डोलत हैं कर सोहत सोननकी छड़ियां॥
मणिमाणिकमंडित मोरशिखा जहँ झूलत मोतिनकी लड़ियां।
यदि हंसहु संग लिवाय चलैं निज आंगुरसों धरि आंगुरियां॥ ८

रदपंकति सुन्दर सो सुनिये सब लज्जित दाडिम काबुलकी ।
हँसिदेत जबै ठगिजात सबै दधिबेचत गोपिन गोकुलकी ॥
जब गान सुतान भरें मधुरी चहकें लजिजात बुलबुलकी ।
अब दूसरि हंस भने उपमा जनु पंकति कुन्दकली पुलकी ॥ ६ ॥

—※—

यशुदा गर हार पिन्हायगयी मुखपै कर फेर बलाय लयी
फिर साजि दुहूं भुज हाटक ही त्रि जायठ जोडि लगायदई
पहुंची पहुंची मणिबन्ध ढिगै न डिगै बलया सहंचारि मयी
फिर हंस सराहहु भाग्यनिजै प्रभुने भुजसो तब ग्रीवदयी १०

—※—

बँसुरी लहुरी मधुरी धुनिकी, जब छिद्रनपै करजे चपकें ।
धुनि फैलत लोक तिहूँ मतिजात सु पंचशरा पलकैं झपकें ॥
अह ! हंस हितै दुख नाशनको जब ही त्रयतापहिंपै लपकें ।
श्रम कारण बिन्दु पसीननकी दुहुँ गाल कपोलनपै टपकें ॥ ११ ॥

—※—
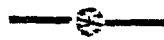
कटि किंकिणि माणिकहीरप्रवालजडी जहँ पाँति नगीननकी ।
कहुँ खोजत नाहिं फबै उपमा थकि भागत बुद्धि प्रवीणनकी ॥
तहं बांधि पटू हरि धावत हैं जनु मेटन दारिद दीननकी ।
लघु हंस गनै तिहिं केहरिकी डर श्यालिन कर्म लकीरनकी ॥ १२

उरुकीउपमा कहिजाति नहीं कदलीजनुसांचनिमाहिं ढली
प्रगु नूपुरशब्द सुहात भलो जब डोलत हैं प्रभु कुंजगली
अह खातखवावतग्वालनको कर माखनऔमिसरीकिढली
जब हंस लहै प्रभु जूठनिको समझै शुभकर्मनि रेख फली १३

—❀—
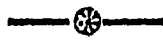
पनही ज़रदोजिनकी पगसोहति ध्यान लही मनही जिनही ।
तिनही सिरपै अपने कबही यमदण्डनि चोटनि नाहिं सही ॥
÷ असिपत्र न फाडि सकै तिनको, नहिं रौरव दाह दहै कबहीं ।
फिर हंस कहै सुनिये सजना श्रुति ये बतियां बहुबारे कहीं ॥ १४

इति नखशिख

—❀—
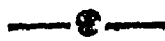
अन्य भावोंके कवित्त ॥

झडैं दुहु नैन पडै नहिं चैन न आवत बैन जरै छतिया ।
जबतैं हरि गे मथुरा नगरी बिन शैन कटै सिगरी रतिया ॥
यमुनातट जाय खडी टकिलाय न आपु अवै न लिखै पतिया ।
अब हंस न भोरि करो परतीत कठोर अहीरनकी जतिया ॥ १ ॥

÷ असिपत्र और रौरवविशेष नरकोंके नाम हैं ।

शिव आक धतूरनि मत्तरहैं विधि बेल बबूल वितानमें।
हरि क्षीरसमुद्रमें सोयरहें मघवा विसरे सुरतानमें॥
जगकी जननी अवकाश नहीं लगि शुंभनिशुंभ संहारनेमें।
फिर हंस दुखी दुख सोइ सुनै जिहि सोहतकुंडलकाननमें २

—※—
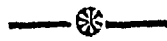
सुख स्वारथ त्यागि गहे शरणागत छाडि सबै विषबेलि गुसांई।
कुलकान तजे न लजे कबहूँ न भजे चित सुन्दर नार पेराई॥
परसम्पति पाथरसा समझै बिरथा न गहे कहुँ एकउपाई।
कह हंस मिलै तिहिं श्याम लला मधुरी मुरली जिन कुञ्ज बजाई ३

—※—

हमरी हमरी हमरी करते दमडी नहिं साथ गयी मरते।
जब आंख मिची तब लाख कहां, धरि बांधि निकारत हैं घरते॥
चिनगारिहु आंगुरि ना धरते तिन दीख हुतासनमें जरते।
अनमोल समा नहिं देहु गवां अब हंस बृथा करते धरते॥४॥

—※—

सिर सो कटुतूमर जानु सखे हरिपादसरोरुह नाहिं सटा
करवाहु मडो कहिये तिहिको जिहि वीतत खेलत झांझपटा
विषयी बनि डोलत है जगमें कहिये तिहिं कूकर कानकटा।
कब हंस जुडावहुगे छतिया छकिके छबि गोकुलछैलछटा ५

दुःख आपति दाहत दीननकी रुचि राखत प्रेम प्रवीणनकी।
मति देत बनाय मलीननकी अरु बुद्धि बढ़ावत हीननकी ॥
तेहि चित्त बसावहु मित्त सदा जस प्रीति बसै जल मीननकी।
यमजाल छुड़ा गतिदेत बना प्रभु हंस समान शरीरनकी ॥ ६ ॥

—◎—

बरसें नयना दुहुँ रैनदिना नहिं आवत चैन मुरारि बिना।
गरजे तरजे लरजे हियरा प्रभु देखत बाट तटै यमुना ॥
अह! देखत रूप अनूप बिकै कछु लाज शरीर रही सुधिना।
अब हंस गिने नित आंगुरिआं कब दर्शनयोगकरेविधिना ७

—◎—

जबलों शुभबाग बहाररहो तबलों नहिं हेत कियो हरिसों।
जब सूखिगयीं नव पुष्पकली तब क्यों कर्मीजत हो करसों ॥
नहिं लागत मंजर वृक्षनसों जल सींचिमरो तिनमें बरसों।
यह हंसनरूप बिनै कहियो करजोडि दुहू करुणाकरसों ॥ ८ ॥

—◎—

आयीरी आयी सखी माधव ऋतु आयीरी
माधव मुरारी बिनु गोकुल सुहावे ना।
माधुरी बाणी कैसे कोकिला गुंजार करे,
श्याम मधुर बांसुरि की अबलों धुनि आवे ना ॥

चम्पा चमेली अरु मौलसरी मौलि रहैं,
गूंजैं नहिं चंचरीक चातक चहचावे ना ।
'हंसवरूप' चित चैन नहिं आवत तनिक,
ऊधवजी माधव सुधि अबलों कुछ लावे ना ॥ ६ ॥

—❀—
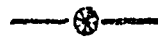
दाऊ बिन दावानल होत चन्द्र शीतल ये,
दाऊ बिन यमुनाजल तप्त तैल धार है ।
दाऊ बिन सूखिगयीं कुञ्जनकी नवल बेलि,
दाऊ बिन गोवर्द्धन विपतको पहार है ॥
दाऊ बिन व्याकुल हैं गोकुलके ग्वालबाल,
दाऊ बिन देख सखे जीवन धिक्कार है ।
टेरि कहे बार-बार देहु दर्श एक बार,
गोकुलके कुञ्जनमें 'हंस' इन्तज़ार है ॥ १० ॥

—❀—
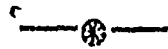
नागिनसे डँसावो चाहे सागर धँसाओ,
चूर २ करवाओ जलवाओ चांडालसे ।
गजराजसे पिचाओ चाहे शूली खिंचाओ,
टूक २ करवाओ हां ! खड्ग विकरालसे ॥
विष घोलके पिलाओ चाहे पर्वतसे गिराओ,
चरण जूतीसिलाओ पिताजू मेरी खालसे ।

हंसस्वरूप प्रह्लाद विनय मानो हाय,
नेह ना छुडाओ मेरे प्यारे नन्दलालसे ॥ ११ ॥

—※—

क्षमाके सागर कवि गावे तोहिं बार २,
सांची यदि पांती प्रभु क्षमाकरोईगे ।
डूबति है नैया भवसागरके मांझधार,
यमुना खेवैया कर करुआ धरोईगे ॥
पापिन सदार नेहिं पापकेर पारावार,
अघ ओघके दरैया अघ मेरो दरोईगे ।
हंसस्वरूप पापकूप खनेउ बारबार,
छिद्रनि भरैया तिहिं तकि २ भरोईगे ॥ १२ ॥

—※—
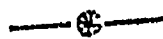
जनकलली कहैं हनुमन्त सुनो मेरीजी,
मोहि लैचलहु जहां रघुराज हैं सुबेलपै ।
नाहि त प्राण दूं निकार प्रण याहि है हमार,
अग्नि ते तपाय तई गिरों तप्त तेलपै ॥
लंकापति खड्गधार होय गला वारपार,
मरण समय ध्यान रहे सांवरे सुहेल पै ।
विरह अग्नि जरेत छाती बाटिका यह लगत ताती,
जानकी नहिं बचै 'हंस' झगड झमेल पै ॥ १३ ॥

विहसत विकसत हैं दाडिमके दाने जनु,
दतियां द्युति दामिनिकी पंकति सराहिये।
मन्द-मन्द मुसकत जो बोलत रसीली बात,
जबते गे मथुरा बिरहव्यथा कराहिये॥
एजी ऊधव तुमतो कहत साधहु जोग,
कीटनते शुद्ध अन्न वृथा बिदाहिये।
'हंस' कहत आइये बिताइये जी मेरे संग,
बालेपनकी प्रीति तो कछु दिन निबाहिये॥ १४॥
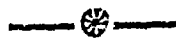
मेरी ओर देखो हरि पतितनको नायक हूं,
सुनि पावन तिहारो नाम लीन्ही शरणाई है।
बूडत जहाज राखु अवतो निज नाम लाज,
भवसिंधुके खेवैया नैया मांझधार आयी है।
बेडी है बयार कछु सूझत नहिं वारे पार,
हैं तो गँवार प्यारे कोऊ संग ना सहायी है।
गोपिन उतैरया यदुरैया बलभैया तुम,
'हंस' औरहि पुकारै काह तेरी ही दुहाई है॥१५॥

तीन लले करके तीरीरी करडारे मोहि,
तीन बीबी देखत तिकि, की गई मनसे।
देखि व्यथाग्रसित मोहि हँसत पचास तीती,
लागत हिय चोट मानो लौहनके घनसे।

'हंसस्वरूप' सात पांच नौ तेरह संग।
ढाईके साथ साढेतीनके मिलनसे,
सुमिरो तेहि प्यारे है तुमको शतवार गंध।
गाओ तेहि बार-बार माधुरे वचनसे ॥ १६ ॥

टिप्पणी— इस कवित्तका पहला पद किसी अन्य कविका बनाया हुआ है पर बहुत लोगोंके पूछनेपर और अनेक कविताओंके देखनेपर भी इसका पता नहीं लगा तब इसके तीन शेष पद पूरे कियेगये हैं जिनका अर्थ यों है—

तीन लल— लल लल लल ६ ल
ती रीरी— रीरी रीरी रीरी ६ री
तीन बीबी—बीबी बीबी बीबी ६ बी
ती कीकी—कीकी कीकी कीकी ६ की
पचास तीती-- ५० तीती सौती
७+५+६+१३+२॥+३॥— ४० अर्थात मन
शतवार गन्ध— सौ गन्ध

श्यामसुन्दर मनमोहनने छल करके मेरे मनको हरलिया जिनकी छवि देखकर मैं पूर्ण प्रकार छकिगई तब मेरी व्यथाको बढतीहुई देख (पचास तीती) सौति मुखपर हंसने लगी जिसकी चोट मेरे हृदयमें घनके समान लगगई है। ब्रजकी सखीकी ऐसी गति देख हंसस्वरूप कहता है, कि ७+५+६+१३+२॥+३॥= मनसे मेरे प्यारे तुमको सौगन्ध है, कि तुम उसको भजो और उसका यश बार बार मधुर वचनोंसे गायाकरो।

पाँचवीं मचकी ।

श्री १०८ श्रीस्वामी हंसस्वरूप रचित

(फ़ारसी के पद्य हिन्दी अक्षरोंमें)

मदां नादां हमादां अज़ तुरा दूर, कि दर क़ालिब तो ज़ां जलवा रसद नूर ।
ख़िरद ख़ामा दिला करदी चराख़ाम, बरौ अज़ पाय हिम्मत बरलबे बाम ।
बुवद अज़ अक्ल अफज़ूं राज़े आं यार, न बुकशायद कसे ईं दुर्जे इसरार ।
यक़ीं रा हमयक़ीं दरवे नमानद, हकीमओ ज़ाहिदओ मुल्ला चिदानद
दिलादर पाक क़दमश ख़ुदरा ख़मकुन, बरो दर बाग़े इशरत दूरे ग़म कुन ।
चे दानद हंस ज़ाते पाक आं यार, बदानद ऊ के दारद मग़्ज़ बेदार॥ १॥
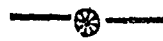
اشعرا زتصنیفات سري ١٠٨ سري سوامي هنس سروپ جي
بزبان فارسي

مداں ناداں همه داں از ترا دور   که در قالب تو زان جلوه رسد نور
خرد خامه دلا کردي چرا خام   برو از پائے همت برلب بام
بود از عقل افزون راز آن یار   نه بکشاید کسے ایں درج اسرار
یقین را هم یقین در وے نماند   حکیم و زاهد و ملا چه داند
دلادر پاک قدمش خود را خم کن   برو در باغ عشرت دور غم کن
چه داند هنس ذات پاک آن یار   بداند او که دارد مغز بیدار — ١

خامه — قلم   خام — کچا   خم — ٹیڑا

चरा महरूम मीमानी ज़ेउल्फत रहबरे अकबर,
बदां रेहमां रेहीम आंरा न इसियां ख़ुद बदिल आवर।
बवक़्ते अद्ल पोशीदः कुनम खुदरा ज़े दरबारश,
बवक्ते फ़ज़्ल रौशन मीशवम पेशे ऊ चूं ख़ावर।
मशौ ग़ाफिल बशौ आक़िल बवार अश्के ख़िरदमन्दी,
बपाश आं बरसरे उल्फत मदां कसरा ज़ुज़ां दावर।
ब बहरे इश्क़ ग़ोता ज़न रसां खुदरा बक़ारे ऊ,
के याबी आं दुरेताबां चो बाशद बख़्त तो यावर।
चूं अज़ लज्जात महसूसात खुदरा मीकुनी आजाद,
बियाबी लज्जते अर्शेबरीं कुन ईं सुख़न बावर।
मबाश ऐ हंसे ग़ाफ़िल अज तसव्वुर आं महे कामिल,
बजुज आं शाहेखूबां शक्ले दीगर दर दिलत नावर ॥२॥

—⊛—

چرا محروم میمانی زالفت رهبر اکبر
بدان رحمان رحیم آنرا نه عصیان خود بدل آور
بوقت عدل پوشیده کنم خود راز دربارش
بوقت فضل روشن میشوم پیش أو چوں خاور
مشو غافل بشو عاقل ببار اشک خرد مندي
به پاش آن برسر اُلفت مدان کسرا جزآں داور
به بحر عشق غوطه زن رساں خود را بقعر اُو
که یابي آں در تابان چو باشد بخت تو یاور
چو از لذات محسوسات خود را میکني آزاد
بیابی لذت عرش برین کن ایں سخن باور
مباش اے هنس غافل از تصور آں مه کامل
بجز آن شاه خوبان شکل دیگر در دلت ناور—٦

चराकरदी मरा अज़ दिल फरामोश,
　　क्रि अज़ मुद्दत नबीनम मन तो ख़ामोश ।

तरहुम कुन लबे शीरीं बबुकशा,
　　निगह दारो गुना हम रा बबख़शा,

दिलो ज़ां नीज दारम बर तो कुरबान,
　　सरेम चश्मम् व हम इज्जत व हरमा ।

दिले पज़मुरदा अज दीदारे तो यार,
　　बियाबद ताजगी चूं गुल ब गुलज़ार ।

बएक लमहा दिही पिश्शेरा शाही,
　　कुनीं शाहां रा मुफलिस गर तो ख्वाही ।

बकुन अज दाम दुनियां हंस आज़ाद,
　　ज़ुज ईं दिगर न दारद हेच फरियाद ॥ ३ ॥

—※—
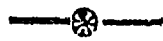
چراکردی مرا از دل فراموش　که از مدت به بینم من تو خاموش
ترحم کن لب شرین به بکشا　نگه دارو گنا هم را به بخشا
دل وجان نیز دارم بر تو قربان　سرم چشمم وهم عزت و حرمان
دل پژمرده از دیدار تو یار　بیابد تازگي چون گل به گلزار
بیک لمحه دهي پشه را شاهي　کني شاهان را مفلس گر تو خواهي
بکن از دام دنیا هنس آزاد　جز این دیگر ندارد هیچ فریاد —۳

४

सुबुह दम यार वपुरसीद कि तारीफे तो चीस्त,

मन बगुफ्तम बशनाश आशिके जां बाज़ तो कीस्त।

गर बरानीज़े दरेपाक तो ईं मुश्ते ख़ाक,

न र वम बे तो सनम गर दिही जन्नत ताज़ीस्त,

लफ्ज फिरदोसे इरम जन्नतो हम अर्शेबरीं,

बे तो बेकार वो बेमानी तलफ्फुज बाक़ीस्त।

दिलो जां बहरे तो कुरबान कुनद हंसस्वरूप,

अक्बर आ खूब बदानम कि तू यारमजानीस्त ।

—●—

۴

صبحدم یار بپرسید که تعریف تو چیست
من بگفتم بشناس عاشق جانباز تو کیست

گر برانی ز درپاک تو این مشت خاک
نروم بے تو صنم گر دهي جنت تا زیست

لفظ فردوس ارم جنت و هم عرش برین
بے تو بیکار و بے معني تلفظ با قیست

دل و جان بهر تو قربان کند هنس سروپ
اکبر آ خوب بدانم که تو یارم جانیست

५

आज़ाद शौ अज़ मान्नो मन दर ज़क़ज़क़ो बक़बक़ मशौ,
ऐ क़ल्बरा शफ़्फ़ाफ़ कुन दर बज़्मे गुमरा हां मरौ ।
याददार ईं पँदरा दरज़ाते खुदयाबी सुरूर,
दूर कुन अज़ दिल दमागत ख्वाहिशे ग़िलमानो हूर ।
उल्फ़तज़ जन्नत मदार ओ नफ़रतज़ दोज़ख मकुन,
आँचह यारत हुक्मरानद अज़ सरो चश्मत बकुन ।
सीनाअत गर ख़ाली अज़ कुफ़्रो मुसलमानी बवद,
यार रा बीनीदरां ता लफ़्ज़ बामानी शवद ।
हंस गर बेखे खुदी अज़ ख़ंजरे वहदत दरद,
ज़र्रए नाचीज़ बर अर्शेबरीं राज़े बरद ।

—o—

٥

آزاد شو از ما و من در زق زق و بق بق مشو
اے قلب را شفاف کن در بزم گمراہان مرو

یاد دار این پندرا درذات خود یابی سرور
دور کن از دل دماغت خواہش غلمان و حور

الفت از جنت مدار و نفرت از دوزخ مکن
آنچہ یارت حکم راند ازسرو چشمت بکن

سینہ ات گر خالی از کفرو مسلمانی بود
یار را بینی دراں تا لفظ با معنی شود

ہنس گر بیخ خودی از خنجرے وحدت درد
ذرۂ ناچیز بر عرش برین روزے برد

६

दिले मन काफ़िरो मन कैदे मुसलमानीअम,
इज्तमाये कि ईं ज़िदैन बजुज़ मानीअम।
दिले मन सख्त तरअज संगे जवाहिर दानी,
हैफ़ ईं नस्त कि मन मखमले काशानीअम।
दिले मन मुनकिरे काबा ओ कलीसा दानी,
मन शहीदम वहमा कायले कुरबानीअम।
अज्म कर्दम के सनाशम दिलो ज़ाते खुदरा,
अजमो अर्ब मनम या के खुरासानीअम।
कुव्वते नेस्त के इदराक मनम कार देहद,
चुग़्दे वीराना दरीं मुल्के हमा दानीअम।
खुदरा हुशियार बकुन बरदरे ऊ हंससरूप।
ईं सखुन गो के तलबगार मेहरबानीअम।

—❁—

٦

دل من کافر و من قید مسلمانی ام — اجتماعی که این ضدین بجز معنی ام
دل من سخت تر از سنگ جواهر دانی — حیف این است که من مخمل کاشانی ام
دل من منکر کعبه و کلیسا دانی — من شهیدم و همه قائل قربانی ام
عزم کردم که شناسم دل و ذات خود را — عجم و عرب منم یا که خراسانی ام
قوتی نیست که ادراک منم کار دهد — چغد ویرانه درین ملک همه دانی ام
خویش را هشیار بکن بردر او هنس سروپ ۔ این سخن گو که طلبگار مهربانی ام

७

तबस्सुम बर रुख़े आं यार बीनम,
गुले ख़न्दीदा दर गुल्ज़ार बीनम।
बदांनिस्तम् रुखश गंजीनये हुस्न,
कि हरसूयश क़तारे मार बीनम्।
चरा गुफ्ती कि ईं ख़ाले सियह हस्त,
कि दाग़े दिल बरां रुख़सार बीनम्।
गुजिस्ता अज़ सरे बाज़ार आं तुर्क,
कि हर पीरो जवां बेज़ार बीनम।
मसीहा देह मरा दारूए दीदार,
ज़ेहिज्रत मन् दिले बीमार बीनम।
ग़मओ रंजो अलम कर्दम फ़रामोश
कि अज पेशो क़फ़ा ग़मख्वार बीनम।
फ़ल्क देह 'हंसरा' रौशन जमीरी,
कि हर जानिब रुख़े दिलदार बीनम।

८

تبسم بر رخ آن یار بینم گل خندیده در گلزار بینم
بدانستم رخش گنجینهٔ حسن کہ ہرسویش قطار مار بینم
چرا گفتی کہ این خال سیہ ہست کہ داغ دلبراں رخسار بینم
گزشتہ از سر بازار آن ترک کہ ہر پیرو جوان بیزار بینم
مسیحا دہ مرا دارو یے دیدار زہجرت من دل بیمار بینم
غم و رنج و الم کردم فراموش کہ از پیش و قفا غمخوار بینم
فلک دہ ہنس را روشن ضمیری کہ ہر جانب رخ دلدار بینم

(उर्दूके पद्य हिन्दी अक्षरोंमें) ८

मुसाफिरत तै हुई हमारी ज़मीन व हरे कुरेए आसमां की,
हम आशिक़ों को नहीं थकावट चलो ख़बर लेवें ला मकां की ।
कहीं तो हासिल मुराद होगी उमीदका गुंचा खिल पड़ेगा,
दमाग़ से काफ़िरों के फिर बदगुमानी मिटजावे वेगुमां की ।
पहुँच दरे यार शोख़ी करके जो फाड डाले दुई का पर्दा,
तो देखले जलवह उस सनमका निशानी मिल जावे लानिशांकी ।
जो संग के काटनेमें अपनी बसर करे ज़िन्दगी दो रोज़ा,
कलामे शीरीं की गुफ्तगु में ज़बान खुलजावे बे ज़ुबां की ।
लिवास को छोड़ होजा उरियां तो देखले हंस इसका जादू,
कि जंगमें है ज़हूर ख़ूबी मियां ये शमशीर वे मियां की ।

—※—

اشعار اُردو ۸

مسافرت طے ہوئی ہماری زمیں و ہر کرہ آسمان کی
ہم عاشقوں کو نہیں تھکاوٹ چلو خبر لیوین لا مکان کی

کہیں تو حاصل مراد ہوگی اُمید کا غنچہ کھل پڑے گا
دماغ سے کافروں کے پھر بدگمانی متجاوے بیگمان کی

پہونچ در یار شوخی کرکے جو پھاڑ ڈالے دوئی کا پردہ
تو دیکھلے جلوہ اوس صنم کا نشانی ملجائے لا نشان کی

جو سنگ کے کاٹنے میں اپنی بسر کرے زندگی دو روزہ
کلام شرین کی گفتگو میں زبان کھلجائے بیزبان کی

لباس کو چھوڑ ہوجا عریاں تو دیکھلے ہنس اسکا جادو
کہ جنگ میں ہے ظہور خوبی میاں یہ شمشیر بے میاں کی

६

दिल जब दिया सनमको तो फ़ौरन मुकर गया,
जां क़ीमतीको छोड़ दिल अरज़ां करूंगा क्या।
जब जान दी तो हँस कर कहने लगा वह शोख़,
देखो तो नब्ज़ इसकी न रुकता हो कुछ रहा।
दिल और जान देके चढ़ा जब जनाज़ेपर,
चीं बरजबीं हो दूरसे मुँह मोड़ रह गया।
ताख़ीर ख़ेज़ असर मेरे शौक़े वस्लका,
खैंच उनको फिर तो गोर ग़रीबांमें लेगया।
दीं ठोकरें दो चार जो मेरे मज़ारपर,
हँस कर कहा कि ख़ाम था क्यों मुफ़्त मरगया।
इतने में लहद शक़ हुई जान आई हंस में,
रहम आगया उठाया गलेसे लगा लिया।

७

دل جب دیا صنم کو تو فوراً مکر گیا
جان قیمتی کو چھوڑ دل ارزاں کرونگا کیا
جب جان دی تو هنسکر کہنے لگا وہ شوخ
دیکھو تو اسکی نبض نہ رکتا ہو کچھ رہا
دل اور جان دیکے چڑھا جب جنازے پر
چین بر جبیں ہو دور سے مونھہ موڑ رہگیا
تاثیر خیز اثر میرے شوق وصل کا
کہینچ اونکو پھر تو گور غریباں میں لیگیا
دیں ٹھوکریں دو چار جو میرے مزار پر
هنس کر کہا کہ خام تہا کیوں مفت مر گیا
اتنے میں لحد شق ہوئی جان آئی هنس میں
رحم آگیا اوٹھایا گلے سے لگا لیا

१०

छुडाया यारने दुनियाके ख़ूनी पंजए सगसे,
हुआ बश्शास दिल से जानसे हर रेशा वो रगसे ।
कशिश उल्फतमें सुनता हूँ वह कुछ जज़बा भी कहते हैं,
ये दोनों बेश क़ीमत है हज़ारों क़ीमती नग से ।
वे हैं क़िस्मत के छोटे जिनको ये न्यामत नहीं हासिल,
चहे वे हों शहन्शाह दारफानीमें चलें मग से,
रुखे दिलदार से गाफ़िल लगा जक् जक् व बक्बक्में,
तो जानों भूलकर वह ठग गया है यां किसी ठग से,
मोहब्बत यार से करना रुखे दिलदार पर मरना,
ये दो जुमले सिखाकर अब चला है हंस इस जग से

١٠

چھڑایا یارنے دنیا کہ خوني پنجۂ سگ سے
ہوا بشاش دل سے جان سے ہر ریشۂ و رگ سے
کشش اُلفت میں سنتا ہون وہ کچھہ جزبہ بھي کہتے ہین
یہ دونون بیش قیمت ہین ہزارون قیمتی نگ سے
وے ہین قسمت کے چھوٹے جنکویہ نعمت نہین حاصل
چہے وے ہون شہنشاہ دارفاني مین چلین مگ سے
رخ دلدار سے غافل لگا زق زق و بق بق مین
تو جانو بھول کر وہ ٹھگ گیا ہے یان کسي ٹھگ سے
محبت یار سے کرنا رخ دلدار پر مرنا
یہ دو جملے سکھا کر اب چلا ہے ہنس اس جگ سے

११

साक़िया जाम मय शौक़ का घोंटा तो पिला,
छोड घर बार नजानू हूं कहां मैं हूं चला,
कोशिशें लाख हुईं मेरी तरफ से यारो,
एक ज़र्रा भी मगर राज़े मोहब्बत न खुला।
किसी आशिक़ के बुरे हाल पै रोऊँ कबतक,
क्या कहूं अपनी ही हालत मुझे देती है रुला।
दर्द फ़ुर्क़त को तो देखो कि हर एक लमहे में,
क़तरहा अश्क मेरी आंखो से देताहै चुला।
गंज क़ारूँ भी तुला कम बतराज़ूए अजल,
आशिक़े-रब किसी पल्ले में कभी कम न तुला।
जिस की तलाश में दिनरात परीशान था हंस,
ज़हे क़िस्मत के वह तो अपने ही सीनेमें मिला।

११

ساقیا جام مے شوق کا گھونٹا تو پلا
چھوڑ گھر بار نجانوں ہوں کہاں میں ہوں چلا
کوششیں لاکھ ہوئیں میری طرف سے یارو
ایک ذرہ بھي مگر راز محبت نہ کھلا
کسی عاشق کے برے حال پہ روؤں کب تک
کیا کہوں اپني هي حالت مجھے دیتي ہے رلا
درد فرقت کو تو دیکھو کہ ہر اک لمحہ میں
قطرہ ہا اشک میری آنکھونسے دیتا ہے چلا
گنج قارون بھي تلا کم بہ ترازوے اجل
عاشق رب کسي پلہ میں کبھي کم نہ تلا
جسکي تلاش میں دن رات پریشان تھا ہنس
زہے قسمت کہ وہ تو اپنے هی سینہ میں ملا

१२

रुखे दिलदार से इक टुकड़ा कहीं नूरका छूटा,
हूरो ग़िलमानो फ़रिस्तोंने उसे ख़ूबही लूटा।
उनसे बच करके जो कुछ क़ालिबे इन्सान में आया,
चमने यार में उल्फ़त का लगाया बूटा।
क़ैसो फ़रहाद औ ज़ुलेख़ासे तो जाकर पूछो,
मये उल्फ़तका सुबू जिनसे न फोड़े फूटा।
देवो जिन और मलायक से हिलाये न हिला,
सीने पर जिसके गड़ा इश्क़का बेंड़ा खूँटा।
बद नसीबीने मगर हां तेरे दिल ख़स्ताको हंस,
ऐसी न्यामत से हटा दस्तए ग़मसे कूटा।

١٢

رخ دلدار سے اِک ٹکڑا کہین نور کا چھوٹا
حور و غلمان و فرستون نے اوسے خوب ھي لوٹا
اُون سے بچکر کے جو کچھہ قالب انسان مین آیا
چمن یار مین اُلفت کا لگایا بوٹا
قیس و فرھاد و زلیخا سے تو جاکر پوچھو
* مئے اُلفت کا سبو جنسے نہ پھوڑے پھوٹا
دیو و جن اور ملایک سے ھلائے نہ ھلا
سینہ پر جسکے گڑا عشق کا بینڑا کھونٹا
بدنصیبي نے مگر ھان تیرے دل خستہ کو ھنس
ایسي نعمت سے ھٹا دستہ غم سے کوٹا

---

* اسے مئے محبت بهي پڑھ سکتے ھیں

१२

मरीज़ इश्क़ की लाहल दवा करे न कोई,
दवा करे तो फेर पर मरे मरे न कोई ।
मरे अगरे तो बने क्यों न मजनूँ से लैला,
बहिश्त मिलने की ख़्वाहिश भी फिर करे न कोई ।
हुबाब फूट मिला जब कि मौज दरिया से,
तो जुज़को कुलसे इलहदा कहीं करे न कोई ।
अगरे बिठाले कभी नूह अपनी कश्ती में,
तो फिर कहीं किसी तूफ़ान से डरे न कोई ।
हज़ारों बार हुआ ज़िबह हंस उसके लिये,
अब अपनी बिस्मिली का किसी जापै दम भरे न कोई ।

١٣

مریض عشق کي لاحل دوا کرے نہ کوئي
دوا کرے تو کرے پہر مرے مرے نہ کوئي

مرے اگر تو بنے کیوں نہ مجنوں سے لیلي
بہشت ملنے کی خواهش بهي پهر کرے نہ کوئي

حباب پهوٹ ملا جب کہ موج دریا سے
تو جز کو کل سے علحدہ کہين کرے نہ کوئي

اگر بٹها لے کبهي نوح اپني کشتي مين
تو پهر کهين کسي طوفان سے ڈرے نہ کوئي

هزاروں بار هوا ذبح هنس اوسکے لئے
اب اپني بسملي کا کسی جاپہ دم بهرے نہ کوئي

१४

सब तर्फ़ से हटा कर दिल देदिया है तुमको,
अब मुर्दतन पड़ा हूं फिर क्या बताऊं तुमको।
आते नज़र नहीं हैं यां ख़ेशो अक़रबा अब,
तुम ख़ुद कहो कि अब मैं क्या क्या बनाऊँ तुमको।
आक़ा अगर बनाऊं ख़िदमत न जानू कुछ भी,
जब काम कुछ बताओ उज़्रे सुनाऊं तुमको।
मादर पिदर बिरादर का रिश्ता गर लगाऊं,
बेरिश्ता लोग कहते कैसे मैं पाऊं तुमको।
गर दोस्त तुमको कहदूं चढ़जावें त्योरियां झट,
तुम शाह हो गदा से कैसे मिलाऊं तुमको।
गर पीर मैं बनाऊं लायक़ मुरीद कब हूं,
नालायक़ी मैं अपनी कितनी जनाऊँ तुमको।
सब तौर से बुरा हूं पर हूं तुम्हारा साहिब,
तुम हंस के जिगर हो कैसे हटाउँ तुमको।

—❀—

١٤

سب طرفسے ھٹا کر دل دیدیا ہے تمکو اب مردتن پڑا ھوں پھر کیا بتاؤں تمکو
آتے نظر نہیں ھین یان خویش و اقربا اب تم خود کھو کہ اب مین کیا کیا بناؤں تمکو
آقا اگر بناؤں خدمت نجانوں کچھہ بھی جب کام کچھہ بتاؤ عذریں سناؤں تمکو
مادر پدر برادر کا رشتہ گر لگاؤں بے رشتہ لوگ کہتے کیسے مین پاؤں تمکو
گر دوست تمکو کھدوں چڑھجاوین تیوریان جھٹ تم شاہ ھو گدا سے کیسے ملاوں تمکو
گر پیر میں بناؤں لایق مرید کب ھوں نالایقی مین اپنی کتنی جناؤں تمکو
سب طور سے برا ھوں پر ھوں تمھارا صاحب تم ھنس کے جگر ھو کیسے ھٹاؤں تمکو

१५

आज क्यों नज़रें आपकी टेढ़ीसी हैं,
भौहें चढती हुई वो त्योरियां बेड़ीसी हैं।
तुम गुनाहों को मेरे दिल में न लाओ साहिब,
अब करो मुआफ़ ज़ियादा न सताओ साहिब।
क़त्ल करनेकी जो ख़्वाहिश हो तो सर हाज़िर है,
नोक मिज़गां के तले मेरा जिगर हाज़िर है।
आपका होके जो फ़ेलों की जज़ा पाऊँ मैं,
है तआज्जुब कि गुनाहोंकी सज़ा पाऊं मैं।
नाज़ बरदार तुम्हारा हूं नहीं इस में कलाम,
जानलो हंस को तुम अपने ग़ुलामोंका ग़ुलाम।

١٥

آج کیون نظرین آپکي ٹیڑھي سي هیں
بھوین چڑھتي هوئین و تیوریان بیڑیسي هین

تم گناهون کو میرے دل مین نه لاؤ صاحب
اب کرو معاف زیاده نه ستاؤ صاحب

قتل کرنے کي جو خواهش هو تو سر حاضر هے
نوک مژگان کے تلے میرا جگر حاضر هے

آپکا هوکے جو فعلون کي جزا پاون مین
هے تعجب که گناهون کي سزا پاؤن مین

ناز بردار تمهارا هون نهین اس مین کلام
جان لو هنس کو تم اپنے غلامونکا غلام

१६

पड़ा रहूं रहे उश्शाक़ में कभी न कभी,
सवारी उनकी इधर को निकल पड़ेगी सही।
कुचल गया तो मिली राह जावदानी की,
बला से क़ालिब ख़ाकी में जां रही न रही।
संभल गया तो पकड़लूंगा फिर अनान उनकी,
मिले थे रोज़ अज़ल को जो हो तुम्हीं न वही।
यह जुम्ला कहके गिरूंगा मैं पाक क़दमो पर,
रकाब संग चलूँ आरज़ू दिली है यही।
रकाब क़दमे मुक़द्दस न पकड़ी जिसने हंस,
वह मुफ्त यां से गया देखो दोनों दस्त तिही।

١٦

پڑا رهوں ره عشاق میں کبھي نه کبھي
سواري اونکي ادهر کو نکل پڑیگي سہي

کچل گیا تو ملي راه جاوداني کي
بلا سے قالب خاکي میں جان رهي نه رهي

سنبھل گیا تو پکڑلونگا پھر عنان اونکي
ملے تھے روز ازل کو جو هو تمہیں نه وهي

یه جمله کہکے گرونگا میں پاک قدموں پر
رکاب سنگ چلوں آرزو دلي ہے یہي

رکاب قدم مقدس نه پکڑي جسنے هنس
وه مفت یاں سے گیا دیکھو دونو دست تہي

१७

जो सरकण्डा व सुतली हाथ लेकर,
मैं छाऊं घर का अपने टूटा छप्पर।
जो घर में होवे टूटी चार पाई,
हथेली पर नहीं हो एक पाई।
जिधर देखो उधर टट्टी भी टूटी,
पकाने की खपड़िया भी हो फूटी,
टपकतीं बूंद भीगे कोहना बिस्तर।
फटी कुरती भी तर होवे सरासर,
जो बाज़ूये सनम पर हंस सर हो,
तो फिर अर्शे बरीं ये तंग घर हो।

۱۸

جو سرکنڈا و ستلی ہاتھ لیکر
میں چھاؤں گھر کا اپنے ٹوٹا چھپر

جو گھر میں ہووے ٹوٹی چارپائی
ہتھیلی پر نہیں ہو ایک پائی

جدھر دیکھو ادھر ٹٹی بھی ٹوٹی
پکانے کی کھپڑیا بھی ہو پھوٹی

ٹپکتیں بوند بھیگے کہنہ بستر
پھٹی کرتی بھی تر ہووے سراسر

جو بازوے صنم پر ہنس سر ہو
تو پھر عرش بریں یہ تنگ گھر ہو

१८

+देता है लुत्फ़ जामे मय ख़ुशगवार ख़ास,
पहलू में हम पियाला हो जब अपना यार ख़ास।

सब रक्सो कुनां वज्द में रेहते हैं सुबोह शाम,
जब मय कशोंको मिलती है फ़स्ले बहार ख़ास।

क्या बादए गुलगूँ में रंग भरता है दुचन्द,
साक़ी हो जबकि लालह रू व गुलअज़ार ख़ास,

हैं क़हक़हे साग़िर में सुबू झूम रहे हैं,
मयख़ानह में पीता है कोई तरहदार ख़ास।

ज़ाहिद जो मयके पीने में कुछ उज़्र करेगा,
भरदूंगा तेरे प्याले में गर्दो ग़ुबार ख़ास।

मय ख़ानए आलम में सभी एक तरह हैं,
दीवाना हो मस्ताना हो, हो होशियार ख़ास,

है हंस बना चश्मये क़ौसेरे से तेरा मय,
महशर तलक रहेगा यह तेरा ख़ुमारे ख़ास।

(+ देता है लुत्फ़ जाम मय ख़ुशगवार ख़ास)
इस पदको मुज़फ्फरपुरे मुस्लिम कविमंडलके विद्वानोंने श्री १०८ स्वामी हंस स्वरूपजी महाराज के पास पूर्ति करनेके लिये भेजा था जिसकी पूर्ति उपर्युक्त पदोंमें कर दी गयी।

१६

कबतक हंसी करावगे मुझको ज़लील करके,
　　क्यों नाक काटते हो मुझको शकील करके ।
दरबार में तुम्हारे इन्साफ़ क्या नहीं है,
　　फिर किसको मैं बुलाऊं अपना वकील करके ।
अय शाह दो जहां के मुआफ़ी का आसरा है ।
　　वह कौन है जो जीते तुमसे दलील करके ।
मैं अपनी जां बरी को आलम में जुस्तजूकी,
　　पाया न कोई शाफ़ी लाखों सबील करके ।
चर्खे कुहन ने अपनी चक्की में पीस डाला,
　　शुर्फ़ाय बे गुनाह को पूरा रेज़ील करके ।
गर्चेह गुनाह मेरे अम्बार से लगे हैं,
　　पर उनकी तुम सज़ा दो उनको क़लील करके ।
इस हंसरूप के दिन क़दमों में तेरे गुज़रे,
　　अब किसका आसरा ले अपना ख़लील करके ।

—०—

19

کبتک هنسي کراوگے مجھکو ذلیل کرکے　کیون ناک کاٹتے هو مجھکو شکیل کرکے
دربار مین تمھارے انصاف کیا نہین ہے　پھر کسکو مین بلاؤن اپنا وکیل کرکے
اےشاه دو جهان کے معافي کا آسرا ہے　وه کون هے جو جیتے تمسے دلیل کرکے
مین اپني جان بري کو عالم مین جستجو کي　پایانه کوئی شافي لاکھون سبیل کرکے
چرخ کہن نے اپني چکي مین پیس ڈالا　شرفائے بے گناه کو پورا رزیل کرکے
گرچه گناه میرے انبار سے لگے هین　پر اونکي تم سزا دو اونکو قلیل کرکے
اِس هنس روپ کے دن قدمونمین تیرے گزرے　اب کسکا آسرا لے اپنا خلیل کرکے

१६

२०

तौसीफ़ उस सनम की सीने पै क्या लिखूं,
दिलदार बेवफ़ा लिखूं या बावफ़ा लिखूं ।
नैरंगियां जो आईं नज़र उसकी ज़ात में,
मैं उनको पुरदग़ा लिखूं या पुरजफ़ा लिखूं ।
देखा है जौरो लुत्फ़ लिये दोनों हाथ में,
राज़ी लिखूं मैं उसको या मुझ से ख़फ़ा लिखूं ।
दीदार उसकी करती है दरदे जिगरको दूर,
मैं उनको नुसख़ा मर्ज़ लिखूं या शफ़ा लिखूं ।
दाख़िल है मुद्दतोंसे अर्ज़ी विसाल की
मर्ज़ी अगर न होवे तो फिर इस्तिफ़ा लिखूं ।
हंस स्वरूप रोज़े अज़ल से व हश्र तक,
मैं उस को रास्तो चप लिखूं पेशो क़फ़ा लिखूं ।

۲۰

توصیف اوس صنم کي سینه په کیا لکهوں
دلدار بیوفا لکهوں یا باوفا لکهوں
نیرنگیاں جو آئیں نظر اوس کي ذات میں
مین اونکو پر دغا لکهوں یا پرجفا لکهوں
دیکها ہے جورو لطف لئے دو نوں هاتهه مین
راضی لکهوں مین اونکو یا مجهسے خفا لکهوں
دیدار اوسکي کرتی هے درد جگر کو دور
مین اوسکو نسخه مرض لکهوں یا شفا لکهوں
داخل هے مدتوں سے عرضي وصال کي
مرضي اگر نه هووے تو پهر استعفاء لکهوں
هنسا سروپ روز ازل سے وه حشر تک
مین اوسکو راست وچپ لکهوں پیش و قفا لکهوں

२१

कहो क्यों आज उमडता है कलेजा मेरा,
वस्ल के शौक़ से भरता है कलेजा मेरा ।
शायद आमद है कहीं आज शहेखूबांकी,
पर रक़ीबों से यह डरता है कलेजा मेरा ।
हुक्मा केहते हैं लाहिल है दवा इसकी नहीं,
ज़ख़्मे हिज्र से सड़ता है कलेजा मेरा ।
शेख़ से कहदो कि लेजावे सफ़ीना अपना,
वाज़ शरई से बिगड़ता है कलेजा मेरा ।
वेदो क़ुरआन व तोरेत व अंजील नहीं,
आयते इश्क़ को पढ़ता है कलेजा मेरा ।
आज ही मौत का सामान है अय हंसे स्वरूप,
कारे दुनियां से निबड़ता है कलेजा मेरा ।

۲۱

کہو کیوں آج اومڑتا ہے کلجہ میرا
وصل کے شوق سے بہرتا ہے کلیجہ میرا
شاید آمد ہے کہیں آج شۂ خوباں کي
پر رقیبو نسے یہ ڈرتا ہے کلیجہ میرا
حکما کہتے هین لاحل ہے دوا اسکي نہین
زخم هجر سے سڑتا ہے کلیجہ میرا
شیخ سے کہدو کہ لیجاوے سفینہ اپنا
وعظ شرعي سے بگڑتا ہے کلیجہ میرا
وید و قرآں و توریت و انجیل نہین
آیت عشق کو پڑعتا ہے کلیجہ میرا

آج هي موت کا سامان ہے اے هنس سروپ
کار دنیا سے نبڑتا ہے کلیجہ میرا

२२

इन दिनों दर्दे जिगर जख़्म जिगर दोनों हैं,
सच है ये नख़्ले महोब्बत के समर दोनों हैं।
दीनो दुनिया को जो माक़ूल नज़र से देखा,
क़ैद करने के यह ज़ंजीर बतर दोनों है।
ज़ेरे आफ़ाक़ के यह ख़ाकी व आबी देखो,
क़ुदरती फ़र्श बिछे बरों बहर दोनों हैं।
तेरी तोसीफ़ बयां करने में सुम्मुम व बकुम,
देख अंगुश्त बलब नज्मो नसर दोनों है।
जुस्तजू में तेरे हैरान शबो रोज़ सनम,
मशरक़ो मग़रब की तरफ़ माह महर दोनों हैं।
हंस कहता है चलो देर हुई घर अपने,
शबे तारीक है यां ख़ौफ़ो ख़तर दोनों है।

۲۲

ان دنون درد جگر زخم جگر دونون ھھین
سچ ہے یہ نخل محبت کے ثمر دونون ھھین
دیں و دنیا کو جو معقول نظر سے دیکھا
قید کرنے کے یہ زنجیر و بتر دونون ھھین
زیر آفاق کے یہ خاکي و آبی دیکھو
قدرتي فرش بچھے بر و بحر دونوں ھھین
تیری توصیف بیان کرنے مین صمم و بکم
دیکھہ انگشت بلب نظم و نشر دونون ھھین
جستجو مین تیرے حیران شب و روز صنم
مشرق و مغرب کي طرف ماہ و مہر دونون ھین

ھنس کہتا ہے چلو دیر ہوئي گھر اپنے
شب تاریک ہے یان خوف و خطر دونون ھین

२३

गोदे मादर में जिसे सुबुह को रोते देखा
शाम को गोदे लहद में उसे सोते देखा।

क्या कहूं दारे फ़नाई के तमाशे यारो,
हर बशर को दुरे अफ़गार पिरोते देखा।

उज्बे शाही से जो दिन रात अकड़ते फिरते,
उनको फिर जामए अफ़लास को धोते देखा।

इश्क़ कामिल नहीं जादूय बला ख़ेज़ है हंस,
क़ीमती जान जहां लाखों को खोते देखा।

۲۳

گود مادر میں جسے صبح کو روتے دیکھا
شام کو گود لحد میں اُسے سوتے دیکھا

کیا کہوں دار فنائي کے تماشے یارو
ہر بشر کو در افگار پروتے دیکھا

عجب شاهي سے جو دن رات اکڑتے پھرتے
اونکو پھر جامۂ افلاس کو دھوتے دیکھا

عشق کامل نہیں جادوے بلا خیز ہے ہنس
قیمتي جاں جہاں لاکھوں کو کھوتے دیکھا

२४

मय उल्फ़त का तो इक जाम पिलादे साक़ी,
गाऊँ ऐसा न रहै कोई तराना बाक़ी।
ढूँढते ढूँढते सहरा व बियाबान सभी,
हो चुके ख़त्म रहा कूचए जाना बाक़ी।
मुझे उस्तादने सिखलादिये कुरआनो हदीस,
सबक़े इश्क़ रहा एक पढ़ाना बाक़ी।
मिलचुकी आखैं मेरी शौक़से हर फ़र्दो बशरसे,
चश्मे जानासे रहा एक मिलाना बाक़ी।
दूरअन्देशो फ़हीमो बड़े दाना व अक़ील,
गये घर अपने रहा हंस दीवाना बाक़ी।

۲۴

مئے اُلفت کا تو اِک جام پلادے ساقي
گاؤن ایسا نه رهے کوئيَ ترانا باقي

ڈهونڈهتے ڈهونڈهتے صحرا و بیابان سبهي
هوچکے ختم رها کوچۂ جاناں باقي

مجهے اُستاد نے سکهلادے قراں و حدیث
سبق عشق رها ایک پڑهانا باقي

ملچکي آنکهین میري شوق سے هر فرد بشر سے
چشم جانان سے رها فقط ملانا باقي

دور اندیش و فهیم و بڑے دانا و عقیل
گئے گهر اپنے رها هنس دیوانا باقي

२५

मेरे प्यारे मुझे क्यों इस तरह बरबाद करते हो,
तुम अपने बन्दों के बन्दे को क्यो नाशाद करते हो।
गुनहगारों का अफ़सर हूं मुझे ख़िलअत इनायत हो,
सुना है ख़ानमा बिगडा हुआ आबाद करते हो।
कभी यक पिश्शह को तुम एक पल में शाह करते हो,
शहन्शाहों को लमह भर में बे बुनियाद करते हो।
दरे दौलत पे मैं रोज़े अज़ल से हूं कमर बस्ता,
बजा लाऊँ सरो चश्मों से क्या इरशाद करते हो।
रिहाई बख़्शते हो गर असीरे दाम दुनियां को,
तो देखूं हंस को फिर किस तरह आज़ाद करते हो।

—⊛—

۲۵

میرے پیارے مجھے کیون اسطر برباد کرتے ہو
تم اپنے بندونکے بندہ کو کیون ناشاد کرتے ہو
گنہگارونکا افسرھون مجھے خلعت عنایت ہو
سناھے خانما بگڑا ھوا آباد کرتے ہو
کبھي اک پشۃ کو تم ایک پل مین شاہ کرتے ہو
شہنشاھون کولمحہ بھر مین بے بنیاد کرتے ہو
در دولت پہ مین روز ازل سے ہون کمر بستہ
بجا لاؤن سرو چشمون سے کیا ارشاد کرتے ہو
رھائي بخشتے ہو گر اسیر دام دنیا کو
تو دیکھون ھنس کو پھر کسطرح آزاد کرتے ہو

२६

वह कौनसा मज़हब है जो आला है सभौं पर,
हर मुल्क मैं हर क़ौम में बाला है सभौं पर।
है इश्क़ हक़ीक़ीका वह मज़हब सुनो यारो,
रिन्दौंने जिसे ढूँढ निकाला है सभौं पर।
क्या हिन्दू मुसलमान औ ईसाई यहूदी,
मस्जिद हो या मंदिर हो दुबाला है सभौं पर,
जिस मज़हबो मिल्लतका हर इक फ़र्द है क़ायल,
जिस शमश्र के जलने से उजाला है सभौं पर।
जिस दीनका पैग़म्बर व हामी व रसूल,
उस यारेने ख़ुद बनके सँभाला है सभौं पर।
जिस फ़िरक़ें के सब लोग सदा रहते हैं मद होश,
अय हंस ढंग जिसका निराला है सभौं पर।

٢٦

وہ کونسا مذھب ھے جو اعلي ھے سبھوں پر
ھرملک مین ھرقوم مین بالا ھے سبھون پر
ھے عشق حقیقي کا وہ مذھب سنو یارو
رندوں نے جسے ڈھونڈ نکالا ھے سبھون پر
کیا ھندو مسلماں او عیسائي یہودي
مسجد ھو یا مندر ھو دوبالا ھے سبھون پر
جس مذھب و ملت کا ھر اک فرد ھے قایل
جس شمع کے جلنے سے اوجالا ھے سبھون پر
جس دین کا پیغمبر و حامي و رسول
اوس یار نے خود بن کے سنبھالا ھے سبھون پر
جس فرقے کے سب لوگ سدا رھتے ھین مد ھوش
اے ھنس ڈنگ جسکا نرالا ھے سبھوں پر

२७

किसी दिन एक जा मैं था व तू था,
जो तू गुर था तो मैं भी ख़ुश गुलू था।

मैं आशिक़ था व तू माशूक़ मेरा,
मैं था सादिक़ सहर ख़ुरशीद तू था।

जो तू बाग़े इरम था मैं सबा था,
जो तू गुल था तो मैं भी वाँ पै बू था।

जो तू था हुस्न मैं भी वाँ अदा था,
जो तू ख़ूबी था मैं भी ख़ूबरू था।

रहा करते थे इक मशरब में दोनों,
जो मैं था जाम तू मेरा सुबू था।

जो तू इस्लाम था मैं दीन था वाँ,
जो तू नारा अज़ां था मैं वज़ू था।

जो तू था बहर मैं था मौजे साहिल,
जो तू था नहर मैं भी आबजू था।

ज़ो तू रोज़ा था मैं भी था नमाज़ी,
ज़ो तू सुबहान सिजदा मैं रुकू था।

भुलाई क्यों ये सारी बातें तूने,
हमेशा " हंस " तेरे रूबरू था॥

२०

۲۷

کسي دن ایک جا مین تھا و تو تھا
جو تو سر تھا تو مین بھي خوش گلو تھا

مین عاشق تھا و تو معشوق میرا
مین تھا صادق صحر خور شید تو تھا

جو تو باغ ارم تھا مین صبا تھا
جو تو گل تھا تو مین بھي وان پہ بو تھا

جو تو تھا حسن مین بھي وان ادا تھا
جو توخوبي تھا مین بھي خوبرو تھا

رہا کرتے تھے اک مشرب مین دونون
جو مین تھا جام تو میرا سبو تھا

جو تو اسلام تھا مین دین تھا وان
جو تو نعرہ اذان تھا مین وضو تھا

جو تو تھا بحر مین تھا موج ساحل
جو تو تھا نہر مین بھي آبجو تھا

جو تو روزہ تھا مین بھي تھا نمازی
جو تو سبحان سجدہ مین رکوع تھا

بھلا تمہیں کیون یہ ساري باتین تونے
ہمیشہ ہنس تیرے روبرو تھا

२८

बुल्बुले नालां से कहदो छोडदे तर्ज़े फ़ुग़ाँ,
फ़िक्र लाखों कर थके बोले नहीं गुल वेदहां ।

धोके से वह फँस गया है इश्क़ में बेरूह के,
लुत्फ़ उल्फ़त का कहां माशूक़ हो जब बे ज़ुबां ।

है मुहब्बत बे मज़ा ज़ीरूहका बेरूह से,
सदमा परवाना शमा पर कुछ नहीं होता अयां ।

इसलिये हरगिज़ मुहब्बत मत करो नादान से,
दर्दे हिज्रां सामने पत्थर के क्यों करना बयां

हंस भी दुनियां की ऐसी बेवफ़ाई देखकर,
छोडकर मानससरोवर चलचला है लामकां

—※—

۲۸

بلبل نالان سے کہدو چھوڑدے طرز فغا ن
فکر لاکھون کر تھکے بولے نہین گل بید ھا ن

دھوکے سے وہ پھنس گیا ہے عشق مین بے روح کے
لطف الفت کا کہا ن معشوق ھو جب بیزباں

ہے محبت بے مزہ ذی روح کا بے روح سے
صدمہ پروانہ شمع پر کچھہ نہیں ھو تا عیاں

اسلئے ھرگز محبت مت کرو ناداان سے
درد ھجران سامنے پتھر کے کیون کرنا بیان

ھنس بھی دنیا کی ایسی بیوفائی دیکھکر
چھوڑ کر مانس سرور چل چلا ہے لامکان

२९

वे ग़मगुसार मेरे आये चले गये,
वे निगहदार मेरे आये चले गये।
आंखें थी ग़र्क़ मेरी दरियाये फ़िक्र में,
देखा नहीं कि कैसे वे आये चले गये।
लाखों शकील नाज़ुक हुस्नो अदा के साथ,
इस दारे बेबक़ा में आये चले गये,
नौशीरवां सिकन्दर दारा से नामवर,
दो दिन के लिये दहर में आये चले गये।
अए हंस रह न ग़ाफ़िल तू भी चलेगा इकदिन,
तुझ से हज़ारों आसी आये चले गये।

—❀—

۲۹

وے غمگسار میرے آئے چلے گئے
وے نگہدار میرے آئے چلے گئے

آنکھین تھین غرق میري دریاے فکر مین
دیکھا نہین کہ کیسے وے آئے چلے گئے

لاکھون شکیل نازک حسن و ادا کے ساتھہ
اس دار بیبقا میں آئے چلے گئے

نوشیروان سکندر دارا سے نامور
دو دن کے لئے دھر میں آئے چلے گئے

اے ھنس رہ نہ غافل تو بھي چلیگا اک دن
تجھسے ھزارون عاصي آئے چلے گئے

३०

इक तरफ़ है मौत इस्तादा सरे बालीन पर,
पायताने की तरफ़ वैदो हकीमो डाक्टर।
दाहिने रोते खड़े सब अपने ख़ेशो अक़रेबा,
और बायें दुख़्तरो फ़रज़न्दोहम मादर पिदर।
अपनी हिम्मत भर कोई कुछ बाज़ आता है नहीं,
पर किसी की कुछ नहीं चलती है ताक़त मौत पर।
अलविदा वो अलविदा वो अलविदा वो अलविदा,
हो गया पूरा सुनो अब आज दुनियां का सफ़र।
लीजिये अब दण्डवत आदाब तस्लीमो दुआ,
हंस जाता है अकेला दारेफ़ानी छोड़कर।

—●—

۳۰
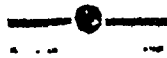
اِک طرف ہے موت استادہ سر بالین پر
پائتانے کي طرف بیدو حکیم وڈاکٹر

داھنے روتے کھڑے سب اپنے خویش و اقربا
اور بائیں دختر و فرزند و ھم مادر پدر

اپني همت بهر کوئي کچھ باز آتا ہے نہیں
پر کسي کي کچھ نہیں چلتي ہے طاقت موت پر

الوداع و الوداع و الوداع الوداع
ھو گیا پورا سنو اب آج دنیا کا سفر

لیجئے اب دنڈوت آداب تسلیم و دعا
ھنس جاتا ہے اکیلا دارفانی چھوڑ کر

३१

कुल्फ़ते दुनिया है दुश्मन उल्फ़ते दिलदार का,
दूर कुल्फ़तको करो हासिल हो वस्ल उस यारका।
काफ़ को बदलो अलिफ़ से रखलो फिर सीनेमें तुम,
मश्क़ करलो रोज़ो शब माकूस लफ्जे मारका।
जब मुलायम हों तो सारे ऐब छुप जावें दिला,
गुलके ख़्वाहिशमन्दको सदमा नहीं कुछ ख़ारेका।
सोहबते शुरफ़ाय से पुम्बा भी फ़ज़ीलत पाता है,
दर गुलूये बिरेहमन रुतबा बढ़ा ज़ुन्नारका।
हंस अपने मानसर में यह सदा देता है रोज़,
अय मसीहा नुस्ख़ाह दे तू इस दिले बीमारका।

۳۱

کلفت دنیا ہے دشمن اُلفت دلدار کا
دور کلفت کو کرو حاصل ہو وصل اُس یار کا

کاف کو بدلو الف سے رکھ لو پھر سینہ میں تم
مشق کر لو روز شب معکوس لفظ مار کا

جب ملایم ہوں تو سارے عیب چھپ جاویں دلا
گل کے خواہشمند کو صدمہ نہیں کچھ خار کا

صحبت شرفاء سے پنبہ بھی فضیلت پاتا ہے
در گلوے برہمن رتبہ بڑھا زنار کا

ہنس اپنے مانسر میں یہ صدا دیتا ہے روز
اے مسیحا نسخہ دے تو اِس دل بیمار کا

३२

दिले आशिक़ ने कहा साबुने ग़म को मलकर,
हो गया साफ़ जो कुछ दाग़ था पहला मुझपरे।
मैं जो मजनूँ सा मेरे हिज्र में रहता मजनूँ,
कर क्या सकती थी इक ज़र्रा भी लैला मुझपरे।
हिज्र से जंग में तो मैं भी हूं रुस्तम मानी,
काम देती हैं मेरी सब्र की सिपरें मुझपर।
नोक मिज़गाने सनम से है छिदा मेरा जिगर,
आहनी तीर चहो जितने चलालो मुझपर।
हंस घबराता नहीं क़त्ल व क़ुरबानी से,
बार लख तेग़ निगह यार चलाले मुझपर।

۳۲
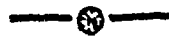
دل عاشق نے کہا صابن غم کو ملکر
ہو گیا صاف جو کچھہ داغ تھا پہلا مجھپر
مین جو مجنوں سا میرے ھجر مین رھتا مجنون
کر کیا سکتی تھی اِک ذرہ بھی لیلیٰ مجھپر
ھجر سے جنگ مین تو مین بھی ھون رستم ثانی
کام دیتی ھین میری صبرکی سپرین مجھپر
نوک مژگان صنم سے ہے چھدا میرا جگر
آھنی تیر چہو جتنے چلا لو مجھپر
ھنس گھبراتانہین قتل و قربانی سے
بار لکھہ تیغ نگہ یار چلا لے مجھپر

३३

रोते रोते ये मेरी सर्दमकें बैठ गईं,
सदमय हिज्र से यह सारी रगें बैठ गईं ।
देखकर शहे ख़ूबां के कहीं हुस्नो जमाल,
हूर जन्नत की सभी शर्म से चुप बैठ गईं ।
जादूगर ने कहीं कुछ पढ़के जो फूँका अफ़सूं,
कौडियां दर्दउड़ीं इश्क़ के सर बैठ गईं ।
तनपै मलते थे शबो रोज़ जो कुमकुम चन्दन,
हड्डियां उनकी तये ख़ाक सभी बैठगई ।
क्या कहूँ इश्क़ के मैदान में उड़ते उड़ते,
बालो पर हंस की परवाज़ सभी बैठगईं ।

—●—

۳۳

روتے روتے یہ میری مردمکیں بیٹھ گئیں
صدمہ ہجر سے یہ ساری رگیں بیٹھ گئیں
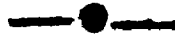
دیکھ کر شہ خوباں کے کہیں حسن و جمال
حور جنت کی سبھی شرم سے چپ بیٹھ گئیں

جادوگر نے کہیں کچھ پڑھ کے جو پھونکا افسوں
کوڑیاں درد اڑیں عشق کے سر بیٹھ گئیں

تن پہ ملتے تھے شب و روز جو کمکم چندن
ھڈیاں اونکی تہ خاک سبھی بیٹھ گئیں

کیا کہوں عشق کے میدان میں اڑتے اڑتے
بال و پر ھنس کی پرواز سبھی بیٹھ گئیں

३४

कुफ़स से अब मुझे आज़ाद करदे, अरेसैयाद मुझको शाद करदे,

करूं परवाज़ जा बैठूं चमन में, कहीं सम्बुल कहीं शम्शाद करदे।

तुझे फिर चहचहे शीरीं सुनाऊं, मेरे आगे मेरा फ़रहाद करदे,

फ़लकने सख्तियां डालीं जो मुझपर, उन्हें तू एकदम बरबाद करदे।

अरे ओ हंस क्यों है पा बज़ंजीर, मन ओ तू दोनों बेबुनियाद करदे।

—●—

۳۴

قفس سے اب مجھے آزاد کردے — ارے صیاد مجھکو شاد کردے

کرون پرواز جا بیٹھون چمن مین — کہیں سنبل کہین شمشاد کردے

تجھے پھر چہچہے شرین سناؤن — میرے آگے میرا فرھاد کردے

فلک نے سختیاں ڈالین جو مجھہ پر — اونہین تو ایکدم برباد کردے

ارے او ھنس کیون ھے پا بہ زنجیر — من و تو دونون بیبنیاد کردے

३५

धोका खाया तो संभलना भी तेरे हाथ ही है,
फँस गया है तो निकलना भी तेरे हाथ ही है।

बहरे उल्फ़त में अगर गोतहज़नी सीखे तू,
दुरे नायाब को ले आना तेरे हाथ ही है।

नज़र आजावे कहीं वह जो तेरा शाह हसीन,
मुख़्तसिर सारी कहानी का तेरे हाथ ही है।

कोशिशैं लाख करे कोई शहे हफ्त अक्लीम,
जिसे पावे नहीं वो देखो तेरे हाथ ही है।

आने जाने की किसीके तुझे क्या परवाह हंस
मिलना जुलना व मुकरजाना तेरे हाथ ही है।
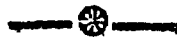
—※—

۳۵

دھوکا کہایا تو سنبھلنا بھي ترے ہاتھہ ھي ہے
پھنس گیا ہے تو نکلنا بھي ترے ہاتھہ ھي ہے

بحر اُلفت میں اگر غوطہ زني سیکھے تو
درِ نایاب کو لے آنا ترے ہاتھہ ھي ہے

نظر آجاے کہیں وہ جو ترا شاہ حسین
مختصر ساري کہاني کا ترے ہاتھہ ھي ہے

کوششیں لاکھ کرے کوئي شہ ہفت اقلیم
جسے پاوے نہیں وہ دیکھو ترے ہاتھہ ھي ہے

آنے جانے کي کسیکے تجھے کیا پروا ہنس
ملنا جلنا و مکرجانا ترے ہاتھہ ھي ہے

३६

कहीं ख़ंजर है कहीं नेज़ा है तलवार भी है,
इश्क़ ज़ालिम है सितमगर है औ ख़ूंख्वार भी है।
इसको छेदो ज़रा सूराख़ करो देखो सही,
इस कलेजे में कहीं सूरते दिलदार भी है।
कोई कहता है जला होता है आशिक़का जिगर,
ख़ाक होनेका कहीं देखो तो आसार भी है।
दर्द बढ़ता है दवा करती नहीं फ़ायदा कुछ,
अय मसीहा तेरी मिहनत क्या बेकार भी है।
क्यों कहा तूने मेरे सामने गर्दनको झुका,
क़त्ल होनेसे मुझे इक ज़रा इन्कार भी है।
हंस ने जाबजा ढूंढा मगर पाया न कहीं,
दहने कोताहमें देखो कहीं इक़रार भी है।

۳۶

کہیں خنجر ہے کہیں نیزہ ہے تلوار بھی ہے
عشق ظالم ہے ستمگر ہے و خونخوار بھی ہے
اسکو چھیدو ذرا سوراخ کرو دیکھو سہی
اس کلیجہ مین کہین صورت دلدار بھی ہے
کوئی کہتا ہے جلا ہوتا ہے عاشق کا جگر
خاک ہونیکا کہین دیکھو تو آثار بھی ہے
درد بڑھتا ہے دوا کرتی نہین فائدہ کچھ
اے مسیحا تیری محنت کیا بیکار بھی ہے
کیون کہا تونے میرے سامنے گردن کو جھکا
قتل ہونے سے مجھے اک ذرہ انکار بھی ہے
ہنس نے جا بجا ڈھونڈا مگر پایا نہ کہین
دہن کوتاہ مین دیکھو کہین اقرار بھی ہے

२७

ज़िंदगी ख़ाली गई हाथ न आया कुछ भी,
पचमरा लाख मगर लुत्फ़ न पाया कुछ भी।
तूंबियां जैसे लुढ़कती हैं व मौजे दरिया,
ऐसे बेहोश रहा होश न आया कुछ भी,
तान पूरा थे पखावज व बहेला ताऊस,
साज़ मौजूद रहे पर न बजाया कुछ भी।
गुले रेहां गुले नस्रीन व गुले लाला देखो,
बाग़ में खिलते रहे मुझको न भाया कुछ भी।
हंस क्यों रोता है पछताने से अब होगा क्या,
फ़िक्र उस यारका क्यों दिलमें न लाया कुछ भी।

۲۷

زندگی خالی گئی ھاتھ نہ آیا کچھ بھی
پچ مرا لاکھ مگر لطف نہ پایا کچھ بھی

توںبیاں جیسے لڑھکتی ھیں بہ موج دریا
ایسے بیہوش رھا ھوش نہ آیا کچھ بھی

تان پورا و پکھاوج و بہیلا طاؤس
ساز موجود رھے پر نہ بجایا کچھ بھی

گل ریحان گل نسرین و گل لالہ دیکھو
باغ میں کھلتے رھے مجھکو نہ بھایا کچھ بھی

ھنس کیوں روتا ھے پچھتانے سے اب ھوگا کیا
فکر اوس یار کا کیوں دل میں نہ لایا کچھ بھی

३८

वादये वस्लको टाले वे लिये जाते हैं,
दिले ग़मदीदाको धोखा वे दिये जाते हैं।
क्या कहूं किससे करूं अब मैं शिक़ायत उनकी,
मुर्ग़ वेदानाको बिस्मिल वे किये जाते हैं।
शर्वते वस्ल पिलावें न पिलावे मर्ज़ी,
हमतो ख़ूने जिगर हर रोज़ पिये जाते हैं।
जुब्बए ज़रीं तो हज़ारोंही सिलाकर पहने,
अबतो हम जामए अफ़्गार सिये जाते हैं,
हंस मरता है ये सुन करके हज़ारोंही रक़ीब।
क़ब्रसे उठ उठके वे देखो तो जिये जाते हैं।

—●—

۳۸

وعدۂ وصل کو ٹالے وے لئے جاتے ہین
دل غمدیدہ کو دھوکا وے دیجاتے ہین

کیا کہون کس سے کرون اب مین شکایت اونکی
مرغ بیدانہ کو بسمل وے کئیجاتے ہین

شربت وصل پلاوین نہ پلاوین مرضی
ہم تو خون جگر ہر روز پئیجاتے ہین

جبۂ زریں تو ہزارون ہی سلا کو پہنے
اب تو ہم جامۂ افگار سیئیجاتے ہین

ھنس مرتا ہے یہ سنکرکے ہزارون ہی رقیب
قبر سے اوٹھ اوٹھ کے وے دیکھو تو جئیجاتے ہین

३६

नामा बर नामा चला लेकेतो पछताने लगा,
इसकी सुनता नहीं वह देके करूंगा मैं क्या ।
फाड दूं जल्दीसे मैं इसको करूं दो टुकडे,
एक ज़ेरे ज़मीं औ इक अर्शेबरीं जावेचला ।
नीचे जाकर के वह यूसुफ़ को जगा देवेगा,
वह अगर जाके उसे देवे तो टलजाये बला ।
दूसरे से कहीं नफ़रत न करे अर्शेबरीं,
मैं तो जाऊं नहीं चाहे मेरा कट जावे गला ।
हंस को नीयते क़ासिद पै यह शक होता है ।
नामए ग़मको कहीं आग में देवे न जला ।

—⊛—

۳۹

نامہ بر نامہ چلا لیکے تو پچھتانے لگا
اسکی سنتا نہیں وہ دیکے کرونگا میں کیا

پھاڑدون جلدی سے میں اسکو کرون دو ٹکڑے
ایک زیرزمین اک عرش برین جاوے چلا

نیچے جاکرکے وہ یوسف کو جگا دیویگا
وہ اگر جاکے اوسے دیوے تو ٹل جاے بلا

دوسرے سے کہین نفرت نکرے عرش برین
مین تو جاون نہین چاہے میرا کٹ جاوے گلا

ہنس کو نیت قاصد پہ یہ شک ہوتا ہے
نامۂ غم کو کہین آگ مین دیوے نہ جلا

४०

मेरे गुलशनमें अब गुंचा निकलता है मगर मुर्दा,
नहीं पाती है बू पछता रही है रूहे अफ़सुर्दा।
चिटख़ती हैं कहीं कलियां तो दिल मेरा चिटख़ता है,
मगर माने न मेरी इमतना दिले नाज़ पर्वर्दा।
जलादूं बाग़ गर तकलीफ़ बुलबुल को बहुत होगी,
चहकना जलसए रिन्दोंमें होजावेगा पज़ मुर्दा।
अरे ओ बाग़बां अब छोड़दे तू फ़र्ज़ काम अपना,
तुझे हिम्मत नहीं ओ दिल नहीं ओ है नहीं गुर्दा।
मुक़ीमे मानसर को क्या ज़रूरत बाग़ से हैगी,
मगर हम दर्दिये हमजिन्स से है हंस आज़ुर्दा।

—●—

۴۰
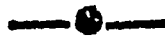
مرے گلشن میں اب غنچہ نکلتا ہے مگر مردہ
نہیں پاتی ہے بو پچھتا رہی ہے روح افسردہ
چٹختی ہیں کہیں کلیاں تو دل میرا چٹختا ہے
مگر مانے نہ میری امتناع دلِ نازپرورده
جلادوں باغ گر تکلیف بلبل کو بہت ہوگی
چہکنا جلسۂ رندوں میں ہوجاویگا پژمردہ
ارے او باغباں اب چھوڑدے تو فرض کام اپنا
تجھے ہمت نہیں و دل نہیں وہے نہیں گردہ
مقیم مان سر کو کیا ضرورت باغ سے ہیگی
مگر ہم دردگی ہم جنس سے ہے ہنس آزردہ

४१

चला अब मैं भी हूं मुल्के अदम को,
न रोको दोस्तो मेरे क़दम को।
दरे दौलत पै होकर दस्त बस्ता,
कहूँगा कुछ तुम्हारा भी सनम को।
रहे उश्शाक़ में फिरती मुनादी,
जो आवे यां सहे रंजो अलम को।
हुक्म उस शाह ख़ूबां का यही है,
पिओ ख़ूने जिगर को खाव ग़म को।
अगर है शौक़ मिलने का तुझे हंसे,
सहा कर यार के जौरो सितम को।

—o—

۴۰

چلا اب میں بھی ہوں ملک عدم کو
نہ روکو دوستو میرے قدم کو

در دولت پہ ہو کر دست بستہ
کہونگا کچھ تمہارا بھی صنم کو

رہ عشاق میں پھرتی منادی
جو آوے یان سہے رنج و الم کو

حکم اوس شاہ خوبان کا یہی ہے
پیو خون جگر کو کھاؤ غم کو

اگر ہے شوق ملنے کا تجھے ہنس
سہا کر یار کے جورو ستم کو

४२

दो-दिली दूर हुई दिलको मिलाया दिलसे,
पूछिये चलके असर इसका किसी कामिलसे।
क्यों ये सूराख़ हज़ारों हैं बसीने ग़िरेबाल,
बार सदहा यह छिदा है निगहे क़ातिलसे।
बाज़िये इश्क़में मेरी कि तेरी जीत हुई,
चलके इन्साफ करालो तो किसी आदिलसे।
बारहा मैंने अजी राज़े मुहब्बत पूछा,
हल हुआ कुछ भी नहीं आलिमओ हम फ़ाज़िलसे।
गर तुझे वस्ल का है शौक़ तो अए हंसस्वरूप,
सीखले ज़ुहदो रियाज़त तू किसी आमिलसे।

—●—

۴۲
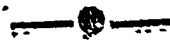
دودلي دور هوئي دل کو ملایا دل سے
پوچھئے چلکے اثر اسکا کسي کامل سے

کیون یے سوراخ هزارون هین بسینہ غربال
بار صدها یہ چھیدا هے نگہہ قاتل سے

بازئے عشق مین میري کہ توي جیت هوئي
چل کے انصاف کرالو تو کسي عادل سے

بارها مین نے اجي راز محبت پوچھا
حل هوا کچھ بھي نهین عالم و هم فاضل سے

گر تجھے وصل کا ہے شوق تو اي هنس سروپ
سیکھ لے زهد و ریاضت تو کسي عامل سے

४३

यार को मैंने ख्वाब में देखा,
दुरे-ताबां हुबाब में देखा।
झिरमिली से वह यार राज़ी है,
ऐन राहत अज़ाब में देखा।
त्योरियां चढ़ के आंखें लाल हुई,
हुस्ने-ताबां इताब में देखा।
सुहबते ख़ारे से हो रंगओ बू,
यह तअाज्जुब गुलाब में देखा।
हंस ने अपने ख्वाब का मसला,
कुछ सुना कुछ किताब में देखा।

—❀—

۴۳
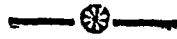
یار کو میں نے خواب میں دیکھا
در تاباں حباب میں دیکھا

بسملی سے وہ یار راضی ہے
عین راحت عزاب میں دیکھا

تیوریاں چڑھ کے آنکھیں لال ہوئیں
حسن تاباں عتاب میں دیکھا

صحبت خار سے ہو رنگ و بو
یہ تعجب گلاب میں دیکھا

ہنس نے اپنے خواب کا مسلہ
کچھ سنا کچھ کتاب میں دیکھا

४४

फिर किसी को ऋए मरीज़े इश्क़ दिल देना नहीं,
सर पै अपने याद रख रंजो महन लेना नहीं।
दिल वह न्यामत है, जिसे तुझको ख़ुदाने बख़्शदीं,
इस तख़्तए शफ्फ़ाफ़ पर फिर तुख़्मे ग़म बोना नहीं।
जिसने किसीको दिल दिया वह मुफ़्त में मारा गया,
दाना पानी से गया सुख चैनसे सोना नहीं।
भूलसे तुझ में कभी यह दाग़ पड जावे अगर,
तिसके सदमा सख़्तसे सुनलो कभी रोना नहीं।
इस मजाज़ी दाग़ से हासिल हक़ीक़ी दाग़ है,
बे-बहा यह दुर है इसको हाथसे खोना नहीं
उस मजाज़ी पर है तुफ़ जिससे हक़ीक़ी हल न हो,
हंस के इस जुम्ले को दिलसे सुनो धोना नहीं।

۴۴

پھر کسیکو اے مریض عشق دل دینا نہین
سرپہ اپنے یاد رکھہ رنج و محن لینا نہین
دل وہ نعمت ہے جسے تجھکو خدانے بخش دي
اس تختۂ شفاف پر پھر تخم غم بونا نہین
جسنے کسیکو دل دیا وہ مفت مین مارا گیا
دانا پاني سے گیا سکھہ چین سے سونا نہین
بھول سے تجھہ مین کبھي یہ داغ پڑ جاوے اگر
تسکے صدمہ سخت سے سن لو کبھي رونا نہین
اس مجازي داغ سے حاصل حقیقي داغ ہے
بےبہا یہ در ہے اس کو ہاتھہ سے کھونا نہین
اوس مجازي پر ہے تف جس سے حقیقي حل نہو
ہنس کے اس جملہ کو دل سے سنو دھونا نہیں

४५

पैसा नामा

(मनोरंजन के लिये)

———:0;———

सखे पैसे ने प्रेम बिगाड़ा ।

जबलौं पैसा गांठ में प्रेम करे सब कोय,
गिरगा पैसा गांठ से फिर किसका को होय ।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ १॥

बिन पैसा तिरिया नहिं बोले बैठि रहे मुख मोड़,
बेटा बाप लडैं निशि वासर झगडा जोरम जोर ।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ २॥

दूध दही मुख पान चुआवत जबलौं पैसा पास,
बिन पैसा देखोरे सजना ! छप्पर पर नहिं घास ।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥३॥

पैसे मीत मिलैं बहुतेरे हँसि बोलें दिन रात,
द्वार द्वार पैसे बिन डोलत कोऊन पूछत बात ।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥४॥

घोडा हाथी महल अटारी सब पैसे के रंग,
बिन पैसा बेसुरा तान बेताल बजत मृरदंग।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ ५ ॥

जब पैसा कमाय घर लावे सूर सपूत कहावे,
खाली हाथ घुसे जो घर में सीधा धक्का खावे ।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ ६ ॥

शाल दुशाला लाल पिरोजा दमकत चमकत अंग,
बिन पैसे की फटी पगडिया सकल साज बेढंग ।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ ७ ॥

दाख चिरौंजी लौंग सुपारी मुख दाडिम अंगूर,
जाके पैसा पास नहीं है ताके मुख में धूर ।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ ८ ॥

जब पैसा आवै है घर में सकल सिद्धि चलि आवैं,
बिन पैसे नहिं पण्डित मुल्ला बेद कुरान सुनावें।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ ९ ॥

खोवा पूरी दूध मलाई सब पैसे के संगी,
बिन पैसा चूल्हा नहिं जलता सारी थाली नंगी ।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ १० ॥

है जहान भूखा पैसे का पैसे की है आस,
हंस प्रेम का भूखा प्यारे पैसा रक्खौं पास ।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥११॥

٣٥

پیسہ نامہ واسطے تفریح طبع

سکھے پیسے نے پریم بگاڑا

جب لون پیسہ گانٹھہ مین پریم کرین سب کوے
گرگا پیسہ گانٹھہ سے پھر کسکا کو ہوے

سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا

بن پیسہ تریا نہین بولے بیٹھہ رہے مکھہ موڑ
بیٹا باپ لڑین نش باسر جھگڑہ زورزم زور

سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا

دودہ دھی مکھہ پان چباوت جب لون پیسہ پاس
بن پیسہ دیکھورے سجنا چھپر پر نہین گھاس

سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا

پیسے میت ملیں بھوکیرے ہنس بولیں دن رات
درد رسو پیسہ بن ڈولت کوئی نہ پوچھت بات
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا

گھوڑا ہاتھی محل اٹاری سب پیسہ کے رنگ
بن پیسہ ہے سرا ٹان ہے ٹان بجت مردنگ
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا

جب پیسہ کمائی گھر لاوے سورسپوت کہاوے
خالی ہاتھ گھسے جو گھر میں سیدھا دھکا پاوے
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا

شال دوشالہ لال فروزہ دمکت چمکت انگ
بن پیسہ کی پھٹی پگریا سکل ساز بیڈھنگ
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا

داکھ چرونجی لونگ سپاری مکھہ داڑم انگور
جاکے پیسہ پاس نہیں ہے تاکے مکھہ میں دھور
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا

جب پیسہ آوے ہے گھر میں سکل سدھی چل آویں
بن پیسہ نہیں پنڈت ملا وید قرآن سناویں
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا

کھوا پوری دودھ ملائی سب پیسہ کے سنگی
بن پیسہ چولہا نہیں جلتا ساری تھالی ننگی
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا

ہے جہاں بھوکا پیسہ کا پیسہ کی ہے آس
ہنس پریم کا بھوکا پیارے پیسہ رکھو پاس
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا

—※—

४६

मौत नामा

—:0:—

मौत हँसती है सर पै नचती है। देखें अब कैसे बुढ़िया बचती है।
फिक्र लाखों तरह के रचती है। रातदिन मुफ्त में वह पचती है॥

तुम को लाज़िम है सबसे हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥१॥

हफ्तअक्लीमका हो शाहन्शाह। आसमां पर हों जिसकी हशमतो जाह।
हर तरह ऐशसे करे वह निबाह। मौत करदेगी पर उसे भी तबाह॥

तुम को लाज़िम है सब से हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥२॥

मलकुलमौत ख़ुद नहीं मरता। गुर्ज़ व ख़न्जर से वह नहीं डरता।
ज़ेर शम्शीर सर नहीं धरता। मार कर अपना पेट है भरता॥

तुम को लाज़िम है सब से हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥३॥

موت نامه

—:0;—

۳۶
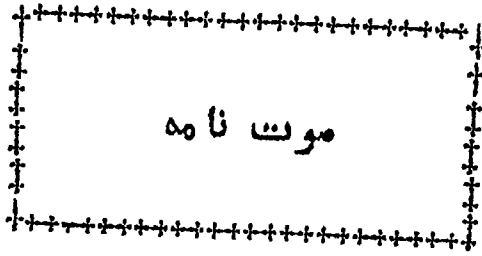
موت هنستي ہے سرپہ نچتی ہے دیکھیں اب کیسے بڑھیا بچتي ہے
ذکر لاکھوں طرح کہ رچتی ہے رات دن مفت میں وہ پچتي ہے

تمکو لازم ہے سب سے ہو نیارے
یاد مولا کرو مرے پیارے

هفت اقلیم کا هو شاهنشاه آسماں پرهوں جسکی حشمت وجاه
هرطرح عیش سب کرے وہ نباہ موت کردیگي پر اوسے بھي تباہ

تمکولازم ہے سب سے ہونیارے
یاد مولا کرو مرے پیارے

ملک الموت خود نہیں مرتا گرزوخنجر سے وہ نہیں ڈرتا
زیر شمشیر سر نہیں دھرتا مار کرا پنا پیٹ ہے بھرتا

تمکولازم ہے سب سے ہو نیارے
یاد مولا کرو مرے پیارے

ईंट पत्थर का इक जो घेरा है । सुर्खी चूना जहां लभेरा है ।
कौन कहता है घर यह मेरा है । घर नहीं मौत का बसेरा है ॥

तुम को लाज़िम है सब से हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥४॥

जुब्बह ज़र बफ्तके तले अचकन । शाल कश्मीरी ओढ़ो या अर्मन ।
जब करे मौत ज़ेरे ख़ाक दफ़न । साथ जावे न एक हाथ कफ़न ॥

तुम को लाज़िम है सब से हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥५॥

घी व मक्खन से तनको कर मोटा । पीलो शरबत अनार का घूंटा ।
काम आवें न गोलीओ टोंटा । मौत जब देवे सर पै इक सोंटा ॥

तुम को लाज़िम है सबसे हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥६॥

हिफ्ज़ कर रखो तुम हदीस व कुरान । दरे मसजिद पै जाके देलो अज़ांन ।
चाहे मन्दिरमें पढ़लो वेद व पुरान । मलकुलमौत पर न छोड़े जान ॥

तुम को लाज़िम है सबसे हो न्यारे
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥ ७ ॥

रहेकले तोपोंका लगावे ज़ोर । फौज इकट्ठी करे वह लाख करोड़ ।
ख़ुद वह रुस्तमसा क्यों नहो शहज़ोर । मौत लेजावे हाथ पांव मरोड़ ॥

तुम को लाज़िम है सबसे हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥८॥

اینٹ پتھر کا اک جو گھیرا ہے سرخی چونا جہاں لبھرا ہے
کوں کہتا ہے گھر یہ میرا ہے گھر نہیں موت کا بسیرا ہے

تمکو لازم ہے سب سے ہونیا رے
یاد مولا کرو مرے پیارے

جبہ زر بفت کے تلے اچکن شال کشمیري اوڑھو یا ارمن
جب کرے موت زیر خاک دفن ساتھ جاوے نہ ایک هاتھه کفن

تمکو لازم ہے سب سے ہونیا رے
یاد مولا کرو مرے پیارے

گھي و مکھن سے تن کو کر موٹا پیلو شربت انار کا گھونٹا
کام آوین نہ گولی و ٹونٹا موت جب دیوے سرپہ اک سونٹا

تمکو لازم ہے سب سے ہونیا رے
یاد مولا کرو مرے پیارے

حفظ کر رکھو تم حدیث و قران در مسجد پہ جا کے دے لو اذان
چاہے مندر میں پڑھلو ویدو پران ملک الموت پر نہ چھوڑے جان

تمکو لازم ھے سب سے ہونیا رے
یاد مولا کرو مرے پیارے

دھنکلے کو پہونچا لگاوے زور فوج اکھٹي کرے وہ لاکھه کرور
خود وہ رستم سا کیوں نہ ہو شہزور موت لیجاوے ھاتھه پاوں مرور

تمکو لازم ھے سب سے ہونیا رے
یاد مولا کرو مرے پیارے

चाहे फ़ौलादका मकान बनाव । हरतरफ़ हातःआहनी खिंचवाव ।
सात तहख़ानोंके तले सोजाव । मौत छोड़े न वहां भी अपनादाव ॥

तुम को लाज़िम है सबसे हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥९॥

मलकुलमौत से छुड़ाये हाथ । हरके चरनों में अब झुकाये माथ ।
बोलता राम राम गोपी नाथ । हंस जाता है अपने यारके साथ ॥

तुम को लाज़िम है सबसे हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥ १० ॥

چاھئے فولاد کا مکان بناؤ ہر طرف حاطہ آھنی کھچواؤ
سات تہ خانوںکے تلے سو جاؤ موت چھوڑے نہ وھاں بھی اپنا داؤ

تمکو لازم ہے سب سے ہو نیارے
یاد مولا کرو مرے پیارے

ملک الموت سے چھوڑائے ھاتھ ہرکے چرنوں میں اب جھکائے ماتھ
بولتا رام رام گوپی ناتھ ھنس جاتا ہے اپنے یار کے ساتھ

تمکو لازم ہے سب سے ہو نیارے
یاد مولا کرو مرے پیارے
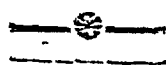
४७

क्या कहूं तुझ सिवा मेरा कोई ग़म ख़्वार नही,
यार दिलदार नहीं कोई वफ़ादार नहीं।
जिसको देखूं हूं सभी ग़रज़ के मतवाले हैं,
सच्ची उल्फ़त का कहीं कोई रवागार नहीं।
उड़ गई बूये मुहब्बत तो अब इस दुनियां से,
वक्त पड़ने पै कहीं कोई मददगार नहीं।
सांप को दूध पिलावो तो ज़हर हो ऐसे,
अहले दुनिया की मुहब्बत कभी बाकारे नहीं।
हंस सब छोड श्रीकृष्ण से लग जावो अब,
चैन उसको नहीं जो उसका तलब गार नहीं।

۴۷

کیا کہوں تجھہ سوا میرا کوئي غم خوار نہیں
یار دلدار نہیں کوئي وفادار نہیں
جسکو دیکھوں ہوں سبھي غرض کے متوالے ہیں
سچي اُلفت کا کہیں کوئي رواگار نہیں
اُڑ گئي بوے محبت تو اب اِس دنیا سے
وقت پڑنے پہ کہیں کوئي مددگار نہیں
سانپ کو دودہ پلاو تو زہر ہوا یسے
اہل دنیا کی محبت کبھی باکار نہیں
ہنس سب چھوڑ سري کرشن سے لگ جاو اب
چین اوسکو نہیں جو اسکا طلب گار نہیں

४८

दर्जा उल्फतका सुनाऊँ जिससे तुम धोका न खाव,
दिल जहांतक जो लगावे उससे उतनाही लगाव ।

तीन दर्जह की है यारी आक़िलों का क़ौल है,
एक नानी फिर ज़बानी तीसरी जानी बनाव ।

नानियों को नानदो अन्दर न आने दो कभी,
काम लेकर उन से अपना दर से अपने फिर भगाव ।

एक रत्ती क़न्द से शीरीं नहो आसार आब,
पानीका पानी रहै चाहे उसे कितना मिलाव ।

चादरे कोताह से छुपता नहीं सारा बदन,
टांग ख़ाली ही रहैं चाहे उन्हें कितना छुपाव ।

दूसरे जो हैं ज़बानी चोपड़ी बातें करें,
मीठी २ वैसे ही तुम भी उन्हें बातें सुनाव ।

रंग कच्चा देरतक ठैरे नहीं धुलजावे झट,
फीका पड़जावे चहे तुम कितना ही गहरा रँगाव ।

कांचो हीरे को करो तुम चाहे कितना एक रंग,
बरसरे बाज़ार ये बिकते नहीं हैं एक भाव,

درجه الفت کا سناون جس سے تم دهوکه نه کهاو
دل جهاتک جو لگاوے اوس سے اوتنا هی لگاو

تین درجه کي هے یاري عاقلونکا قول هے
ایک ناني پهر زباني تیسري جاني بناو

نانیونکو نان دو اندر نه آنے دو کبهي
کام لیکر اونسے اپنا در سے اپنے پهر بهگاو

ایک رتي قند سے شرین نهو اثار آب
پاني کا پانی رهے چاهے اوسے کتنا ملاو

چادر کوتاه سے چهپتا نهین سارا بدن
ٹانگ خالي هي رهین چاهے اونهین کتنا چهپاو

دوسرے جو هین زباني جوڑي باتین کرین
میٹهي میٹهي ویسه هي تم بهي اونهن باتین سناو

رنگ کچا دیر تک ٹهرے نهین دهلجاوے جهٹ
پهیکا پڑ جاوے جهے تم کتنا هي گهرا رنگاو

کانچ وهیرے کو کرو تم چاهے کتنا ایک رنگ
بر سر بازار سے بکتے نهین هین ایک بهاو

जबकि सुर मिलता नहीं है ताल से बेकार है,
चाहें कितने ही सुरीले ख़ुशगुलू से गीत गाव।

फिर जो हैं जानी उन्हें तुम जान दो जल्दी करो,
दोनों फिर तुम एक हो उस यार के क़दमों में जाव।

इस मजाज़ी यार से हासिल हक़ीक़ी यार हो,
यारी ही के ईंट गारों से मकां अपना चुनाव।

याद रक्खो दिलमें अपने "हंस" का तुम यह कलाम-
इस से जो ख़ाली हो ऐसे शाह के घर में न जाव।

—×—

جبکہ سر ملتا نہیں ھے تال سے بیکار ھے
چاھے کتنے ھي سریلي خوش گلو سے گیت گاو

پھر جو ھیں جاني اونھن تم جان دو جلدي کرو
دونوں پھر تم ایک ھو اوس یار کے قدموں میں جاو

اس مجازي یار سے حاصل حقیقي یار ھو
یاري ھی کے اینٹ گاروں سے مکان اپنا چناو

یاد رکھو دل میں اپنے "ھنس" کا تم یہ کلام
اس سے جو خالی ھو ایسي شاہ کے گھر میں نہ جاو

—⊛—

४६

घर-घरमें सुबह होते ही चढती है रसोई,
फिर सामने यह आपके पडती है रसोई।
जब पेटके ख़न्दक़को यह भरती है रसोई,
चौथे तबक़की बात यह करती है रसोई॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़द्र है,
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़द्र है॥१॥

चेहरेको चमकदार बनाती है रसोई,
अर्शोबरींकी राह बताती है रसोई।
वेदो क़ुराँ पुरान पढाती है रसोई,
कोसोंसे ब्राह्मणको बुलाती है रसोई

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़द्र है,
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़द्र है॥२॥

मुज्तहिद— महन्त, महात्मा (Religious Director)

लश्करके आगे आगे यह चलती है रसोई,
लडनेसे पहले फौजको मिलती है रसोई।
धोके से कहीं आगमें वलती है रसोई,
सब शोर मचाते हैं, कि जलती है रसोई ॥
हर शाह व मुज्तहिदमें रसोई की क़द्र है,
हर मन्दिर व मस्जिदमे रसोईकी क़द्र है ॥ ३ ॥

जर्मन व रूसको यह लडाती है रसोई,
हर एक क़िले पै तोप चढाती है रसोई।
लाखों गलोंको रोज़ कटाती है रसोई,
लडनेके लिये बैंड बजाती है रसोई
हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़द्र है,
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़द्र है ॥ ४ ॥

जिस घरमें रसोई नहीं वह भूतका घर है,
जिस घरमें रसोई है वह मलकूतका घर है।
जबरूतका नासूतका लाहूतका घर है,
गर घासका घर होवे तो याकूतका घर है ॥
हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़द्र है,
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़द्र है ॥ ५ ॥

नाज़िमकी निज़ामत है रसोईके लिये,
हाकिमकी सियासत है रसोईके लिये।
नबियोंकी खिलाफ़त है रसोईके लिये,
साहिब व सलामत है रसोईके लिये॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़दर है,
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़दर है॥६॥

एक रोज़ रसोई नही तन्दूरमें आवे,
रुस्तमकी रुस्तमीको मिट्टीमें मिलावे।
है वह मसीहसानी मुर्दोंको जिलावे,
जब पेटमें आवे तो तबक़ सात हिलावे॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़दर है,
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़दर है॥७॥

मरते हैं ये मजदूर रसोईके लिये,
हर एक है मजबूर रसोईके लिये।
करते हैं सब फ़ितूर रसोईके लिये,
सब मुआफ़ है क़ुसूर रसोईके लिये॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी कदर है;
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़दर है॥८॥

हर शाहकी शाही भी रसोईपै ख़तम है,
हर मुर्ग़ ओ माही भी रसोईपे ख़तम है।
औ यादे इलाही भी रसोईपै ख़तम है,
गर हो न रसोई तो सितम है जी सितम है॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़दर है,
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़दर है॥ ९॥

जब द्वारकापुरीमें आता है अन्नकूट,
पंडोके आगे देखो! रसोई ही की है छूट।
हिरसैमें गर कमी हो तो आपसमें होवे फूट,
एक दूसरेकी थाली व लोटोंको लेवे लूट॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़दर है,
हरमन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़दर है॥ १०॥

महमानके आगे जो रसोई नहीं आवे,
लौटे नहीं वह रूठके घरको चलाजावे।
आबाद रहे वह जो रसोई लिये आवे,
हर सुबह व शाम 'हंस'को भरपेट खिलावे॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़दर है,
हरमन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़दर है॥ ११॥
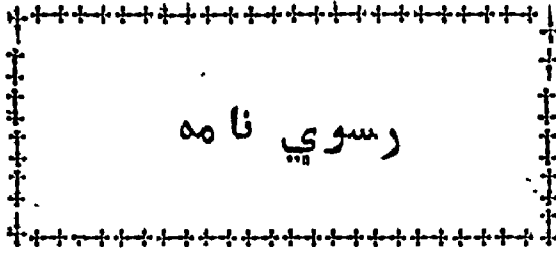
۴۹

——:0:——

گھرگھر مین صبح ھوتے ہے چڑھتي ہے رسوئي
پھر سامنے یه آپ کے پڑتي ہے رسوئي
جب پیٹ کے خندق کو یه بھرتي ہے رسوئي
چوتھے طبق کي بات یه کرتی ہے رسوئي

ھر شاہ و مجتہد مین رسوئي کي قدر ہے
ھر مندر و مسجد مین رسوئي کي قدر ہے

چھرنے کو چمکدار بناتي ہے رسوئي
عرش برین کي راہ بتاتي ہے رسوئي
بید و قران پران پڑھاتي ہے رسوئی
کوسون سے برھمن کو بلاتي ہے رسوئي

ھر شاہ و مجتہد مین رسوئي کی قدر ہے
ھر مندر و مسجد مین رسوئی کي قدر ہے

لشکر کے آگے آگے یہ چلتی ہے رسوئی
لڑنے سے پہلے فوج کو ملتی ہے رسوئی
دھوکے سے کہیں آگ میں بلتی ہے رسوئی
سب شور مچاتے ہیں کہ جلتی ہے رسوئی

ہر شاہ و مجتہد میں رسوئی کی قدر ہے
ہر مندر و مسجد میں رسوئی کی قدر ہے

جرمن و روس کو یہ لڑاتی ہے رسوئی
ہریک قلعہ پہ توپ چڑھاتی ہے رسوئی
لاکھوں گلوں کو روز کٹاتی ہے رسوئی
لڑنے کیلئے بینڈ بجاتی ہے رسوئی

ہر شاہ و مجتہد میں رسوئی کی قدر ہے
ہر مندر و مسجد میں رسوئی کی قدر ہے

جس گھر میں رسوئی نہیں وہ بھوت کا گھر ہے
جس گھر میں رسوئی ہی وہ ملکوت کا گھر ہے
جبروت کا ناسوت کا لاہوت کا گھر ہے
گر گھاس کا گھر ہوے تو یاقوت کا گھر ہے

ہر شاہ و مجتہد میں رسوئی کی قدر ہے
ہر مندر و مسجد میں رسوئی کی قدر ہے

ناظم کي فطامت ھے رسوئي کے لئے
حاکم کي سیاست ھے رسوئي کے لئے
نبیون کي خلافت ھے رسوئي کے لئے
صاحب رسلامت ھے رسوئي کے لئے

ھر ماہ و مجتہد مین رسوئي کي قدر ھے
ھر مندر و مسجد مین رسوئي کي قدر ھے

یکروز رسوئي نہین تندور مین آوے
رستم کي رستمي کو مٹي مین ملاوے
ھے یہ مسیح ثانی مردون کو جلا وے
جب پیٹ مین آوے تو طبق سات ھلاوے

ھر شاہ و مجتہد مین رسوئي کی قدر ھے
ھر مندر و مسجد مین رسوئي کي قدر ھے

مرتے ھین یہ مزدور رسوئي کیلئے
ھر ایک ھے مجبور رسوئي کے لئے
کرتے ھین سب قصور رسوئي کیلئے
سب معاف ھے قصور رسوئي کیلئے

ھر شاہ و مجتہد مین رسوئي کي قدر ھے
ھر مندر و مسجد مین رسوئي کي قدر ھے

ہر شاہ کي شاھي بھي رسوئي پہ ختم ھے
ہر مرغ و ماھي بھي رسوئي پہ ختم ھے
اور یاد الٰہي بھي رسوئي پہ ختم ھے
گر ھو نہ رسوئي تو ستم ھي جي ستم ھے

ہر شاہ و مجتہد میں رسوئي کی قدر ھے
ہر مندر و مسجد میں رسوئی کی قدر ھے

جب دوار کا پوري میں آتا ھے اِنکوٹ
پنڈون کے آگے دیکھو رسوئي ھي کي ھے چھوٹ
حصہ میں گر کمي ھو تو آپس میں ھوے پھوٹ
ایک دوسرے کے تھالي و لوٹونکو لیوین لوٹ

ہر شاہ و مجتہد میں رسوئي کي قدر ھے
ہر مندر و مسجد میں رسوئي کي قدر ھے

مہمان کے آگے جو رسوي نہین آوے
لوٹے نہین وہ روٹھہ کے گھر کو چلا جاوے
آباد رھے جو رسوي لئے آوے
ہر صبح و شام "ھنس" کو بھر پیٹ کھلاوے

ہر شاہ و مجتہد میں رسوي کي قدر ھے
ہر مندر و مسجد میں رسوي کي قدر ھے

● तत्सद्ब्रह्मणे नमः ●

हंसहिंडोल

छठवीं मचकी

* श्री १०८ स्वामी हंसस्वरूपविरचित *

(अँग्रेजी काव्य POETICAL COMPOSITION)

PROSODY OR THE LAWS OF METRE.

There are four kinds of feet "Iambic," "Trochee," "Anapaest" and Dactyl.

An Iambic consists of one unaccented syllable followed by an accented one;

The Iambic metre is the prevailing measure or metre in English poetry, and is more extensively used than any other.

The number of Iambic feet may vary from two to seven.

In scanning a line two short syllables coming together are often pronounced as if they were one for the sake of the metre.

Sometimes in Iambic metre the alteration of the first foot is often a Trochee *i. e.* an accented syllable is followed by an unaccented one.

Sometimes two long or accented syllables come together instead of a short and long. Such a foot is called a *Spondee*; but this is not one of the feet recognised in English poetry.

The Iambic metre is not always perfectly carried out; that is, the alternation of an unaccented syllable with an accented one is not regularly observed.

Sometimes the first foot of an Iambic line consists of a monosyllable:— As

Stay, / the king / hath thrown' /
his war' / der down—

Shakespeare.

Sometimes in order to reduce two syllables to one–the begining, middle or end of a word is omitted. E. g. 'gainst for against, 'scape for escape, e'en for even, ta'en for taken, ope', for open, th' for the. This is known at the begining, as *apheresis*, in the middle *syncope*, and at the end *apocope.*

Sometimes the merging of two syllables into one, may be done with such words as alien, flower, familiar, amorous, murmuring and mouldering.

——(0)——

IAMBIC TETRAMETRE.

O Lord ! I bow thy Lotus feet !
Beneath their soles I seek a seat.
Expel my evils all aside,
For me a place of peace provide.

Adorn my heart, O Lord! with love,
Arouse my soul to world's above;
Remove my follies, make me wise,
Let thoughts of love in heart arise.

When low pursuits attack my brain
To fly afar, then shalt Thou train
The man who does not love Thee well,
Is sure to dwell in lowest Hell.

If I approach thy mercy's shore,
My dreadful deeds can vex no more;
I shall be Ever happy, blest,
And safely at Thy feet shall rest.

Let shine Thy beams of glory soon;
Enlight my heart alike full Moon;
Concede ! O Lord ! from Hansa's heart
Thy shining face may ne'er depart

IAMBIC TEMRATETRE.

O man ! proceed to lovely door—
For trifling things thou care no more.
If worldly charms entice thy heart
From them like, wisemen soon depart.

With holy thoughts comfort thy brain
Then Krishna's feet shalt thou attain

The foes will fly, the friends will come
The Bees of mischief will not hum.

If dreadful floods of banes o'erflow;
And winds of woe all sides do blow,
Thy patience Barque when 'bout to sink,
No fear when Krishna's eyes will wink.

He wipes His children's eyelids sore,
Be sure they feel the pain no more.
For this they thankful sounds should raise
And sing for e'er His ceaseless praise.

O Lord ! let shine Thy Light Divine,
On this benighted soul of mine !
Be kind to hear my chief complaint
That sensual objects make me faint.

Beguile my brain, defile my heart—
Be kind to move them all apart.
Poor Hans shall call upon his Lord
When Earth and Heaven turn to odd.

———:0:———

IAMBIC TETRAMETRE

(Park of love)

Behold ! around the Park of love,
How sweetly coos Affections 'ove
Where amities young and charming spring
Recalls the birds of beauteous wing.

The Cuckoos, Parrots, Nightingales,
Whose song the mongers of love regales.
The Cuckoo's melodious notes define,
The Parrot's blushing charms enshrine

The Nightingale's with fitful call
Enhance full joy in hearts of all;
Where Krishna's mercy's breezes blow
His lover's heart with mirth o'erflow.

The plants of hopes e'er seem fertile
The flowers of pious wishes smile.
Where shines Devotion's sparkling beam
Meanders genial merit's stream.

Kissing the pearly sands of peace
On both the sides of eternal ease.
Reside. O Hans, within this Park
No use to loose your time in cark.

IAMBIC PENTAMETRE

My mind, O Lord! exults with joy extreme,
When hears in holy texts, Thy words supreme!
My sorrows fly too far and flies my pain,
Thy mercy chides them not to come again

My tongue, when freed from chats, recites Thy name
That soon removes the horrid vicious blame
The fools request their fames, their names and health,
Avert their face from Thee, ever lasting wealth.

Thus they their life in vain to trouble expose
But wise do ever research their sweet repose;
And shun the worldly joys too fickle, frail
Endure with patience their destiny's bale—

So saints and angels seek Thy precious love,
Enjoy in full the bliss of Heaven above.

They drink the heavenly nectar fresh and pure
And eat eternal Manna sweet and sure.

Thy Hans, O Krishna, is wrapped with fatal snare,
For freedom wants Thy mercy's little share

IAMBIC PENTAMETRE

Be sure, my friend, thy saviour lives with you,
Observesyour Ins and Outs with keenest view

The fools destroy their precious life in vain
In talks of pelf and thoughts of worldly gain--
The worldly pains disturbs their heart and mind !
No peace in brain, no happy life they find.

But they who call Almighty's name are brave
And ever prompt the heavenly path to pave.
Enjoy, devoted love that never faints,
With charming gifts, their souls Almighty paints.

Then rain the clouds of joy with rapid fall,
Refresh their plants of hope at every call.
True love controls their heart with mild repose,
No natures wild attack their wills oppose
O Lord ! the light of truth to me display
Strengthen thy Hans to choose celestial way.

IAMBIC HEPTAMETRE.

:0:

Adieu ! Adieu ! ye, illusive charms
My heart does crave no more;
My mind dislikes to hear your 'larms
Of risky rolling roar.

When freed from your enchanting traps,
Engaged with holy soul,
That rules the world and smiles on laps
Of saints to pious goal,

When man obtains the golden love
That soothes perplexing heart,
The gulls and guiles, the shames and blames
Like ill winds soon depart;

The hero gaining fields of love
With arms of patience firm,
Inherits gift of world above;
Confutes his mortal germ.

Terrestrial darkness cannot clad
His bright celestial light,
His heart becomes too mild, too glad,
And thirlls with full delight.

The Lord when hears such children's wail
Supplies His mercy's milk,
To dress them, He shall never fail
With shirts of holy silk.

O Hans, research the golden pa
Secure and pure to walk,
Salvation sure and free from wrath
That all the prophets talk.

HEPTAMETRE.

Who can conceive Almighty's might
Beyond the reach of brain?
The Prophets gained spiritual light,
But couldn't the truth explain;

The mystics fail to bear in mind
The secrets ne'er revealed;
Philosophers are ashamed to find
The axioms all concealed.

Materia Prima hangs about
But lame to reach the aim;
The Atheists help their reasons out
Destroy their heavenly claim;

Astronomers full descriptions paint
Of nine refracted hues
To find the future life they feint,
The style of truth misuse.

Geographers length and breadth describe
Of countries round the Globe,
But heavenly length they never imbibe
Nor wear the virtuous robe.

Historians talk of war and tribe
But know not fields divine
In vain they various ranks inscribe,
In want of love repine.

Religions all apply full force
To prove each ot'hers Right
But see their partial motive's course
Becomes a source to fight !

The other lib'ral sciences fail
To dive in depths of truth,
O Hail ! Reformers ! Hail and Hail !
Your reasons do not soothe.

O Hans, be free from these zigzags,
Rejoice in Krishna's love,
And try to raise your heavenly flags
O'er all the Worlds above.

पुस्तक मिलने पता

मैनेजर—त्रिकुटीमहल चन्द्रवारा
मुजफ्फरपुर (विहार)

Manager—Trikutimahal Chandwara
Muzaffarpur (Bihar)

तथा

मैनेजर—श्रीहंसाश्रम—
अलवर (राजपूताना)

Manager—Shri Hans Ashram
Alwar [Rajputana]